नागपुरी शिष्ट साहित्य

नागपुरी शिष्ट साहित्य

डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डोरण्डा महाविद्यालय
राँची-२

रिसर्च : दिल्ली

रांची विश्वविद्यालय के द्वारा
पी-एच०डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत
शोध-प्रबन्ध
'नागपुरी और उसका शिष्ट-साहित्य'
का
साहित्य-खंड

Rs. 25.00

PRINTED IN INDIA

Published by RESEARCH PUBLICATIONS in Social Sciences, 2/44, Ansari Road, Daryaganj Delhi-6 and printed at R. P. Printers, 1526-B, West Rohtas Nagar, Shahdara, Delhi-32.

आभारोक्ति

छोटानागपुर की भूमि रत्नगर्भा है, पर इस धरती के बेटे सदा-सदा से उपेक्षित रहते आए हैं। आज छोटानागपुर का तीव्र गति से औद्योगीकरण किया जा रहा है, परन्तु यहाँ के लोगों को इस नूतन विकास का कोई लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है। उपेक्षा और शोषण का यह क्रम छोटानागपुर के लिए अत्यंत पुराना है, जिसका एक शिकार यहाँ की आन्तर-भाषा नागपुरी तथा उसका साहित्य भी है। यह एक विलक्षण संयोग है कि नागपुरी की ओर जिन विद्वानों का किंचित् ध्यान आकृष्ट भी हुआ है, उनका छोटानागपुर से कोई विशेष सम्पर्क नहीं रहा है। फल यह हुआ कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में इन विद्वानों के द्वारा अत्यन्त प्रतिकूल तथा निराशापूर्ण मत व्यक्त किए गए :—

(१) नागपुरी भोजपुरी का विकृत रूप है।[1] —डॉ० ग्रियर्सन

(२) भोजपुरी की अन्य बोलियों की भाँति सदानी में लिखित साहित्य का अभाव है।[2] —डा० उदयनारायण तिवारी

और यह माना जाने लग गया कि नागपुरी भोजपुरी की एक विभाषा है, जिसमें लिखित साहित्य का सर्वथा अभाव है। यह भ्रम फैलता रहा और इसके निराकरण का प्रयास तक नहीं किया गया। यह बात मुझे बराबर सालती रही, फलतः मैंने इसी विषय पर शोध-कार्य करने का निश्चय किया। अनेक वर्षों के परिश्रम तथा अनेक उतार-चढावों के पश्चात् मैंने "नागपुरी और उसका शिष्ट-साहित्य" नामक शोध-प्रबन्ध १४ जनवरी १९७० को राँची विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर २४ नवम्बर १९७० को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। यहाँ पर उल्लेख कर देना समीचीन ही होगा कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य-विषयक यह पहला शोध-कार्य है।

'नागपुरी और उसका शिष्ट साहित्य' नामक शोध-प्रबन्ध को पूरा करने में मुझे अनेक व्यक्तियों तथा संस्थाओं का अमूल्य सहयोग विविध रूपों में प्राप्त हुआ है, जिनके नामों का उल्लेख मैं विस्तार-भय के कारण नहीं कर रहा, पर मैं इन सबके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस शोध-कार्य को सम्पन्न करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा राँची विश्वविद्यालय से मुझे जो आर्थिक सहायता प्राप्त हुई, उससे मुझे बड़ा बल प्राप्त हुआ, अतः मैं इन दोनों ही संस्थाओं का आभारी हूँ।

नेशनल लाइब्रेरी; कलकत्ता, जिला पुस्तकालय; राँची, राँची विश्वविद्यालय पुस्तकालय; राँची, प्रसिद्ध मानव-विज्ञानी स्व० शरत्चन्द्र राय के निजी पुस्तकालय; राँची तथा इतिहास विभाग के पुस्तकालय (राँची विश्वविद्यालय) से मैंने पर्याप्त

१. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया (१९०३), जिल्द-५, खण्ड-२, पृष्ठ-२७७
२. भोजपुरी भाषा और साहित्य (१९५४) पृष्ठ-३४४

लाभ उठाया है, अत: इन सभी संस्थाओं के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

डॉ० कामिल बुल्के ने कृपापूर्वक मुझे अपने निजी पुस्तकालय का केवल उपयोग ही नहीं करने दिया, बल्कि उन्होंने मेरे लिए दुर्लभ पुस्तकों तथा पांडुलिपियों का प्रबन्ध भी कर दिया था। उनके इस अनुग्रह के लिए मैं धन्यवाद जैसे तुच्छ शब्द का प्रयोग करूँ तो यह मात्र औपचारिकता होगी, अतः मैं चुप रहना ही उचित मानता हूँ।

नागपुरी के अनन्य भक्त स्वर्गीय पीटर शांति नवरंगी से इस कार्य में मुझे प्रत्येक सहयोग मिला और मिली सबसे बड़ी वस्तु उनकी कृपा-दृष्टि। उनके प्रति मैं किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ—मैं समझ नहीं पाता। मेरे जानते नागपुरी की किंचित् सेवा कर ही उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन संभव है और मुझे यह विश्वास है कि ऐसा करके ही उनकी आत्मा को शांति भी पहुँचाई जा सकती है।

श्री योगेन्द्र नाथ तिवारी, श्री राधाकृष्ण, श्री दिनेश्वर प्रसाद तथा श्री सुशील कुमार से विचार-विमर्श के मुझे जो अवसर प्राप्त होते रहे हैं, उनसे मुझे अपने कार्य में बड़ी सहायता मिली है, अत: मैं इन सभी कृपालुओं का अनुगृहीत हूँ।

इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत कर पाना कदाचित् मेरे लिए संभव नहीं हो पाता, यदि पग-पग पर मुझे अपने गुरु तथा शोध-निदेशक डॉ० रामखेलावन पाण्डेय डी० लिट्, आचार्य तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, राँची विश्वविद्यालय के सुचिंतित निदेशन तथा परामर्श की यथासमय प्राप्ति नहीं होती रहती। अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी मुझे समय प्रदान करने में आपने कभी भी कोई कोताही नहीं की। इन सबके लिए 'आभार-प्रदर्शन' की औपचारिकता निभाकर भी मैं अपने को उऋण नहीं कर पाऊँगा—यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, अत: मौन हूँ—पर श्रद्धावनत।

सुप्रसिद्ध भाषाविद् श्रद्धेय डॉ० उदयनारायण तिवारी, डी० लिट् से बहुत दूर रहकर भी मैं सदा उनके आशीर्वाद पाता रहा हूँ। जब-जब मेरे सामने कठिनाइयाँ आई, डॉक्टर साहब ने सहर्ष मेरी सहायता की है, अत: मैं डॉक्टर साहब के प्रति अपने-आपको सदा नतमस्तक पाता हूँ।

मेरे शोध-प्रबन्ध "नागपुरी और उसका शिष्ट साहित्य" का प्रकाशन दो स्वतन्त्र ग्रन्थों के रूप में किया जा रहा है :—

(१) नागपुरी शिष्ट साहित्य
(२) नागपुरी भाषा

प्रस्तुत पुस्तक "नागपुरी शिष्ट साहित्य" के प्रकाशक रिसर्च पब्लिकेशंस इन सोशल साइंसेज, दिल्ली-६ का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष सुरुचि प्रदर्शित की है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में जिन लेखकों के ग्रंथों की सहायता ली गई है और जिनकी रचनाओं का उपयोग उद्धरण के रूप में किया गया है, उन सबके प्रति भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

—श्रवण कुमार गोस्वामी

५ नवम्बर १९७२
७०३, मेन रोड
राँची-१

विषय-सूची

१

प्रवेशक

(क) छोटानागपुर—एक ऐतिहासिक परिचय

पहले छोटानागपुर का संपूर्ण क्षेत्र घने जंगलों से परिपूर्ण था, फलस्वरूप यह झारखण्ड के नाम से जाना जाता था। प्राचीनकाल में इस क्षेत्र को कर्कखण्ड कहते थे। महाभारत में इसका उल्लेख कर्ण की दिग्विजय में आया है—

अंगान् वंगान् कलिंगांश्च शुण्डिकान् मिथिलानथ।
मागधान् कर्कखण्डांश्च निवेश्य विषयेऽऽत्मनः॥
आवशीरांश्च योध्यांश्च अहिच्छत्रं च निर्जयत्।
पूर्वां दिशं विनिर्जित्य वत्सभूमिं तथागतम्॥[1]

इस क्षेत्र को अर्कखण्ड भी कहा जाता था, क्योंकि अर्क रेखा (सूर्य रेखा) राँची से होकर गुजरती है। "आइन-ए-अकबरी" तथा "जहाँगीरनामा" में इस भू-खण्ड को "कोकरा" कहा गया है। "जहाँगीरनामा" के अनुसार यहाँ बहुमूल्य हीरे प्राप्त होते थे, संभवतः इसी कारण इसका एक नाम हीरानागपुर भी है। पर, इसका सर्वाधिक प्रचलित नाम "नागपुर" रहा है। इस नामकरण के दो आधार हैं:— (१) यहाँ के जंगलों में कीमती हाथी पाये जाते थे, फलतः इसका नाम नागपुर पड़ा। यहाँ प्राप्त होनेवाले हाथी इतने विख्यात हुआ करते थे कि "श्यामचन्द्र" नामक हाथी को प्राप्त करने के लिए शेरशाह ने यहाँ के तत्कालीन राजा पर आक्रमण के निमित्त अपनी सेना सन् १५१० ई० में भेजी थी।[2] यहाँ के जंगलों से प्राप्त होनेवाले

१. महाभारत, द्वितीय खण्ड (संवत् २०२३ गोरखपुर) पृष्ठ १६६५।

२. १५१०, ए० डी० शेरशाह सेन्ड्स ऐन एक्सपेडिशन अगेस्ट दि राजा ऑफ झारखण्ड (छोटानागपुर) टू सिक्योर दि पोजेशन आफ़ ऐन एलिफ़ेंट नेम्ड श्यामचन्द्र-शरत्चन्द्र राय, दि मुंडाज ऐण्ड देयर कंट्री (१९१२) अपेंडिक्स-४।

हाथियों की ख्याति का उल्लेख "आइन-ए-अकबरी" में भी मिलता है।[3] (२) प्राचीन-काल से ही छोटानागपुर के ऊपर नागवंशी राजाओं का प्रभुत्व रहा है, अतः इस क्षेत्र का नागपुर के नाम से अभिज्ञात होना स्वाभाविक ही है। सन् १७९२ ई० में इसका नाम "चुटियानागपुर" रखा गया, क्योंकि महाराष्ट्र के नागपुर तथा इस नागपुर के वीच अन्तर स्पष्ट करना प्रशासनिक दृष्टि से अपरिहार्य हो गया था। चुटिया आज भी राँची जिले के अन्तर्गत एक कस्वा है, जहाँ पहले नागवंशी लोगों का निवास था। अंग्रेज "चुटिया" शब्द का ठीक-ठीक उच्चारण नहीं कर पाते थे, फलतः कालान्तर में "चुटियानागपुर" आज का "छोटानागपुर" वन गया। सम्प्रति छोटानागपुर विहार का एक प्रमुख प्रमंडल है, जिसके पाँच जिले राँची, हजारीबाग, पलामू, सिंहभूम तथा धनवाद हैं।

छोटानागपुर के आदिनिवासी असुर माने जाते हैं। इस जाति के लोग आज भी छोटानागपुर में पाये जाते हैं, जो लोहा गलाने का काम करते हैं। यहाँ बाहर से आनेवाली आदिम जातियों में मुंडा, उराँव तथा खड़िया हैं। पर इनके आगमन—काल, क्रम तथा मूल-स्थान के सम्बन्ध में निश्चय-पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। इस प्रदेश में पुरातत्त्व विभाग की ओर से खोज नहीं के बराबर हुई है, फिर भी उपलब्ध सामग्रियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहाँ मनुष्य अनादि काल से रहते आ रहे हैं।

प्राचीन छोटानागपुर

प्राचीन छोटानागपुर झारखण्ड के नाम से जाना जाता था और ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र के लोगों पर उस समय वाहरी राजाओं का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं था। महाभारत-काल में राजगृह के शक्ति-सम्पन्न राजा जरासन्ध ने भी इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान नहीं रखा था। मगध के महापद्मनंद उग्रसेन ने उड़ीसा तक के क्षेत्रों पर अधिकार प्राप्त किया था, अतः ऐसा संभव है कि उसने झारखण्ड को भी अधिकृत किया हो। मगध साम्राज्य में इस क्षेत्र को कदाचित् पहली बार अशोक के राज्य-काल (२७३-२३२ ई० पू०) में सम्मिलित किया गया था। मौर्य साम्राज्य के पतन पर कलिंग के राजा खारवेल ने झारखण्ड के क्षेत्र से होकर राजगृह तथा पाटलिपुत्र को पराभूत किया था। समुद्रगुप्त (सन् ३३५-३८० ई०) ने दक्षिण पर आक्रमण के समय झारखण्ड को भी पार किया था। चीनी यात्री इत्सिंग के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि झारखण्ड से होकर ही वह नालन्दा तथा वोधगया पहुँचा था।[4]

३. आइन-ए-अकवरी (१९६५), पृष्ठ १३०।
४. एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड वुक रांची १९६१, पृष्ठ १।

नागवंश का प्रारम्भ

प्रथम नागवंशी राजा फणिमुकुट राय हुए। इस सम्वन्ध में निम्नलिखित किंवदन्ती प्रचलित है—

जनमेजय के नागयज्ञ में पुण्डरीक नामक नाग जलना नहीं चाहता था, अतः मनुष्य का रूप धारण कर वह काशी भाग आया। यहाँ एक ब्राह्मण का वह शिष्य वन गया और उनके घर पर रहकर अध्ययन करने लगा। पुण्डरीक की कुशाग्र प्रतिभा से प्रभावित होकर ब्राह्मण ने अपनी कन्या पार्वती का विवाह उसके साथ कर दिया। पुण्डरीक जव सोता था तो उसकी जीभ वाहर निकल आती थी, जो दो हिस्सों में विभक्त थी। उसके मुँह से जहरीली साँस निकला करती थी, जिससे पार्वती वेचैन हो जाया करती। वह अपने पति से इसका कारण वरावर पूछती, पर पुण्डरीक कुछ भी नहीं वताता।

एक वार दोनों दक्षिण के तीर्थो की यात्रा पर निकले। पुरी से लौटते हुए वे लोग सुतियाम्वे (पिठौरिया के समीप) पहुँचे। उन दिनों पार्वती गर्भवती थी। उसे असह्य प्रसव-पीड़ा होने लगी। उसने सोचा कि अव वह जीवित नहीं बच पाएगी, अतः क्यों नहीं अपने पति से दो जीभों का रहस्य अभी ही पूछ लिया जाय। पूछने पर पुण्डरीक ने पार्वती को सच्ची वात वतला दी कि वह मनुष्य नहीं नाग है। यह वतलाकर वह सुतियाम्वे के दह में समा गया। पार्वती ने पुत्ररत्न को जन्म दिया। इसके वाद लकड़ियाँ चुनकर उसने आग जलाई और उस आग में वह जल मरी। तदुपरांत पुण्डरीक नाग दह से निकल आया और वह नवजात पुत्र की रक्षा अपना फण फैलाकर करने लगा।

कुछ लकड़हारों ने इस दृश्य को देखा और इसकी सूचना पड़ोस के एक दूवे नामक ब्राह्मण को दी। दूवे नवजात शिशु को लेकर घर चला आया। उसने उसका पालन-पोषण किया और उसका नामकरण फणिमुकुट राय किया, क्योंकि वह नाग के फण के नीचे पाया गया था। इस किंवदन्ती का दूसरा रूप यह भी है कि दूवे ने प्रधान मानकी मदरा मुंडा नामक व्यक्ति को यह वच्चा सौंप दिया, जिसने अपने बेटे के साथ-साथ फणिमुकुट राय का भी लालन-पालन किया। जव वारह वर्ष व्यतीत हो गए, तो मदरा मुंडा ने देखा कि उसके अपने पुत्र की तुलना में फणिमुकुट राय कहीं अधिक योग्य एव प्रतिभाशाली था, अत. उसने फणिमुकुट राय को ही अपना उत्तराधिकारी घोपित किया। अन्य मानकियों तथा परहा राजाओं ने भी एकमत होकर फणिमुकुट राय को अपना राजा स्वीकार कर लिया। ऐसा माना जाता है कि यह घटना संवत् १२१ अथवा सन् ६४ ई० की है।[५] यहाँ से नागवंशी राज्य का प्रारम्भ होता है। (पर शरतचन्द्र राय के अनुसार यह घटना ५वीं शताब्दी की है।) फणिमुकुट राय

५. पी० वी० चक्रवर्ती, छोटानागपुर राज, पृष्ठ १।

पुण्डरीक नाग का पुत्र था, अतः इस वंश का नाम नागवंश हुआ। यह उल्लेखनीय है कि लगभग ऐसी ही किंवदन्ती शिशुनाग के सम्बन्ध में भी प्रचलित है।[६]

मुस्लिम शासन-काल

तुर्क-अफगान शासन-काल के पूर्व तक (सन् १५२६ ई०) छोटानागपुर बाहरी प्रभावों से मुक्त था और इस क्षेत्र की यात्रा करना निरापद नहीं माना जाता था। फिर भी मथुरा जाते समय चैतन्य महाप्रभु ने झारखण्ड को पार किया था—

"मथुरा यात्रार छले आसि झारिखण्ड। भिल्ल प्राय लोक ताहां परम पाषंड ॥ ५० ॥
नाम-प्रेम दिया कैल सभार निस्तार। चैतन्येर गूढ़लीला बुझिते शक्ति कार ॥ ५१ ॥
वन देखि हय भ्रम-एइ वृंदावन। शैल-देखि मने हय, एइ गोवर्द्धन ॥ ५२ ॥
याहा नदी देखे, ताहां मानये कालिंदी। ताहां प्रेमावेशेनाचे प्रभु पड़े कान्दि ॥ ५३ ॥"[७]

इसी प्रकार लोगों का छिटपुट आवागमन इस क्षेत्र में होता। पर यहाँ के शासन पर यहाँ के राजाओं का ही अधिकार था और झारखण्ड बाहरी हस्तक्षेपों से पूर्णतः मुक्त था। सन् १५१० ई में "श्यामचंद्र" नामक हाथी को प्राप्त करने के लिए शेरशाह ने अपनी सेना यहाँ भेजी। इसे सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण माना जा सकता है। शेरशाह जब हुमायूं का पीछा कर रहा था, उस समय भी उसने पलामू के चेरुह सरदार के विरुद्ध ख्वास खाँ को झारखण्ड में भेजा था।[८] सन् १५५६ ई० में अकबर शासनारूढ़ हुआ। उन दिनों झारखंड को कोकरा भी कहा जाने लग गया था। सन् १५८५ ई० में अकबर ने शाहबाज खाँ के सेनापतित्व में यहाँ एक सेना भेजी। शाहबाज खाँ ने तत्कालीन राजा मधुसिंह को पराजित किया, फलतः मधुसिंह ने मुगल-साम्राज्य को कर देना स्वीकार कर लिया।[९] सन् १६०५ ई० में अकबर की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् छोटानागपुर एक प्रकार से पुनः स्वतंत्र हो गया।

"तुजक-इ-जहाँगीरी" में छोटानागपुर को कोकरा कहा गया है। जहाँगीर के

६. महावंश टीका स्पष्ट कहती है कि शिशुनाग का जन्म वैशाली में एक लिच्छवी राजा की वेश्या की कुक्षि से हुआ था। इस बालक को घूरे पर फेंक दिया गया। एक नागराज इसकी रक्षा कर रहा था। प्रातः लोग एकत्र होकर तमाशा देखने लगे और कहने लगे "शिशु" है, अत. इस बालक का नाम शिशुनाग पड़ा। इस बालक का पालन-पोषण मंत्री के पुत्र ने किया।—डॉ० देवसहाय त्रिवेद, प्राङ्मौर्य बिहार (१९५४), पृष्ठ ९९-१००।

७. श्री श्री चैतन्य चरितामृत (मध्यलीला), वृंदावन (१९६४), पृष्ठ ४६६।

८. चौंसा के युद्ध के पश्चात् उसने ख्वास खाँ को बिहार की तरफ झारखड के चेरुह सरदार के विरुद्ध और जलाल खाँ बिनजालू तथा हाजी खाँ बटनी को बंगाल की तरफ भेजा और स्वयं हुमायूं का पीछा करते हुए आगे बढ़ा।—डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल सम्राट् हुमायूं पृ० २४८।

९. आइन-ए-अकबरी (१९६५) पृ० ४३८।

शासन-काल में यहाँ बहुमूल्य हीरे पाये जाते थे। यहाँ से जहाँगीर को एक ऐसा हीरा भी प्राप्त हुआ था, जिसका मूल्य पचास हज़ार रुपये आँका गया था। इस क्षेत्र को अपने अधिकार में लाने के लिए बिहार के सूबेदारों ने कई प्रयास किए, किंतु उन्हें कुछ हीरों से ही संतुष्ट होकर यहाँ से लौट जाना पड़ता था, क्योंकि यहाँ के जंगल घने तथा मार्ग दुर्गम थे। जब इब्राहिम खाँ बिहार का सूबेदार बनाया गया, तो जहाँगीर ने उसे कोकरा पर आक्रमण कर तत्कालीन राजा दुर्जनशाल को अपदस्थ करने का आदेश दिया ताकि राज्य के सभी हीरों तथा हीरे की खानों पर मुगल-अधिकार हो सके। सूबेदार बनने के पश्चात् इब्राहिम खाँ ने शीघ्र ही कोकरा पर आक्रमण कर दिया। पहले की तरह इस बार भी दुर्जनशाल ने कुछ हाथी तथा हीरे इब्राहिम खाँ के पास भिजवाए, पर खाँ ने उन्हें स्वीकार नहीं किया और राज्य के ऊपर पूरी शक्ति के साथ अचानक हमला बोल दिया। दुर्जनशाल की सेना तैयार भी नहीं हो सकी थी कि मुगलों की सेना उस पर चढ़ आई। दुर्जनशाल की खोज होने लगी। अंततः उसे एक घाटी में अपने भाई तथा विमाताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। इब्राहिम खाँ के हाथ दुर्जनशाल के कोषागार के सारे हीरे तथा तेईस हाथी लगे। इस वीरता तथा उपलब्धि से प्रसन्न होकर जहाँगीर ने इब्राहिम खाँ को "फतेहजंग" की उपाधि प्रदान की और उसका मंसब चार हज़ार सवार का कर दिया।[१०]

दुर्जनशाल को बंदी बनाकर दिल्ली से ग्वालियर भेज दिया गया, जहाँ उसे बारह वर्षों तक रखा गया। एक बार किसी हीरे की ठीक-ठीक परख नहीं होने के कारण दरबार में हीरे के पारखियों के बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। उस हीरे की परख के लिए दुर्जनशाल को बुलाया गया। उसने संदेहास्पद हीरे और एक सच्चे हीरे को दो अलग-अलग भेड़ों के सींगों में बाँधकर उन्हें लड़ा दिया। जो हीरा नक़ली था, वह टूट गया। दुर्जनशाल की परख करने की इस रीति से प्रसन्न होकर शहंशाह ने उसे तथा उसके सभी साथियों को मुक्त कर दिया तथा दुर्जनशाल को "शाह" की पदवी भी प्रदान की। दुर्जनशाल पुनः शासनारूढ़ हुआ। अब उसे प्रतिवर्ष रु० ६०००) मुगल-शासन को देने पड़ते थे।[११]

दुर्जनशाल के परवर्त्ती राजाओं ने कर देना बन्द कर दिया, फलतः मुहम्मद शाह के शासन-काल (१७१९-१७४८) में बिहार के सूबेदार सरबलन्द खाँ ने छोटानागपुर पर चढ़ाई की। सन् १७३१ ई० में सूबेदार फखरुद्दौला ने भी छोटा-नागपुर पर आक्रमण किया। इस प्रकार छोटानागपुर मुस्लिम प्रभाव में आता गया और यहाँ मुसलमान बसने लग गए। कहा जाता है कि राजा दुर्जनशाल मुक्त होकर जब छोटानागपुर लौट रहे थे, तो उनके साथ राजपूत सैनिक तथा पुजारी ब्राह्मण भी आए। इन लोगों ने राज्य के संगठन में राजा की सहायता की, अतः

१०. तुजक-इ-जहाँगीरी (१९५२), पृष्ठ १०८-१०९।
११. शरत् चन्द्र राय, दि मुंडाज एण्ड देयर कंट्री (१९१२) पृष्ठ १५२।

इन्हें जागीरें दी गईं। ये लोग ही आगे चलकर जमींदार कहलाए।

ब्रिटिश शासन-काल

सन् १७६५ ई० में सम्राट् शाह आलम द्वितीय के द्वारा बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी ईस्ट इंडिया कम्पनी को प्रदान की गई, जिसमें छोटानागपुर बिहार के एक अंग के रूप में सम्मिलित था। सन् १७६६ ई० में पहली बार छोटा-नागपुर से अंग्रेजों का सम्पर्क स्थापित हुआ, जब कप्तान कैमक का आगमन हजारीबाग में हुआ। लगभग सन् १७६१-६२ ई० में मराठा शासक माधवराव के प्रभाव के कारण रामगढ़ का महत्त्व बढ़ गया। सन् १७६६ ई० में पलामू के राजा तेजसिह को उनके शत्रुओं ने अपदस्थ कर दिया, अतः उसने कप्तान कैमक से भेंट की। लेफ्टिनेंट गोडार्ड के अधीन एक सेना पलामू आई, जिसने तेजसिंह को पुनः सत्तारूढ़ कर संपूर्ण पलामू को अपने कब्जे में ले लिया। पलामू का राजा रामगढ़ को कर दिया करता था, पर कप्तान कैमक ने यह व्यवस्था कर दी कि वह सीधे कम्पनी को कर दे। आगे चलकर पलामू राजा की सहायता से कप्तान कैमक ने रामगढ के राजा को भी कम्पनी के अधिकार में ले लिया।[१२]

नागवंशी राजा दृपनाथ शाही ने कप्तान कैमक को पलामू-विजय में सहायता प्रदान की थी। साथ ही उसने कम्पनी का अधिकार भी स्वीकार कर लिया। अब उसे कम्पनी को प्रतिवर्ष बारह हजार रुपए कर के रूप में देने पड़ते थे। पर कर नहीं चुकाने के कारण सन् १७७३ ई० में छोटानागपुर पर पुनः चढ़ाई हुई। राजा ने बारह हजार रुपये के स्थान पर अब पंद्रह हजार एक रुपए कर देना स्वीकार कर लिया। आंतरिक प्रशासन पर राजा का अधिकार पूर्ववत् बना रहा। राजा ने यह कबूलियत भी लिख दी कि छोटानागपुर में यात्रा करने वाले यात्रियों की रक्षा तथा चोर-डाकुओं के आतंक को दबाने का भार राज्य पर होगा। पर, इन कार्यों में राजा को सफलता नहीं मिली। वह कर देने में भी पिछड़ गया। राजा से यहाँ के निवासी असंतुष्ट थे ही, जिसकी शिकायत चतरा तक पहुँच चुकी थी। इस असंतोष के कारण सन् १७८९ ई० में आदिवासियों का विद्रोह हुआ, जो बड़ी कठिनाई से दबाया जा सका।[१३]

सन् १७८० ई० में कप्तान कैमक के स्थान पर चैपमैन का आगमन हुआ, जो छोटानागपुर का प्रथम असैनिक प्रशासक था। चैपमैन, जज, मजिस्ट्रेट तथा जिले का कलक्टर भी था। उसकी अदालत बारी-बारी से शेरघाटी तथा चतरा में लगती थी। इस समय रामगढ़ बटालियन की स्थापना की गई, जिसका केन्द्र हजारीबाग था। चैपमैन के अधिकार-क्षेत्र के अन्तर्गत रामगढ़, केन्दी, कुंडा, खड़गडीहा, सम्पूर्ण पलामू,

१२. एम० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक, राँची १९६१, पृष्ठ २।
१३. वही, पृष्ठ ३।

चकाई, पाचेत तथा शेरघाटी के आस-पास के इलाके थे।[१४]

छोटानागपुर के महाराजा तथा उनके भाइयों में झगड़ा शुरू हो गया। इस झगड़े के पीछे महाराजा के दीवान दीनदयालनाथ सिंह का हाथ था। आदिवासी तो पहले से असंतुष्ट थे ही, अतः वे भी इस झगड़े का लाभ उठाने को उद्यत हो गए। पर यह समाचार अंग्रेजों को मिल गया, अतः सन् १८०७-१८०८ ई० में मेजर रफसेज के अधीन एक सेना भेजी गई। दीवान पहले तो भाग निकलने में सफल हो गया, पर बाद मे वह गिरफ्तार कर लिया गया। महाराजा ने बकाया कर चुका दिया और अपने भाइयों से समझौता भी कर लिया। सन् १८०९ ई० में यहाँ छः पुलिस थाने बनाए गए। यहीं से आंतरिक प्रशासन पर अंग्रेजों का हस्तक्षेप प्रारंभ हो गया।[१५]

आदिवासियों के बीच व्याप्त असंतोष की आग भीतर-ही-भीतर सुलगती रही, जिसका विस्फोट सन् १८३१-३२ के कोल आंदोलन (लरका आंदोलन) में हुआ। इसका प्रधान कारण मुस्लिम तथा सिख ठेकेदारों का मुंडाओं के प्रति अपमानजनक व्यवहार था। तमाड़ के समीप एक गाँव में मुंडा लोग जमा हुए। इन लोगों ने मिलकर मुसलमान तथा सिख ठेकेदारों को लूटा तथा उनकी सम्पत्ति को काफी नुकसान पहुँचाया। यह आंदोलन राँची जिले के अनेक हिस्सों में फैल गया। आंदोलन-कारियों ने गैर-आदिवासियों (सदान) के साथ अमानुषिक तथा बर्बर व्यवहार किया। मार-काट काफी दिनों तक चलती रही। यह आंदोलन सन् १८३१ ई० में प्रारंभ हुआ था, पर इसे सन् १८३२ में काफी खून-खराबी के पश्चात् कप्तान विलकिन्सन के द्वारा दबाया जा सका।

इस कोल आंदोलन से शिक्षा ग्रहण कर अंग्रेजों ने प्रशासन की सुविधा को ध्यान में रखकर "साउथ वेस्ट फ्रंटीयर एजेन्सी" की स्थापना की, जिसका मुख्यालय लोहरदगा बनाया गया। इस एजेन्सी के अधीन आज का लगभग संपूर्ण छोटानागपुर प्रमंडल था। इसकी देख-रेख एक एजेन्ट के द्वारा की जाती थी, जो एजेन्ट टू दि गवर्नर जनरल कहलाता था। आगे चलकर इस पद का नाम सन् १८५४ ई० में कमिश्नर कर दिया गया। पहले एजेन्ट के अधीन प्रिंसिपल एसिस्टेंट टू दि एजेन्ट हुआ करता था। सन् १८६१ ई० में इस पद के स्थान पर डेपुटी कमिश्नर पदनाम का प्रयोग प्रारम्भ हो गया।[१६]

अब छोटानागपुर पूर्णतः अंग्रेजों के अधिकार में था। सन् १८४५ ई० में चार ईसाई मिशनरियों का जर्मन से यहाँ आगमन हुआ। अभी यहाँ चार ईसाई मिशन सक्रिय हैं जिनके द्वारा यहाँ लाखों आदिवासियों को ईसाई धर्म में दीक्षित किया जा चुका है।

१४. एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक राँची, १९६१, पृष्ठ ३।
१५. वही, पृष्ठ ३।
१६. एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक राँची, १९६१, पृष्ठ ३।

१८५७ का विद्रोह

हजारीबाग में केन्द्रित देशी सिपाहियों की सातवीं तथा आठवीं कम्पनी ने ३ जुलाई, १८५७ को विद्रोह कर दिया। जब यह समाचार कर्नल डाल्टन (राँची के कमिश्नर) को प्राप्त हुआ, तो उसने राँची से लेफ्टिनेंट ग्राहम को रामगढ़ सेना की दो पैदल कम्पनियों, तीस घुड़सवारों तथा दो तोपों के साथ विद्रोह शांत करने के लिए हजारीबाग भेजा। १ अगस्त को यह सेना यहाँ से चली। इस बीच हजारीबाग की विद्रोही सेना ने राँची की ओर कूच कर दिया। जब यह समाचार ग्राहम के सैनिकों को मिला, तो उन लोगों ने भी ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और वे राँची की तरफ लौटने लग गए। लेफ्टिनेंट ग्राहम कुछ वफादार सैनिकों के साथ २ अगस्त को हजारीबाग बड़ी मुश्किल से पहुँच सका।

लेफ्टिनेंट ग्राहम की विद्रोही सेना राँची पहुँच गई। इन लोगों ने डोरण्डा में केन्द्रित सेना को उभाडा, फलतः राँची में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भयंकर विद्रोह भड़क उठा। विद्रोहियों ने डिप्टी कमिश्नर की कचहरी तथा अन्य कार्यालयों को जला डाला और सरकारी खजाने को लूट लिया। जेल से कैदी मुक्त कर दिए गए। यहाँ की सेना पर अंग्रेजों का विश्वास नहीं रह गया, फलतः कर्नल डाल्टन तथा अन्य अंग्रेज अधिकारी हजारीबाग भाग गए। विद्रोहियों को यह आशा थी कि हजारीबाग की सेना उनके साथ हो जाएगी, पर जब हजारीबाग की सेना राँची नहीं आई, तो उन लोगों ने शाहाबाद के विद्रोही नेता बाबू कुँवरसिंह के पास पहुँचने का निश्चय किया। पर यह सेना बाबू कुँवरसिंह के पास नहीं पहुँच सकी, क्योंकि चतरा में २ अक्तूबर, १८५७ को उनकी मुठभेड़ मेजर इंग्लिश की सेना से हुई और उन्हे पराजित होना पड़ा।[१७]

इस विद्रोह में बड़कागढ़ के ठाकुर विश्वनाथ शाही तथा भरनो के जमींदार पाण्डेय गणपत राय ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। विद्रोह शांत होने पर इन दोनों स्वातंत्र्य-सेनानियों को फाँसी की सजा दी गई।

१८५७ के पश्चात् की प्रमुख घटनाएँ

जमींदारों के द्वारा बेगारी प्रथा के प्रारम्भ तथा मालगुजारी में अवैधानिक वृद्धि के कारण यहाँ के निवासियों के बीच असतोष व्याप्त होने लगा, जिसकी परिणति "सरदार लड़ाई" में हुई। सन् १८८७ ई० तक इस "लड़ाई" ने उग्र रूप धारण कर लिया, जिसमें उराँव, मुंडा तथा किसान सभी भाग ले रहे थे। इन लोगों ने जमींदारों को मालगुजारी देना बन्द कर दिया। समझौते के लिए लेफ्टिनेंट गवर्नर सर स्टूअर्ट

१७. एस० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैंड बुक राँची, १९६१, पृष्ठ ३।

वेली का सन् १८९० ई० में यहाँ आगमन हुआ, पर इस समस्या का कोई समाधान नहीं निकल सका।

सन् १८९५ ई० में यह आन्दोलन अपनी चरम-सीमा पर था। इसी समय बिरसा मुंडा नामक आदिवासी नेता का प्रादुर्भाव हुआ। बिरसा ने जो आन्दोलन चलाया वह भूमि तथा धर्म दोनों से सम्बन्धित था। बिरसा ईसाई पादरियों के भी विरोधी थे। उन्होंने यहाँ के लोगों को यह संदेश दिया—"यहाँ की भूमि के स्वामी हम हैं। इसके लिए किसी को भी मालगुजारी न दी जाय। हमें जागना चाहिए और गैर-आदिवासियों को यहाँ की भूमि से निकाल बाहर करना चाहिए ताकि हम अपना शासन स्वयं सँभाल सकें। संसार में ईश्वर सिर्फ एक है अतः अन्य भगवानों तथा प्रेत आदि की पुजा बन्द की जाय। हमें स्वच्छ तथा सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहिए। हत्या, चोरी, झूठ आदि महापाप है।"

बिरसा का यह दावा भी था कि (बिजली की कड़क के समय) उन्हें ईश्वर से सत्प्रेरणा प्राप्त हुई है और वह ईश्वर दूत हैं। आगे चलकर उन्होंने अपनी दैविक शक्ति का परिचय भी लोगों को दिया, फलतः वह भगवान कहे जाने लग गए। बिरसा के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण अंग्रेज चिन्तित हुए, क्योंकि बिरसा के अनुयायिओं ने सशस्त्र क्रांति प्रारम्भ कर दी थी। ७ अगस्त, १८९५ ई० को बिरसा अपने अनेक साथियों के साथ बन्दी बनाए गए। सन् १९०० ई० में उनकी मृत्यु जेल में हैजे से हो गई, ऐसा कहा जाता है।[१८]

बिसुनपुर थाना के जतरा उराँव ने सन् १९१४ ई० में "टाना भगत आन्दोलन" शुरू किया। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेनेवाले आदिवासियों की आर्थिक अवस्था अन्य आदिवासियों की अपेक्षा तेजी से सुधरने लगी, फलतः आन्दोलनकारियों ने अंग्रेजी शासन के साथ असहयोग प्रारम्भ कर दिया। इन्होंने अपने को महात्मा गांधी का अनुयायी बताया। साथ ही इन्होंने सादगी तथा पवित्रता का संदेश लोगों को दिया। टाना भगत मादक द्रव्य, माँस, नृत्य, संगीत तथा शिकार से दूर रहते हैं। ये सिर्फ टाना भगत के द्वारा बनाया गया भोजन ही खाते हैं तथा विवाह अपनी जाति के बाहर नहीं करते।[१९]

कांग्रेस के द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण टाना भगतों को काफी कष्ट उठाने पड़े, फलस्वरूप स्वतन्त्रता के पश्चात् इनकी स्थिति सुधारने के लिए अनेक उपाय किए जा रहे है।

आज का संपूर्ण छोटानागपुर विशेषतः राँची एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में परिवर्तित हो गया है, जहाँ छोटी-बड़ी घटनाएँ तथा गतिविधियाँ होती ही रहती हैं,

१८. एन० डी० प्रसाद, डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैंड बुक राँची, १९६१, पृष्ठ ४।
१९. वही, पृष्ठ ४।

जिनका प्रभाव यहाँ के निवासियों पर तेज़ी से पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में यहाँ छोटे-मोटे आन्दोलनों का होना स्वाभाविक ही है। कभी-कभी "झारखण्ड अलग राज्य" की माँग भी जोर पकड़ लेती है। सन् १९६७-६८ में छोटानागपुर से गैर-आदिवासियों को निकाल बाहर करने के आन्दोलन ने राँची जिले को विशेष रूप से प्रभावित किया। इसी समय से बिरसा जो ईसाई धर्म तथा पादरियों के विरोधी थे, ईसाइयों के भी प्रेरणा-स्रोत बन गए हैं। यहाँ के आदिवासी भी अब दो गुटों में विभक्त हो गए हैं—(१) हिन्दू आदिवासी तथा (२) ईसाई आदिवासी। इन दो विशिष्ट घटनाओं ने छोटानागपुर की राजनीति को एक नूतन दिशा प्रदान की है।

(ख) नागपुरी साहित्य का सामान्य परिचय

नागपुरी भाषा की भाँति नागपुरी साहित्य का अध्ययन भी अब तक एक उपेक्षित विषय रहा है, फलतः नागपुरी साहित्य का कोई इतिहास उपलब्ध नहीं। सत्य तो यह है कि आज तक छोटानागपुर का ही कोई इतिहास तैयार नहीं किया जा सका, तो यहाँ की एक भाषा के साहित्य के इतिहास-लेखन की ओर किसी का ध्यान क्यों आकर्षित होता? छोटानागपुर सदा से उपेक्षित रहता आया है, जबकि यहाँ की भूमि रत्नगर्भा मानी जाती है। छोटानागपुर की संस्कृति से परिचय प्राप्त करने के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि यहाँ की विभिन्न भाषाओं तथा उनके साहित्य के अध्ययन, प्राचीन स्थलों तथा अवशेषों के पुरातात्त्विक अनुसंधान तथा यहाँ के इतिहास के वास्तविक स्वरूप को ढूँढ निकालने के निमित्त विद्वानों तथा अनुसंधानों की दृष्टि इस ओर आकर्षित की जाय। इससे बहुत-सी लुप्त परम्पराओं तथा आश्चर्य-जनक ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन हो सकेगा। जिस दिन ऐसा होगा, उस दिन निश्चय ही लोगों की यह धारणा निर्मूल प्रमाणित होकर रहेगी कि छोटानागपुर का अपना ऐसा कोई वैशिष्ट्य नहीं, जिस पर वह गर्व कर सके।

"छोटानागपुर की पहाड़ियों में सीताबेंगा की गुफा में द्वितीय या तृतीय शताब्दी ई० पू० की एक नाट्यशाला मिली है, जो "नाट्य-शास्त्र" के वर्णन से मेल खाती है।"[२०] इससे यह विश्वास दृढ़ होता है कि छोटानागपुर में साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, पर यह परम्परा किन्हीं कारणों से लुप्तप्राय: हो गई है। इसी साहित्यिक-शृंखला की एक कड़ी नागपुरी साहित्य भी है, जिसके सम्बन्ध में कतिपय विद्वानों का यह मन्तव्य रहा है कि इसमें कुछ भी नहीं। परन्तु, नागपुरी साहित्य के प्रेमी तथा अध्येता यह भली-भाँति जानते हैं कि नागपुरी का साहित्य बिखरा हुआ भले ही क्यों न हो, किन्तु मात्रा तथा गुण की दृष्टि से उसे हीन नहीं माना जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि मैथिली को छोड़कर बिहारी परिवार की किसी भी भाषा

२०. डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास, संस्कृत और उसका साहित्य (१९५७), पृष्ठ ९७।

का साहित्य गीतों की दृष्टि से नागपुरी साहित्य के समकक्ष नहीं।

नागपुरी साहित्य की दो निश्चित धाराएँ हैं :—(१) लोक-साहित्य तथा (२) शिष्ट-साहित्य।

नागपुरी में असंख्य लोकगीत तथा लोक कथाएँ प्रचलित हैं। यदि इन लोक-गीतों तथा लोक कथाओं का संकलन और विश्लेषण किया जाय, तो यह प्रकट हो जाएगा कि नागपुरी लोक-साहित्य का भाण्डार कितना सम्पन्न है। पर, दुर्भाग्यवश अब तक ऐसा नहीं हो सका है। लोक-साहित्य के संकलन की दिशा में अब तक दो लघु प्रयास किए गए हैं :—

(१) कायलिक मिशन, राँची के रेवरेण्ड फादर बुकाउट ने "सदानी फोक-लोर स्टोरीज" नामक एक संकलन साइक्लोस्टाइल कर प्रकाशित किया था, जिसमें ग्यारह लोक-कथाएँ हैं।

(२) रेवरेण्ड एफ० हान, डब्लू० जी० आर्चर, आई० सी० एस० तथा धरनदास लकड़ा ने "लील खो-र आ खे-खेल" नामक ग्रंथ का प्रकाशन दो खण्डों में पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय से करवाया था, जिसमें उराँवों के बीच प्रचलित २६६० (दो हजार छः सौ साठ) गीतों का संकलन किया गया है। इन गीतों में अधिकांश गीत नागपुरी भाषा के हैं। इस ग्रंथ के प्रथम खण्ड का प्रकाशन सन् १९४० ई० तथा द्वितीय खण्ड का प्रकाशन सन् १९४१ ई० में हुआ।

इन प्रयासों के पश्चात् लोक साहित्य के संकलन की दिशा में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है, अतः यह स्पष्ट है कि अनुसंधान की दृष्टि से नागपुरी लोक-साहित्य अभी भी एक अछूता क्षेत्र है।

लोक-साहित्य के अतिरिक्त नागपुरी में शिष्ट साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। यह ग्रंथ इसी विषय से सम्बन्धित है। यहाँ यह जिज्ञासा स्वभाविक है कि लोक-साहित्य और शिष्ट साहित्य के बीच क्या भेद है? इस विषय पर निम्न-लिखित विचार ध्यान देने योग्य हैं :—

"साधारणतः मौखिक परम्परा से प्राप्त और दीर्घकाल तक स्मृति के बल पर चले आते हुए गीत और कथानक" लोक-साहित्य कहे जाते हैं। स्थूल दृष्टि से लोक-साहित्य अलिखित परम्परा प्राप्त साहित्य है, परिनिष्ठित साहित्य लिपिबद्ध। इसी कारण एक विद्वान् ने लोक-साहित्य को अपौरुषेय भी कहा है। क्योंकि उसके रचयिता का पता नहीं, इसके अलावा वह किसी एक रचयिता की वैयक्तिक अभिरुचि से सीमित न होकर समाज की भावनाओं का लेखा-जोखा सामने रखता है।"[२१]

"लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य का भेद मूलतः वही है, जो एक बहती हुई सरिता तथा एक चारदीवारी से बँधे हौज का। परिनिष्ठित साहित्य नियमों

२१. बैजनाथ सिंह "विनोद", भोजपुरी लोक-साहित्य : एक अध्ययन (१९५८), पृष्ठ २१३।

के आल-बाल से आबद्ध रहता है, उसकी अभिव्यंजना शैली एक निश्चित ढाँचे पर चलती है, उसमें कृत्रिम रूप से खराद-तराश करके हठात् शैलीगत रमणीयता लाने की कोशिश की जाती है, जो नैसर्गिक रमणीयता नहीं। फिर भी शहरी वातावरण में इन्हीं की कदर होती है। वस्तुतः परिनिष्ठित साहित्य को जन्म देने का श्रेय नागरिक लोगों को ही है। वेदों के समय लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य जैसा भेद दिखलाई नहीं पड़ता। समूचा वैदिक साहित्य—प्रमुखतः संहिता भाग—मूलतः लोक-साहित्य ही है। महाभारत में लोक-साहित्य के प्रचुर बीज भरे पड़े हैं। कदाचित् भारतीय साहित्य में लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य की भेदक रेखा वाल्मीकि रामायण है। इसके बाद तो लोक-साहित्य तथा परिनिष्ठित साहित्य के बीच की दूरी उत्तरोत्तर बढ़ती गई। किन्तु इस दूरी के बावजूद भी परिनिष्ठत साहित्य को लोक-साहित्य से प्रेरणा और नया बल मिलता रहा है।"[२२]

ऊपर शिष्ट साहित्य को ही परिनिष्ठित साहित्य कहा गया है। इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि शिष्ट साहित्य मूलतः लिपिबद्ध होता है और वह लोक-साहित्य की तरह मौखिक परम्परा तथा स्मृति का सहारा नहीं लेता। इस प्रकार शिष्ट साहित्य के अन्तर्गत हस्तलिखित, मुद्रित तथा रेडियो द्वारा प्रसारित रचनाएँ आ जाती हैं। वस्तुतः लोक-साहित्य तथा शिष्ट साहित्य के बीच ऐसी कोई सर्वमान्य विभाजक-रेखा नहीं खींची जा सकती,[२३] जिससे यह ज्ञात हो सके कि किसी साहित्य का कितना भाग शिष्ट साहित्य है और कितना भाग लोक-साहित्य, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में प्रत्येक साहित्य लोक-साहित्य के रूप में ही पनपना प्रारम्भ करता है, अतः मैंने उपर्युक्त निकष को स्वीकार कर इस प्रबन्ध में शिष्ट साहित्य के अन्तर्गत वैसी ही रचनाओं को स्थान देने तथा उन पर विचार करने का प्रयास किया है, जो हस्तलिखित, मुद्रित तथा रेडियो के द्वारा प्रसारित हैं।

नागपुरी में शिष्ट साहित्य की रचना का क्रम कब से आरम्भ हुआ, इस सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। नागपुरी का प्राचीन साहित्य

२२. बैजनाथ सिंह, "विनोद", भोजपुरी लोक-साहित्य : एक अध्ययन (१९५८), पृष्ठ २१८।

२३. इन मध्ययुग के संतों का लिखा हुआ साहित्य—कई बार तो वह लिखा भी नहीं गया, कबीर ने तो "मसि-कागद" छुआ ही नहीं था।—लोक साहित्य कहा जा सकता है या नहीं ? आजकल हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में इन संतों की रचनाएँ विवेच्य मानी जाती हैं, अर्थात् उनकी गणना अभिजात और परिष्कृत साहित्य में होने लगी हैं। सीमा-रेखा कहाँ है ? क्यों कबीर की रचना लोक-साहित्य नहीं है ? सच पूछा जाय तो कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़कर मध्ययुग के सम्पूर्ण देशीभाषा के साहित्य को लोक-साहित्य के अन्तर्गत घसीट कर लाया जा सकता है। इसीलिए इस देश में लोक-साहित्य की खोज का काम बहुत जटिल है। केवल परिष्कृत और लौकिक कहे जाने वाले साहित्य की अध्ययन-प्रणाली को ही भेदक माना जा सकता है। लोक-साहित्य मौखिक परम्परा से प्राप्त और संगृहीत होता है, जबकि मध्ययुग का तथाकथित परिष्कृत साहित्य संत पांडुलिपियों के आधार पर संपादित होता है। डॉ०—हजारी प्रसाद द्विवेदी, जनपद (अक्तूबर १९५२) पृष्ठ ७१।

तथा उसका इतिहास उपलब्ध नहीं, अतः किसी सर्वमान्य निष्कर्ष का दावा किया जाना अभी संभव नहीं। नागपुरी साहित्य-प्रेमियों के बीच एक मान्यता यह प्रचलित है कि नागपुरी के ज्ञात प्रारम्भिक कवि हनूमान सिंह थे। यह भी कहा जाता है कि बरजूराम पाठक हनूमान सिंह के समकालीन थे। सन् १८३१ ई० के कोल-विद्रोह को बरजूराम पाठक ने अपनी आँखों देखा था। इस विषय पर उनके गीत भी उपलब्ध हैं। पुराने लोगों के अनुसार हनुमान सिंह बरजूराम पाठक से उम्र में ४० वर्ष बड़े थे, अतः यह अनुमान किया जा सकता है कि हनूमान सिंह सन् १८०० ई० के आस-पास में अवश्य जीवित रहे होंगे। हनूमान सिंह नागपुरी के दुर्जय गायक एवं कवि थे। एक बार हनूमान सिंह तथा बरजूराम पाठक के बीच संगीत-गीत प्रतियोगिता हुई थी, जिसमें हनूमान सिंह को परास्त होना पड़ा था। कालान्तर में हनूमान सिंह ने पुनः साधना कर बरजूराम पाठक* को संगीत-गीत प्रतियोगिता में पछाड़ा था। प्रतियोगिता की बात न भी मानी जाय, तो बरजूराम पाठक का हनूमान सिंह का समकालीन होना निश्चित है, अतः प्रचलित धारणा का आधार लेकर यह कहा जा सकता है कि नागपुरी शिष्ट साहित्य की रचना का श्रीगणेश सन् १८०० ई० के पूर्व अवश्य हो गया होगा। इसके पूर्व भी नागपुरी के कवि तथा लेखक रहे होंगे, पर न तो कहीं उनका उल्लेख ही प्राप्त होता है और न उनका कृतित्व।

नागपुरी साहित्य में गीतों की प्रचुरता है। नागपुरी के गीत मुख्यतः वैष्णव गीत हैं और इनमें राधा तथा कृष्ण का प्रायः किशोर तथा यौवन ही चित्रित हुआ है। साथ ही रामकथा तथा शिव-महिमा भी नागपुरी गीतों की उपजीव्य रही हैं। हनूमान सिंह के समय में गीतों का विषय रहस्यवाद से भी प्रभावित प्रतीत होता है, क्योंकि उस समय के गीतों पर कबीर की छाप दिखलाई पड़ती है। हनूमान सिंह के समकालीन कवियों ने भी कृष्णलीला, राम-कथा तथा शिव-महिमा पर ही गीत लिखे है। उस समय के प्रसिद्ध कवियों में बरजूराम पाठक, लेदाराम तथा घासी महंथ के नाम लिए जा सकते हैं। हनूमान सिंह के पश्चात् अभिमन (पूरा नाम महथा अभिमन प्रसाद सिंह) तथा सोबरन को विशेष ख्याति मिली। इनके गीत मुख्यतः कृष्णलीला तथा राम-कथा पर आधारित है, पर सोबरन के गीतों में रहस्यवाद की छाप भी दिखलाई पड़ती है।

घासी राम नागपुरी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हुए। उनका जन्म (उनके पुत्र हुलास राम के अनुसार) सन् १८५९ (संवत् १९१६) में राँची जिला के करकट नामक गाँव में हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि घासीराम ७१ वर्ष की आयु तक जीवित

*बरजूराम नामक एक कवि पचपरगनिया में भी हुए हैं। इनका जन्म सन् १७२० ई० के आस-पास बाघमुंडी थाना के अन्तर्गत सारजमहातु में हुआ था। इससे भी स्पष्ट है कि नागपुरी में साहित्य-सर्जना का क्रम काफी पहले प्रारम्भ हो चुका था, क्योंकि पचपरगनिया नागपुरी की ही एक विभाषा है।

थे, इसका अर्थ है कि सन् १९३० ई० के आस-पास उनका देहावसान हुआ होगा। पर उनके पुत्र हुलासराम का कहना है कि उनके पिता घासीराम ६७ वर्ष तक जीवित रहे। इस दृष्टि से घासीराम की मृत्यु का वर्ष १९२६ ई० माना जा सकता है। इन्हें मिड्ल तक की शिक्षा मिली थी और जीविका अर्जित करने के लिए इन्होंने शिक्षक तथा पोस्टमास्टर के काम किए थे। परन्तु इनकी काव्य-साधना की धूम यहाँ के जमीदारों के यहाँ मच गई और घासीराम ने नौकरी छोड़ दी। घासीराम की प्रकाशित पुस्तक "नागपुरी फाग शतक" है, अपितु यों कहना चाहिए कि घासीराम नागपुरी के ऐसे प्रथम कवि हुए जिनकी रचना उनके जीवन-काल में ही प्रकाशित हो सकी। इस पुस्तक की प्रति अब उपबब्ध नहीं। इसकी प्रति मेरे देखने में आई है, जिससे यह पता चलता है कि राँची जिला के मसमानो ठाकुरगाँव के लाल गोकुलनाथ शाहदेव घासीराम के आश्रयदाता थे। लाल साहब ने ही "नागपुरी फाग शतक" का प्रकाशन करवाया था। घासीराम के अधिकांश गीत कृष्ण-लीला, राम-कथा तथा शिवस्तुति से संवधित हैं। इन्होंने कुछ गीत अपने आश्रयदाता तथा उनके परिवार के सम्बन्ध में भी लिखे हैं। घासीराम के गीतों में शृंगार-रस भी अपने निखार पर है, जिसमें संयोग तथा वियोग दोनों का मर्मस्पर्शी वर्णन है।

स्फुट गीत लिखने की परम्परा को छोड़कर प्रवन्धात्मक काव्य लिखने की दिशा में दृक्पाल देवघरिया ने सर्वप्रथम प्रयास किया। "नलदमयंती-चरित", "श्री वत्स-चरित", तथा "महाप्रभु वासुदेव-चरित" इनकी मुख्य कृत्तियाँ है। इनमें से "नल-दमयंती-चरित" का धारावाहिक प्रकाशन "आदिवासी" में हो चुका है। शेष दो रचनाएँ अप्रकाशित है। इसी शैली में महलीदास ने "सुदामा-चरित" लिखा। जयगोविन्द कृत" लंका काण्ड" को भी काफी ख्याति मिली, पर अब इसकी मुद्रित प्रति उपलब्ध नही। इन कवियों के अलावा फुटकल गीत लिखने वाले अनेक कवि हुए, जिनमें द्विज भोला, शीतलप्रसाद सिंह (अभिमन के पुत्र), लछमिनी, रुंगटू मलार, पदुम तथा गंदुरा आदि मुख्य हैं।

पाँच परगने में प्रचलित पचपरगनिया नागपुरी की एक विभाषा है, जिसपर बंगला की किंचित् छाप है। नागपुरी क्षेत्र में पचपरगनिया गीतों का भी अत्यधिक प्रचार है। इस बोली के दो उल्लेखनीय कवि विनन्दिया तथा गौरांगिया हुए। इनके गीतों का संग्रह सिल्ली के राजाबहादुर श्री उपेन्द्रनाथ सिंहदेव ने "आदि झूमर संगीत" (१९५६) नामक पुस्तक में प्रकाशित करवाया है। कहा जाता है कि विनंदिया वस्तुतः सिल्ली के परमार क्षत्रिय राजकुल में उत्पन्न हुए, जिनका वास्तविक नाम विनोद सिंह था। इन गीतकारों के सम्बन्ध में पुस्तक के "पूर्वाभास" में कहा गया है—"प्रस्तुत संग्रह में गौरांगिया और विनंदिया के नाम से दो गीतकारों के सरस गीतों का संकलन है। दोनों में वही भक्ति-चेतना और प्रेम-माधुरी है, जो भारत के भिन्न-भिन्न वैष्णव

संतों की वाणी में है। यह संग्रह स्पष्ट कर देता है कि भावधारा में, पद लालित्य में, सामयिक चेतना में और साहित्य-प्रणयन में, यह प्रदेश भी भारत के अन्य प्रदेशों के पाँवों से पाँव मिलाकर ही चल रहा था। न यह कभी पिछड़ा रहा था और न आज भी है।"

नागपुरी के शृंगारिक कवियों में जगनिवास नारायण तिवारी अद्वितीय है। इनकी अप्रकाशित पुस्तक "रस-तरंगिणी" में लगभग ६०० गीत हैं। तिवारी जी ने छन्द तथा अलंकार शास्त्र का अध्ययन किया था, यही कारण है कि उनकी रचनाओं में वह क्लिष्टता आ गई है, जो सामान्य पाठकों या श्रोताओं के लिए बोधगम्य नहीं, पर गीतों की कलात्मकता तथा उनमें भावों का जो गुंफन है, वे सहृदय साहित्यानुरागियों का मन सहज ही मोह लेते हैं।

नागपुरी में यों तो अनेक गीतकार हुए, पर उनकी रचनाएँ उपलब्ध नही हो पातीं। जिन गीतकारों की हस्तलिखित या मुद्रित रचनाएँ प्राप्त होती हैं, उनमें महंतदास, लोकनाथदेव, बुधु, उदयानाथ साय, भुलुराम, आनन्द, पूरण, बोधन, चन्द्रभानु, द्विज जीतनाथ, प्रयाग दास, तुलाम्बर साय, विशुनाथ साय, कन्हैयालाल, अर्जुन, देवचरन, गरही, बुधुवा, राधेकांत, गणेशदास, माधो, अधीन, लछुमन, भोला, बसुदेव सिंह, रघुनाथ दास, नारायण दास, रुक्मिणी, रतन, महिपति, नन्दलाल, रामकिष्टो, नरोत्तम, मधु, कान्दोराय, मोहितनन्दन, डोमन, बिशनाथ, हरि, रामा, उदित नारायण सिंहदेव, रघुनाथ शरण सिंहदेव, गोपीनाथ मिश्र, दिवाकरमणि पाठक, 'मधुप', माकुरुगढ़ी, जगधीप नारायण तिवारी, बनमाली नारायण तिवारी, रामूदास, देवघरिया, हुलास राम, एतव उराँव, कवि बालक, बानेश्वर साहु, करमचन्द भगत, डोमन राम, जगरनाथ सिंह, लक्ष्मण सिंह, प्रद्युम्न राय, खुदी सिंह तथा कपिल मुनि पाठक आदि हैं।

धनीराम बक्शी नागपुरी के अनन्य सेवक, गीतकार तथा गद्य लेखक हुए। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने यदि खड़ी बोली हिन्दी को व्यवस्था प्रदान की थी, तो धनीराम बक्शी ने नागपुरी के बिखरे हुए साहित्य को लुप्त होने से बचा लिया। चाईबासा में रहकर बक्शीजी ने अपनी तथा नागपुरी गीतकारों की अनेक पुस्तिकाएँ प्रकाशित कीं, जो छोटानागपुर के घर-घर में फैल गई। इन पुस्तिकाओं के कारण लोगों में एक जागृति तथा सुरुचि उत्पन्न हुई और यहाँ के लोगों ने अपनी नागपुरी भाषा तथा साहित्य का महत्त्व समझा।

नागपुरी में गद्य-लेखन का प्रारम्भ सन् १६०० के आस-पास ईसाई मिशनरियों ने किया और इसके अग्रदूत रेवरेण्ड पी० इड्नेस हुए। धनीराम बक्शी की तरह काथलिक मिशन के पादरी पीटर शान्ति नवरगी ने नागपुरी के उन्नयन के लिए श्लाघनीय प्रयास किए। यदि यह कहा जाय कि श्री नवरंगी ने नागपुरी के लिए अपने को समर्पित ही कर दिया तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

स्वतन्त्रता के पूर्व तक नागपुरी साहित्यकार पुरानी परम्परा का पालन करते रहे थे, अर्थात् उनके साहित्य में राधा-कृष्ण के प्रेम, राम-कथा, शिव-स्तुति तथा भक्ति को ही स्थान मिलता रहा। पर, स्वतन्त्रता-संग्राम की आग ने छोटानागपुर को भी प्रभावित किया और यहाँ के साहित्यकारों में विषय-परिवर्त्तन के चिह्न परिलक्षित होने लग गए। ऐसे संकेत हमें शेख अलीजान में पहले-पहल दिखाई पड़ते है। स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में जागृति की एक नई लहर दौड़ गई। नागपुरी कवियों के सामने आधुनिक तथा नवीन विषयों का कोई अभाव नहीं था। यही कारण है कि नागपुरी साहित्यकारों ने आधुनिक समस्याओं पर पर्याप्त लिखा। इस पीढ़ी के कवियों में नईम उद्दीन मिरदाहा, अब्बासअली, पाण्डेय दुर्गानाथ राय, खुदी सिंह, बलदेव प्रसाद साहु, दु:खहरण नायक, वटेश्वर साहु, केदारनाथ पाठक, लक्ष्मण राम गोप, योगेन्द्रनाथ तिवारी तथा प्रफुल्ल कुमार राय आदि प्रमुख है। इन्होंने छोटा-नागपुर के हृदय की धड़कनों को अपने गीतों तथा अपनी कविताओं में स्पंदित करने का सफल प्रयास किया है। "लव-कुश-चरित" बलदेव प्रसाद साहु का पुराने कथानक पर लिखा गया एक स्मरणीय प्रबन्धात्मक काव्य है।

सन् १९५७ ई० में राँची में आकाशवाणी का केन्द्र खुल जाने के कारण नागपुरी गद्य को पुनः विकसित होने का अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ। सुशील कुमार, विष्णुदत्त साहु, स्व० किशोरी सिंह तथा श्रवण कुमार गोस्वामी के द्वारा लिखे गए रेडियो नाटक अत्यन्त लोकप्रिय हुए। यदा-कदा आकाशवाणी के द्वारा नागपुरी में वार्त्ता तथा कहानियाँ भी प्रसारित होती हैं। इन कार्यक्रमों ने नागपुरी की ओर लोगों को आकृष्ट किया और साथ ही कुछ नई प्रतिभाएँ भी सामने आई हैं।

नागपुरी में स्वतन्त्र रूप से लिखे गए नाटक प्रायः मिलते ही नहीं। प्रो० विसेश्वर प्रसाद "केशरी" द्वारा लिखित "ठाकुर विश्वनाथ शाही" इस दिशा में उत्साह-वर्द्धक प्रयास है।

नागपुरी भाषा-परिषद्, राँची के द्वारा "नागपुरी" नामक एक सोलह पृष्ठों के मासिक-पत्र का प्रकाशन अप्रैल, १९६१ में किया गया था, परन्तु इसके चार ही अंक प्रकाशित हो सके और इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इस पत्र के आविर्भाव से नागपुरी साहित्य विशेषतः नागपुरी गद्य के विकास को बल प्राप्त होने लगा था। "नागपुरी" के माध्यम से कुछ नए हस्ताक्षर भी सामने आए जिनमें सभी प्रकार के लोग है। कहानीकार के रूप में हरिनन्दन राम तथा प्रफुल्ल कुमार राय के नाम उल्लेख योग्य है। निबंधकार के रूप में योगेन्द्रनाथ तिवारी, शिवावतार चौधरी, भुवनेश्वर "अनुज", छुन्नूलाल अम्बिका प्रसाद नाथ शाहदेव, विनय कुमार तिवारी तथा प्रफुल्ल कुमार राय आदि प्रमुख है। आलोचकों में भवभूति मिश्र, श्रवण कुमार गोस्वामी तथा प्रो० विसेश्वर प्रसाद केशरी के नाम लिए जा सकते हैं।

अक्तूबर, १९६६ में "नागपुरिया समाचार" नामक मासिक समाचार-पत्र का

प्रकाशन हुआ। यह पत्र भी कुछ ही अंकों के पश्चात् बन्द हो गया। नागपुरी साहित्य के विकास में इस पत्र का योगदान विशेष नहीं, पर नागपुरी गद्य को लोकप्रिय बनाने में इसने जो सहायता पहुँचाई, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

नागपुरी गद्य के विकास में "आदिवासी सकम", "अबुआ झारखण्ड" तथा "झारखण्ड समाचार" ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागपुरी भाषा तथा साहित्य श्री राधाकृष्ण द्वारा सम्पादित "आदिवासी" (साप्ताहिक) का चिर ऋणी रहेगा, क्योंकि यही एक ऐसा पत्र है, जिसने प्रारम्भ से ही नागपुरी भाषा तथा साहित्य के उत्थान में अपने आपको दत्तचित्त कर रखा है।

इधर कुछ कवियों में एक नई चेतना स्फुरित हो रही है। इन्होंने भी छन्द के बन्धन को अस्वीकार कर नूतन शैली में आधुनिक कविताओं की रचना शुरू कर दी है। यह स्मरणीय है कि अब तक नागपुरी पद्य में जो कुछ भी लिखा गया है, उनमें अधिकांश गीत ही हैं। पर इन दिनों गीतों के अलावा कविताएँ भी लिखी जा रही हैं। इसके सूत्रधार प्रफुल्ल कुमार राय माने जा सकते हैं। इस धारा के अन्य प्रमुख कवि "नहन" तथा "शशिकर" हैं।

नागपुरी भाषा तथा साहित्य पर हिन्दी के माध्यम से भी निरन्तर विचार-विमर्श होता ही रहता है। नागपुरी के इन शुभचिंतकों में स्व० पीटर शांति नवरंगी, योगेन्द्रनाथ तिवारी, डॉ० रामखेलावन पाण्डेय, डी० लिट्, राधाकृष्ण, प्रो० विसेस्वर प्रसाद केशरी, शम्भु नारायण लाल, भवभूति मिश्र तथा कन्हैयाजी आदि हैं। इनमें से कुछ लोगों ने नागपुरी के कुछ प्रमुख कवियों का अपने निबन्धों में मूल्यांकन भी किया है।

जिस प्रकार बिहारी-भाषा परिवार की सदस्या होते हुए भी नागपुरी की प्रकृति अपनी अन्य भगिनी भाषाओं (मगही, मैथिली और भोजपुरी) से भिन्न है, उसी प्रकार नागपुरी साहित्य की भावभूमि भी मगही, मैथिली तथा भोजपुरी के साहित्य की तुलना में विशिष्ट है, जिस पर समुचित ध्यान दिए बगैर नागपुरी साहित्य के महत्त्व को नहीं समझा जा सकता।

नागपुरी किसी विशेष जाति की भाषा नहीं। इसका प्रयोग सभी धर्मों के मानने वाले करते हैं। इसने यहाँ के आदिवासियों तथा गैर-आदिवासियों को समीप लाने में सम्पर्क-सेतु का कार्य किया है। यही कारण है कि यह यहाँ की सम्पर्क-भाषा मानी जाती है। फल यह हुआ कि नागपुरी शिष्ट साहित्य के निर्माण में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, आदिवासी, गैर-आदिवासी तथा विदेशी मिशनरियों ने भी योगदान किया। इस सम्मिलित सहयोग ने नागपुरी शिष्ट साहित्य को एक ऐसी गरिमा तथा विशिष्टता प्रदान की है, जो बिहार की किसी भी भाषा के साहित्य को नसीब नहीं, क्योंकि मगही, मैथिली तथा भोजपुरी साहित्य की सर्जना में मात्र हिन्दुओं का ही योग है।

आज शिष्ट साहित्य में गीत, संगीत से दूर भागता जा रहा है, जब कि कभी

गीत और संगीत दोनों को अभिन्न तथा एक-दूसरे का पूरक माना जाता था। नागपुरी में आज भी संगीत के अभाव में गीत की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि प्रत्येक गीत गाने के लिए रचा जाता है और उसकी सफलता संगीत की कसौटी पर खरा उतरने में ही है। इसी कारण यहाँ का प्रत्येक गीतकार सामान्यतः संगीतकार भी होता है। यह परम्परा शताब्दियों से चली आ रही है। हनुमान सिंह तथा बरजू राम पाठक के बीच जो प्रतियोगिता हुई थी, वह गीत तथा संगीत प्रतियोगिता थी। ऐसी प्रतियोगिताएँ आज भी होती हैं। नागपुरी साहित्य की यह विलक्षणता अन्यत्र दुर्लभ है।

पुस्तक-प्रकाशन का कार्य अब विशुद्ध व्यापारिक दृष्टिकोण से किया जा रहा है, फलतः नागपुरी साहित्य के प्रकाशक नहीं मिल पाते। प्रकाशकों की इस उदासीनता के कारण अनेक प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकारों की रचनाएँ भी प्रकाश में नहीं आ पा रहीं। हितैषी कार्यालय, चाईबासा के स्वामी बनीराम बेकसी की मृत्यु के कारण नागपुरी पुस्तकों का प्रकाशन लगभग बन्द-सा हो गया है। जो अपनी किताब स्वयं छपवा सकते हैं, उनकी ही रचनाएँ पाठकों तक पहुँच पाती हैं। इस दिशा में प्रशासन के अतिरिक्त मन्त्रियों का ध्यान भी आकर्षित किया गया, परन्तु अब तक इसका कोई सुफल सामने नहीं आ सका है।

अनेक विपरीत परिस्थितियों तथा बाधाओं के रहते हुए भी नागपुरी भाषा तथा साहित्य का विकास गतिमान है। अनेक उत्साही व्यक्ति इसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील दीख पड़ रहे हैं, अतः हमें विश्वास के साथ यह आशा करनी चाहिए कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य का प्रगति-चक्र भविष्य में और अधिक गतिशील हो सकेगा।

(ग) अध्ययन पद्धति

नागपुरी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन-अनुसंधान की ओर विद्वानों अथवा अनुसंधाताओं का ध्यान अब तक आकर्षित नहीं हो सका था। इतना ही नहीं, नागपुरी भाषा के सम्बन्ध में कतिपय विद्वानों के द्वारा जो भ्रांत निष्कर्ष निष्पादित किए गए, उनका खंडन या विरोध भी किसी ने नहीं किया। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि नागपुरी किस सीमा तक उपेक्षित रही है। नागपुरी के साहित्य-संकलन की ओर भी किसी व्यक्ति या संस्था की दृष्टि नहीं मुड़ सकी। एक-दो व्यक्तियों ने इस दिशा में थोड़ी रुचि अवश्य प्रदर्शित की है, किन्तु उनके द्वारा संकलित साहित्य उनकी निजी सम्पत्ति है, जिसका सार्वजनिक होना अभी शेष है। चूँकि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में इसके पहले कोई ठोस कार्य नहीं हुआ था, अतः जब इस शोध-कार्य का श्रीगणेश किया गया, तो ऐसा लगा कि संदर्भ-ग्रंथों तथा संकलित साहित्य के अभाव में यह प्रयास एक अनकही कहानी बनकर रह जाएगा। एक अछूते विषय के

अनुसंधाता के समक्ष पग-पग पर हतोत्साहित करने वाली कितनी कठिनाइयाँ आ सकती हैं, उनका किंचित् आभास मुझे पहले भी था, परन्तु पूर्ण ज्ञान नहीं। इन विघ्नों को दूर करने के लिए एक विशिष्ट अध्ययन-पद्धति अपनानी पड़ी, जिसके प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं :—

(१) क्षेत्रीय-कार्य
(२) पत्राचार
(३) व्यक्तिगत-सम्पर्क
(४) सूचनादाताओं का सहयोग
(५) संदर्भ-ग्रंथों का अध्ययन
(६) विचार-विमर्श।

(१) क्षेत्रीय-कार्य

इस शोध-कार्य को सम्पन्न करने के लिए क्षेत्रीय-कार्य की सर्वाधिक सहायता लेनी पड़ी है। यह साहित्य-संकलन तथा सूचना-संग्रह के लिए अपरिहार्य प्रमाणित हुआ। राँची नागपुरी का मुख्य क्षेत्र है, अतः यहाँ के विभिन्न गाँवों में मुझे अनेक बार जाना पड़ा। कभी-कभी कुछ दिनों के लिए मुझे गाँवों मे रुकना भी पड़ता था। इस क्रम में मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए हैं, वे अत्यंत कटु हैं। कभी-कभी तो मैं चार-पाँच घंटों तक लगातार साइकिल चलाता रह गया और मुझे पीने के लिए एक बूँद पानी भी प्राप्त नहीं हो सका। एक घटना सिमडेगा की है। शंख नदी पार कर मुझे बाघडेगा नामक गाँव जाना था। मैं सिमडेगा से सुबह को साइकल पर चला। किसी प्रकार जंगली तथा पहाड़ी रास्ता तय कर मैं शंख नदी के किनारे पहुँच गया। पर, वहाँ पहुँचकर ऐसी अनुभूति होने लगी कि मैं एक ऐसे निर्जन, अज्ञात तथा भयावह स्थान पर आ गया हूँ, जहाँ से मेरा लौट पाना अब असंभव है। चारों ओर दूर-दूर तक फैली हुई बड़ी-बड़ी चट्टानें और शंख की गरजती हुई धारा। काफी देर के पश्चात् एक आदिवासी युवक दिखलाई पड़ा। मुझे भयभीत तथा चिन्तित देखकर युवक ने मुझे आश्वस्त करने का प्रयास किया। उसने अपने कंधे पर मेरी साइकिल रख ली। मैं उसके पीछे-पीछे उसके निर्देशानुसार चलने लगा। पानी की धारा जब मेरे सीने तक चढ़ आई, तो मेरी साँस ऊपर-नीचे होने लगी। किसी प्रकार मैं नदी के पार पहुँच सका। जब मैं अपने गन्तव्य पर पहुँचा, तो मुझे देखकर लोगों को अपार आश्चर्य हुआ, मानो उनके सामने मैं नहीं—मेरा भूत खड़ा हो। अभी भी जब मेरी आँखों के सामने शंख नदी का दृश्य नाच जाता है, तो मैं सिहर उठता हूँ। इसी प्रकार के कितने विविध एवं तीखे अनुभव हैं, जो इस अनुसंधान के क्रम से मुझे प्राप्त हुए। राँची के अनेक गाँवों तथा स्थानों के अलावा क्षेत्रीय-कार्य के लिए मैंने निम्नलिखित स्थानों की यात्रा की :—

मध्यप्रदेश—जशपुर, कोरिया, उदयपुर, घोलेंग, पत्थलगाँव, अम्बिकापुर (सुरगुजा), कुनकुरी तथा बिलासपुर।

उड़ीसा—गाँगपुर, हामिरपुर (राउरकेला), बोनाईगढ़, बामड़ा, क्योंझर और सुन्दरगढ़।

बंगाल (पश्चिम)—झालदा, पुरुलिया, रघुनाथपुर, तथा आदरा।

बिहार—रामगढ़, हजारीबाग, चंदवा, लातेहार, गढ़वा, गोला, धनबाद, चक्रधरपुर चाईबासा तथा जमशेदपुर।

क्षेत्रीय-कार्य से साहित्य-संकलन तथा सूचना-संग्रह में उल्लेखनीय सहायता प्राप्त हुई। सच तो यह है कि क्षेत्रीय-कार्य के अभाव में इस शोध-कार्य को पूरा कर पाना संभव था ही नहीं—कम-से-कम मैं ऐसा मानता हूँ। इस दृष्टि से यदि यह कहा जाय कि प्रस्तुत प्रबन्ध की रीढ़ क्षेत्रीय-कार्य ही है, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

(२) पत्राचार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण में पत्राचार का भी पर्याप्त लाभ उठाया गया है। कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों तथा संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित करने के लिए पत्राचार का सहारा लेना पड़ा, जिनसे आवश्यक एवं उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त हो सकीं। "नागपुरी साहित्य-सेवियों का संक्षिप्त परिचय" नामक परिच्छेद के लिए मुख्यत: पत्राचार की ही मदद लेनी पड़ी है। इसके लिए नागपुरी साहित्य-सेवियों के पास साइक्लोस्टाइल्ड फार्म की प्रतियाँ डाक के द्वारा भेजी गई, जो उनके द्वारा भरकर मेरे पास वापस लौटा दी गई।

(३) व्यक्तिगत-सम्पर्क

नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाले व्यक्तियों तथा संस्थाओं की सहायता प्राप्त करने के लिए "व्यक्तिगत-सम्पर्क" की विशेष आवश्यकता पड़ी। इस क्रम में मुझे उल्लेखनीय सहयोग स्वर्गीय पीटर शांति नवरंगी, डॉ० कामिल बुल्के, श्री राधाकृष्ण तथा श्री योगेन्द्र नाथ तिवारी से मिला। डॉ० बुल्के का स्नेह यदि मुझ पर नहीं होता, तो संभवत: "ईसाई मिशनरियों के तत्त्वावधान में रचित नागपुरी साहित्य" नामक परिच्छेद का प्रामाणिक लेखन संभव नहीं हो पाता। इन कृपालुओं के अतिरिक्त भी मुझे अनेक व्यक्तियों से लाभ हुआ है, जिनकी एक लम्बी सूची बन सकती है।

(४) सूचनादाताओं का सहयोग

कभी-कभी क्षेत्रीय-कार्य तथा पत्राचार के बाद भी यह अनुभव हुआ कि

कुछ अतिरिक्त सूचनाओं की आवश्यकता अभी भी बनी है। ऐसी अवस्था में मित्रों तथा शुभचिन्तकों ने वांछित सूचनाएँ भेजकर आवश्यकताओं की पूर्त्ति की है।

(५) संदर्भ-ग्रन्थों का अध्ययन

नागपुरी भाषा तथा साहित्य से सम्बन्धित संदर्भ-ग्रंथों का कैसा अभाव है, यह दुहराने की आवश्यकता मैं नहीं समझता। नागपुरी पर डॉ० ग्रियर्सन ने अपने "लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया" नामक ग्रंथ में विचार किया है, जिन विचारों को ही परवर्त्ती विद्वानों ने प्रकारान्तर से दुहराने की चेष्टा की है। डॉ० ग्रियर्सन तथा अन्य विद्वानों के ग्रंथों के अध्ययन के लिए मुझे कलकत्ता जाना पड़ा। राँची में ऐसा आज भी कोई पुस्तकालय नहीं, जहाँ पुरानी पुस्तकें प्राप्त हो सकें, अतः कलकत्ते में एक महीने तक ठहरकर मैंने "नेशनल लाइब्रेरी" में उपलब्ध आवश्यक पुस्तकों का अध्ययन किया।

(६) विचार-विमर्श

प्राप्त सूचनाओं तथा तथ्यों की प्रामाणिकता की परीक्षा के लिए विचार-विमर्श करना अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ। इस क्रम में मुझे अपने गुरु तथा निदेशक श्रद्धेय डॉ० रामखेलावन पाण्डेय से निरंतर सत्परामर्श तथा समुचित निर्देशन यथा-समय प्राप्त होते रहे। नागपुरी भाषा साहित्य के विषय में स्वर्गीय पीटर शांति नवरंगी तथा श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी से मुझे निरंतर विचार-विमर्श का सुअवसर प्राप्त हुआ। इन सभी महानुभावों के विचारों तथा अनुभवों से मैंने यथासंभव लाभ उठाने का प्रयत्न किया है।

२

ईसाई मिशनरियों के तत्त्वावधान में रचित नागपुरी साहित्य

सम्प्रति राँची का विकास एक औद्योगिक नगर के रूप में हो रहा है, परन्तु स्वतन्त्रता के पूर्व राँची, मिशनरियों का नगर प्रतीत होता था। राँची के तीन प्रसिद्ध मार्गो—मेन रोड पर जर्मन एवांजेलिकल लुथेरान मिशन, चर्च रोड पर एस० पी० जी० मिशन तथा पुरुलिया रोड पर काथलिक मिशन अवस्थित है। उपर्युक्त तीनों मिशनों की अवस्थिति राँची के हृदय-स्थल पर है, जिसके कारण ये और भी महत्वपूर्ण हो गए हैं। इन मिशनों के अलावे सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट मिशन भी कार्य कर रहा है। छोटानागपुर के विकास में प्रथम तीन मिशनरियों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन

सन् १८४४ ई० में एवंजेलिस्ता योहनेस गोस्सनर नामक पादरी ने बर्लिन (जर्मनी) से ए० शत्स के नेतृत्व में अ० ब्रन्त, फ्रेद्रिक बाच्छ और इ० थ० जानके नामक व्यक्तियों को भारत भेजा। इन चारों व्यक्तियों को धर्म-प्रचार के लिए बर्मा के मेगुई शहर में जाना था, पर इस क्षेत्र में अमेरिकन बापटिस्ट मिशन के लोग पहले ही आ पहुँचे थे, अत: इन्हें अपना निर्णय बदल देना पड़ा। इन मिशनरियों का आगमन राँची में कैसे हुआ, यह भी एक मनोरंजक कथा है।[1]

१. "दैव्योग से एक दिन जब वे अपने मित्रों के संग हुगली के तीर पर एक सकरी गली में फिर रहे थे तब परदेशियों के डेरों को देखते-देखते उन्होंने चियड़े पहिने हुए और जटा बाँधे हुए कई एक सिरवाले, कतवार बुहारने हारे हरिजनों को गली में काम करते देखा कि वे सांवले वर्ण के हैं जो वहाँ के सुन्दर और गोरे-गोरे बंगालियों के वदन और चेहरे से भिन्न 'दिखाई देते है। तब नव-जवान परदेशी लोग आश्चर्य मान के अपने मित्रो से पूछने लगे कि ये कुली लोग जो यहाँ रास्ते में इधर-उधर काम कर रहे है किस देश के है ? मित्रों ने बताया कि ये छोटानागपुर के आदि-निवासियों में से है। उनके देश में उनको बहुत कष्ट मिलता है और जमींदार लोग इनको सताते बहुत हैं। वे उनको मनुष्य नहीं वरन् पशु के समान समझते हैं इसी कारण वे अपनी दशा को

२ नवम्बर १८४५ ई० को उपयुक्त चार मिशनरियों का आगमन राँची में हुआ। पहले उन्होंने राँची के उत्तर में अपना तम्बू खड़ा किया, जहाँ पहले जज की कोठी थी। तीन-चार दिनों के उपरान्त ये लोग वर्त्तमान जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन के अहाते में आ गए। १ दिसम्बर १८४५ को जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन के प्रथम स्टेशन का शिलान्यास किया गया और उस स्थान का नाम "बैथेसदा" (दया का घर) रखा गया।

गाँवों तथा बाजारों में घूम-घूमकर इन मिशनरियों ने धर्म-प्रचार का कार्य प्रारम्भ कर दिया। ये लोग तीन उपायों से लोगों के बीच धर्म-प्रचार करते थे—

(१) स्कूल में शिक्षा देकर,
(२) बीमारों को दवा देकर, तथा
(३) धार्मिक प्रवचन देकर।

कभी-कभी इन्हें बड़ी विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। इन्हें अपने कार्य में सफलता भी नहीं मिल रही थी। एक लम्बी अवधि के बाद ९ जून १८५० ई० को निम्नलिखित चार व्यक्तियों ने अपने धर्म परिवर्त्तित किए :—

(१) नवीन पोड़े—(हेथाकोटा निवासी)
(२) केशो —(चिताकुनी निवासी)
(३) बन्धु —(चिताकुनी निवासी) तथा
(४) घुरन —(कुरण्डा निवासी)

ये चारों व्यक्ति उराँव थे।

अब मिशनरियों को अपने उद्देश्य में सफलता मिलने लगी। इस बीच मिशन के कई केन्द्र विभिन्न गाँवों में भी स्थापित किए गए। सन् १८५७ तक छोटानागपुर में ईसाइयों की संख्या ७०० के करीब पहुँच गई। मेन रोड, राँची में अवस्थित जर्मन गिरजाघर की स्थापना २५ दिसम्बर १८५५ ई० को हुई।

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम की लहर छोटानागपुर तक आ पहुँची और उसका प्रधान केन्द्र राँची हुआ। स्वतन्त्रता-सग्राम के कारण मिशनरियों को राँची छोड़कर कलकत्ता जाने के लिए बाध्य होना पड़ा। फलस्वरूप मिशन की प्रगति रुक-

सुधारने और कुछ पैसा कमाने के लिए यहाँ आये हैं। यह सुनकर उन चारों मिशनरियों के मन में बड़ी दया और प्रेम उत्पन्न हुआ। वे परस्पर कहने लगे कि भला हो कि छोटानागपुर में जाकर हम इन्हीं जातियों के बीच सुसमाचार प्रचार करें। तब उनके मित्र लोग वहाँ जाने के लिए आनन्द से सम्मत हुए।"

—छोटानागपुर की कलीसिया का वृत्तान्त १८४४—१८९०
लेखक—कुशलमय शीतल, द्वितीय संस्करण—१९५५,
पृष्ठ ६ तथा ७।

ली गई। सन् १८६१ ई० से मिशन का कार्य पुनः प्रारम्भ हो गया। जर्मन एवंजेलिकल मिशन अब यहाँ के भारतीय पादरियों द्वारा संचालित एक स्वतन्त्र निकाय है।

एस० पी० जी० मिशन

सन् १८६९ ई० में रेवरेण्ड जावेज कॉर्नेलियस ह्विटली सपत्नीक राँची आए। इसके पूर्व उन्होंने करनाल के जाटों के बीच धर्म-प्रचार का कार्य किया था। यहीं से एस० पी० जी० मिशन का कार्य प्रारम्भ होता है। रेव० ह्विटली इंगलिश मिशन के थे। कालान्तर में रेव० ह्विटली छोटानागपुर के प्रथम बिशप नियुक्त किए गए। रेव० ह्विटली ने मिशन का संगठन कुछ इस प्रकार किया कि दस महीनों की अल्पावधि में ही ६०० व्यक्तियों ने धर्म-परिवर्त्तन किए। १ सितम्बर १८७० ई० को सन्त पाल गिरजाघर का शिलान्यास तत्कालीन कमिश्नर कर्नल डाल्टन के हाथों सम्पन्न हुआ। ९ मार्च १८७३ को यह गिरजाघर बनकर तैयार हो गया। उसी वर्ष पाँच आदिवासियों को पादरी नियुक्त किया गया। राँची के अलावा इस मिशन के केन्द्र रामतोलिया, मुरहू, कांडेर, बीरु, बरगाड़ी, फटिया टोली, डोड़मा, सपारोम, जारगो, चाईबासा, पुरुलिया, तपकरा, हजारीबाग तथा चित्रपुर गाँवों में भी खोले गये।

कायलिक मिशन

सन १८५९ ई० में ही कलकत्ते में काथलिक मिशन ऑफ वेस्टर्न बंगाल की स्थापना हो गई थी। पर छोटानागपुर की ओर इस मिशन की दृष्टि काफी देर से पड़ी। लगभग दस वर्षों के उपरांत सन् १८६९ ई० में रेव० फादर ए० स्टॉकमैन, एस० जे० नामक प्रथम काथलिक मिशनरी का आगमन चाईबासा में हुआ। सबसे पहले इस मिशनरी ने हो तथा मुंडा जाति के लोगों के बीच धर्म-प्रचार करना प्रारम्भ किया। इस कार्य में रेव० स्टॉकमैन को कोई विशेष सफलता नहीं मिली। सन् १८७४ ई० में चाईबासा का केन्द्र उठाकर बुरुडी नामक गाँव में लाया गया। बुरुडी खूँटी थाना के अन्तर्गत एक गाँव है। उन दिनों लोहरदगा जिला था। बुरुडी में ही काथलिक मिशन का सबसे पहला गिरजाघर बनाया गया। डोरण्डा के मद्रासी, ईसाई सिपाहियों की सेवा के लिए सन् १८७६ ई० में फादर डिकोक आए। उन्होंने भी यहाँ धर्म-प्रचार के कार्य में हाथ लगा दिया। सन् १८८२ ई० में सर्वादाग (खूँटी के दक्षिण में बारह मील पर अवस्थित एक गाँव) में एक नये केन्द्र की स्थापना हुई। सन् १८८३ ई० में डोरण्डा में केन्द्रीय मिशन की स्थापना की गई।

सन् १८८५ ई० में धर्म-परिवर्तित मुंडाओं की संख्या २०९२ तक जा पहुँची। रेव० फा० लिवेन्स का आगमन इसी वर्ष डोरण्डा में हुआ। उन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र तोरपा को चुना। सन् १८७७ ई० में रेव० फा० मोटेट ने डोरण्डा से केन्द्रीय मिशन को हटाकर राँची शहर के बीच पुरुलिया रोड पर प्रतिष्ठित किया।

रेव० फा० लिवेन्स इस मिशन के निर्देशक बनाए गए। उनकी देख-रेख में इस मिशन ने विशेष प्रगति की है। आज काथलिक मिशन अन्य मिशनों की तुलना में द्रुतगति से प्रगति कर रहा है। राँची के सभी मिशनों में यह सबसे बड़ा, सुगठित एवं सम्पन्न मिशन है।[२]

सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट मिशन

इस मिशन का आगमन सन् १९१९ ई० में हुआ। इस मिशन के किसी भी मिशनरी ने नागपुरी का कोई साहित्य प्रकाशित नहीं किया है।

ईसाई मिशनरियों का आगमन छोटानागपुर की भूमि पर सन् १८४५ ई० में हुआ। उस समय के छोटानागपुर और आज के छोटानागपुर में आकाश-पाताल का अन्तर आ गया है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यहाँ तीन ईसाई मिशनों के कार्य चल रहे थे। इन तीनों मिशनों का एकमात्र ध्येय ईसाई धर्म का प्रचार था। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए छोटानागपुर के पिछड़े एवं भीतरी क्षेत्रों में जाकर मिशनरियों ने स्कूल तथा अस्पतालों की स्थापना की। ये दो ऐसे आकर्षण थे जिनकी ओर यहाँ के आदिवासियों का आकर्षित होना बिलकुल स्वाभाविक था। धर्म-प्रचार के क्रम में इन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। विशेषकर हिन्दू तथा मुस्लिम जनता ने इन मिशनरियों का बहुत विरोध किया। परन्तु इन मिशनरियों के अथक परिश्रम तथा अंग्रेजी शासन की ओर से प्राप्त संरक्षण के कारण मिशनों के कार्य में कोई विशेष व्यवधान उपस्थित न हो सका।

ईसाई धर्म के प्रचार का कार्य विशेषतः आदिवासियों के बीच हुआ। इन आदिवासियों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं। मुंडा मुंडारी बोलते हैं। उराँव कुड़ुख (उराँव) का प्रयोग करते हैं। हो जाति के लोग अपनी भाषा हो बोलते हैं। इसी प्रकार खड़िया जाति की भी अपनी भाषा खड़िया है। आज भी ये आदिवासी जातियाँ अपनी भाषा का अधिक प्रयोग करती हैं। इस प्रकार छोटानागपुर के आदिवासी भाषा की दृष्टि से विभिन्न भाषा-खंडों में विभाजित रहे हैं। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पहले से ही उनके बीच एक "सम्पर्क भाषा" रही होगी, जिसकी सहायता से वे सभी आपस में विचार-विमर्श करते रहे हैं। वह सम्पर्क-भाषा नागपुरी ही है। इस भाषा का प्रयोजन आदिवासी तथा गैर-आदिवासी जातियों के लोग समान रूप से करते हैं।

धर्म-प्रचार के क्रम में मिशनरियों के समक्ष भाषा की यह कठिनाई उपस्थित हुई। उन्हें भी एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी, जिसका प्रयोग छोटानागपुर के अधिकांश आदिवासी करते रहे हों। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर ईसाई

२. शरत्चन्द्र राय, मुन्डाज एण्ड देयर कन्ट्री, (१९१२), पृ० २९०-२९४।

मिशनरियों ने नागपुरी को अपनाया, क्योंकि नागपुरी ही एक ऐसी भाषा थी जो "सम्पर्क भाषा" के रूप में उस समय भी सर्वत्र प्रचलित थी। उराँव, मुंडा, खड़िया तथा हो आदि सभी जातियाँ अपनी-अपनी भाषाओं के साथ नागपुरी का भी प्रयोग करती हैं। एस० पी० जी० मिशन राँची के रेवरेण्ड ई० एच० ह्विटली ने स्वयं स्वीकार किया है—"यह जमींदार तथा रैयत दोनों के द्वारा बोली जाती है। यह उराँव तथा मुंडा लोगों के द्वारा भी व्यापक रूप से अपना ली गई है, जो पहले सिर्फ अपनी ही भाषा का प्रयोग करते थे। इस प्रकार गँवारी को बोलने तथा समझने का महत्त्व मैजिस्ट्रेटों तथा मिशनरियों के लिए समान है।"[3]

इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही रेव० ह्विटली ने सन् १८९६ ई० में एक छोटी-सी पुस्तिका "नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर" का प्रकाशन किया। इस पुस्तिका का प्रकाशन ही इस विचार की पुष्टि के लिए पर्याप्त है कि गँवारी (नागपुरी) का ज्ञान प्राप्त करना ईसाई मिशनरियों के लिए अनिवार्य-सा हो गया था। फलस्वरूप ईसाई मिशनरियों ने नागपुरी के अध्ययन के साथ-साथ मुण्डारी, उराँव, हो तथा खड़िया आदि भाषाओं पर भी ध्यान दिया। यहाँ की आदिवासी जनता तक पहुँचने के लिए उनकी भाषा में ही काम करना लाभदायक सिद्ध हुआ। ईसाई मिशनरियों ने नागपुरी, मुंडारी तथा उराँव इन तीन भाषाओं का विशेषरूप से अध्ययन किया, वल्कि यह भी कहा जा सकता है कि ईसाई मिशनरियों ने इन भाषाओं का उद्धार भी किया। इन भाषाओं में ईसाई धर्म-ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित कर ईसाई मिशनरियों ने यदि अपने ध्येय की पूर्ति की, तो उन्होंने नागपुरी, मुण्डारी तथा उराँव के महत्त्व से लोगों को अवगत भी करवाया। इस दृष्टि से ईसाई मिशनरियों के द्वारा इस क्षेत्र में की गई सेवाएँ कभी भी भुलाई नहीं जा सकतीं। इस कार्य में जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन, एस० पी० जी० मिशन तथा काथलिक मिशन के मिशनरियों ने जो कार्य किए हैं, उनका विवरण काल-क्रमानुसार नीचे प्रस्तुत है।

ईसाई मिशनरियों द्वारा लिखित एवं उपलब्ध नागपुरी साहित्य

(१) रेव० ई० एच० ह्विटली

रेव० ह्विटली, एस० पी० जी० मिशन, राँची के पादरी थे। सन् १८९६ ई०

३. रेव० ई० एच० ह्विटली—नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर" पृष्ठ—इंट्रोडक्टरी
"इट इज स्पोकन बोथ बाई जमीन्दार्स एण्ड रैयत्स, ऐण्ड हैज बीन वेरी लार्जली एडोप्टेड बाई दी मुण्डाज एण्ड ओरॉवज टू फोरमर्ली स्पोक वनली देयर एवोरिजनल लैंग्वेजेज। इट्स युज इज कांस्टेंट्ली इनक्रीजिंग। हेन्स दी इम्पॉर्टेंस आफ अंडरस्टैंडिंग ऐन्ड स्पीकिंग दिस गँवारी टू मैजिस्ट्रेट ऐण्ड मिशनरी इज एलाइक।"

में "नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर" नामक इनकी पुस्तिका का प्रकाशन, कलकत्ते के बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस ने किया। इसे नागपुरी का सर्वप्रथम व्याकरण माना जा सकता है।

सन् १८९६ ई० में राँची जिले का अलग कोई अस्तित्व नहीं था। उस समय लोहरदगा ही जिला था। यही कारण है कि पुस्तिका के नामकरण में "लोहरदगा" शब्द का प्रयोग किया है। पुस्तिका के अन्त में घरेलू बातचीत, एक मुकदमे की गवाही तथा एक छोटा-सा गीत संगृहीत है। ये सभी रचनाएँ नागपुरी में ही हैं। पुस्तक रोमन लिपि में मुद्रित है।

इस पुस्तिका का दूसरा संस्करण सन् १९१४ ई० में बिहार एण्ड उड़ीसा गवर्नमेन्ट प्रेस के द्वारा प्रकाशित किया गया। इस संस्करण में पुस्तक का नाम "नोट्स ऑन नागपुरिया हिन्दी" रखा गया। इस संस्करण में पृष्ठ-संख्या २१ से ३२ हो गई और इसमें कुछ नये उदाहरण भी सम्मिलित कर लिए गए।

रेव० ह्विटली ने डॉ० ग्रियर्सन को उनके भारत का भाषा-सर्वेक्षण में सहायता प्रदान की थी। नागपुरी पर विचार करते समय डॉ० ग्रियर्सन ने रेव० ह्विटली के व्याकरण को ही आधार माना।

इस पुस्तक के प्रकाशन-काल (सन् १८९६) के पूर्व प्रकाशित कोई भी नागपुरी पुस्तक अब तक देखने में नहीं आई है।

(२) "राजा दाउद केर चुनल गीत मन"

इस पुस्तक की पांडुलिपि काथलिक मिशन, राँची में उपलब्ध है, जो ½ फुलस्केप के आकार की दो कापियों में लिखित है। इस पांडुलिपि में नब्बे पृष्ठ हैं, जो बिलकुल खस्ते हो गए हैं और स्पर्श-मात्र से ही चूर हो जाते हैं। इस पांडलिपि में लेखक या अनुवादक का नाम कहीं भी अंकित नहीं। पांडुलिपि के प्रथम पृष्ठ के ऊपरी कोने में महीन अक्षरों से १८९६ अंकित है। पांडुलिपि के आवरण के एक स्थान पर ईस्टर अप्रील ९४ (रोमन लिपि में) भी अंकित है। इन दोनों को पुस्तक का लेखन-काल मानकर यह कहा जा सकता है कि ईसाई मिशनरियों द्वारा लिखित यह सर्वप्रथम धर्मगीत पुस्तक है।

यह पुस्तक रोमन लिपि में लिखी गई है और इसमें दाउद (संत डेविड) के निम्नलिखित गीतों का ही अनुवाद उपलब्ध है—१, २, ३, ४, ५, ८, ९, १०, १३, १४, १५, १८, २३, २४, २६, ३२, ३३, ३५, ३६, ३९, ४०, ५०, ५८, ६२, ६६, ७१, ७२, ८३, ८४, ८५, ९०, ९२, ९३, ९४, ९५, ९७, ९९, १००, १०२, १०५, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११८, १२०, १२१, १२६, १२७, १२९, १३३, १४२, १४५, १४६, १४८, १४९ तथा १५० (कुल इकसठ गीत), अतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद अपूर्ण ही है। इस पुस्तक के १४२ वें

गीत की प्रथम पाँच पंक्तियों का देवनागरी लिप्यन्तर पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत है।[४]

(३) रेव० पी० इड्नेस

जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन के रेवरेण्ड पी० इड्नेस ने बाइबिल के सुसमाचारों का नागपुरी में अनुवाद किया। ये पुस्तकें दी ब्रिटिश एण्ड फॉरेन बाइबिल सोसाइटी, कलकत्ता के द्वारा क्रमशः प्रकाशित की गई। इन सभी पुस्तकों में कैथी लिपि का प्रयोग किया गया है। नागपुरी में प्रकाशित सुसमाचारों का विवरण इस प्रकार है :—

(क) सन् १९०७ ई० में "नागपूरिया में नया नियमकेर पहिला ग्रन्थ याने मत्ती से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में ११० पृष्ठ हैं।

(ख) सन् १९०८ में "नागपूरिया में नया नियमकेर दोसर ग्रन्थ याने मारक से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में ७० पृष्ठ हैं।

(ग) सन् १९०९ में "नागपूरिया में नया नियमकेर चौथा ग्रन्थ याने योहन से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" के प्रथम सस्करण का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक में ८६ पृष्ठ है।*

(घ) सन् १९१२ ई० में "नागपूरिया में नया नियमकेर पाँचवाँ ग्रन्थ याने लूक से लिखल प्रेरितमनक काम" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन हुआ। इसमें एक सौ दस पृष्ठ हैं।

ये सभी पुस्तकें डिमाई साइज में प्रकाशित की गई। "नागपूरिया में नया

४. ईश्वर से सहाय अउर धर्म में चलेक केर विनती

१—हे परमेश्वर हमर विनती सुन, हमर विनती पर कान रख, अपन सच्चाई केर साथ हमर सुन।

२—अउर अपन दास केर साथ लड़ेकले विचार में मत आवहि, काहेकि तोर साम्हने कोई जन बिना दोष नही ठहरी।

३—काहेकि वैरी हमर जीउ केर पीछे पड़ल हय, हमर जीउके जमीन तक दिन घिन करलय हय।

४—हमके आगे मुरदार के समान अंधार जगाये बइठाय हय अउर हमर जीउ हमर में बहुत तकलीप से पूर्ण हय। हमर जीउ हमर में उजड़ गेलई।

५—हम अगला दिनके याद करिला तोहर सत काम पर सोच करिला तोर हाथ केर बनाएक चीज पर ध्यान करिला। —पाडुलिपि, पृष्ठ ९१

*सूचनादाताओं के अनुसार "नागपुरिया में नया नियमकेर तीसरा ग्रन्थ..." का भी प्रकाशन हुआ था, पर यह पुस्तक मुझे कही भी देखने को नही मिल सकी।

नियमकेर पाँचवाँ ग्रन्थ याने लूक से-लिखल प्रेरितमनक काम" से लिए गए एक उद्धरण का देवनागरी लिप्यन्तर पाद-टिप्पणी मे प्रस्तुत है।[५]

(४) नागपुरिया आराधना

सन् १९१५ ई० में जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान (गोस्सनर) मिशन ने "नागपुरिया आराधना अर्थात् एतवारकेर गिरजा वचन" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। इस पुस्तक में लेखक अथवा अनुवादक का नाम कहीं भी अंकित नहीं। पुस्तक का आकार डिमाई है। इसमें १०८ पृष्ठ हैं। यह देवनागरी लिपि में मुद्रित है।

विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करने की विधियाँ इस पुस्तक में बतलाई गई हैं। "बिहाहकेर नियम" से लिया गया एक संक्षिप्त अंश पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत है।[६]

(५) रेवरेण्ड फादर हेनरिक फ्लोर

सन् १९३१ ई० मे कलकत्ते के मैसर्स बेग डनलप एण्ड कम्पनी लिमिटेड ने टी डिस्ट्रिक्ट लेबर एसोसिएशन के लिए "लैंग्वेज हेण्डबुक सदानी" नामक पुस्तक का

५. (प्रेरित मनक तजुब काम करेक)

(१२) प्रेरितमनक हाथ से ढेर चिन्हा और ताजुब काम आदमीमनक मने करल जात रहे, और उमन मोब एक चित्त होएके सुलेमानकेर ढवा मे रहें। (१३) दोसर मन मधे के कहीं उमन साथे मिलेक्ले साहस नी रहे, लेकिन आदमी उमनक बड़ाई करत रहे। (१४) मगर औरो विश्वासीमन, (ढेर मरद और औरतो, प्रभु मे मिल गेलैं,) होतैं। (१५) और आदमी बेमराहा मनके बाहरे सड़क मे लाटन के खटिया और पटिया मन मे रखत रहैं कि जेखन पतरस आवी, सेखन उक छाहीं उमन मधे केकरो मे पड़ोर। (१६) आने पासेकेर शहरोमन से आदमीमन बेमराहामन के और अशुद्ध आत्मामन से सताल मनके लिनल यिरुशलीम मे जुमत रहैं, और उमन मोब चंगा करल जात रहैं।

—नागपुरिया मे नवा नियमकेर पाँचवा ग्रन्थ याने लूकसे लिखल प्रेरित मनक काम, पृष्ठ १६—१७।

६. ए हमरेकेर दुलारा बचावता प्रभु यीशु, तोंए अपन पवित्र वचनमे कहे हिस, आदमी अपन माए बाप के छोड़ के अपन स्त्री से मिलल रही, और उमन दुनो एक गतर होवैं। से उमन आगे दुइ नहीं, मगर एक गतर होवैं इले जे कोनो ईश्वर जोड़ हे उके आदमी अलग न करोक। इ लेखे ए प्रभु, तोंए रचन इ दुनो जनके एक गतर मे जोड़ल हिस, तब जिन्दगी भर इमन में दयाकर, कि उमन मनमेल मिलाप मे रहोंक, आपस मे एक दोसरके पेयार करोंक, स्त्रीकेर सुख और दुःख पुरुष अपन सुख और दुःख समझों और पुरुषकेर सुख और दुःख स्त्री अपन सुख और दुःख समझोंक और इ लेखे सब दुःख और सुख आपुस मे भोगोंक और एक दोसरकेर सहाय करोंक। ए प्रभु, तोंए इमनके अपन सनमेड़ी बना इमनकेर रखवारी कर, इमनकेर अगुवाई कर इमनके अपन वचन और पवित्र विचारी से अगुवाए दे, और अन्त मे उमन के अपन सरगी गुदरी मे लेजा, और सदा तक उमनके आशीष दे, अपन बड़ प्रेम खातिर ऐसन बिन्ती पूरा कर, आमीन। पृष्ठ ६८-६८,

प्रकाशन किया। इस पुस्तक के अन्तरंग ग्रावरण पर "प्रिन्टेड फोर प्राइवेट सर्कुलेशन" अंकित है। पुस्तक रोमन लिपि में मुद्रित है और डिमाई आकार के इसमें १०६ पृष्ठ हैं।

श्री फ्लोर ने इस पुस्तक में पृष्ठ १ से २१ तक सदानी का संक्षिप्त व्याकरण प्रस्तुत किया है। पृष्ठ २५ से ७४ तक सदानी वातचीत के उदाहरण हैं। प्रत्येक पृष्ठ दो स्तम्भों में विभक्त है। पहले स्तम्भ में अंग्रेजी वाक्य हैं और दूसरे स्तम्भ में सदानी अनुवाद। पृष्ठ ७७ से ९३ में एक संक्षिप्त शब्द-कोष है, जिसमें सदानी शब्दों के अंग्रेजी समानार्थक शब्द दिए गए हैं। इसी प्रकार पृष्ठ ९७ से १०६ में अंग्रेजी शब्दों के सदानी समानार्थक शब्द दिए गए हैं।

श्री ह्विटली के बाद यह नागपुरी का दूसरा प्रकाशित व्याकरण है, जो नागपुरी सीखने में विशेष सहायक माना जा सकता है।

श्री पीटर शांति नवरंगी के अनुसार श्री फ्लोर की दो और पुस्तकें गाँगपुर से प्रकाशित हुई थीं—(१) कोमुनियो पोथी (२) सदरी गीत पुस्तक।[७] ये पुस्तकें गाँगपुर मिशन में भी मुझे देखने को उपलब्ध नहीं हो सकीं।

(६) नागपुरिया भजन

इस पुस्तक का प्रकाशन एस० पी० जी० मिशन, राँची के द्वारा हुआ। इसके कई संस्करण प्रकाशित हुए। मुझे इस पुस्तक का तीसरा संस्करण प्राप्त हुआ है जो सन् १९३२ ई० में मुद्रित है। पुस्तक में गीतकार या संग्रहकर्त्ता के नाम का उल्लेख कहीं भी नहीं है। इस पुस्तक में दो सौ सात भजन हैं, जो विभिन्न अवसरों पर गाए जाते हैं। पाद-टिप्पणी में भजन-संख्या १६४ प्रस्तुत है।[८]

(७) रेवरेण्ड फादर कोनराड वुकाउट

काथलिक मिशन राँची के श्री बुकाउट ने "ग्रामर ऑफ दी नगपुरिया सदानी लैंग्वेज" लिखा। यह व्याकरण अब तक अप्रकाशित है। इस व्याकरण की एक

७. रेव० फॉ० फ्लोर प्रिपयर्ड ए "हैण्डबुक ऑफ सदानी" फोर यूज इन दी टी गॉर्डेन्स ऑफ आसाम। स्टिल लेटर ए सदानी कोमुनियो पुथी ऐण्ड ए सदरी गीत पुस्तक एपीयर्ड बाई दी सेम आथर इन गाँगपुर।

—ए सदानी रीडर, प्रीफ़ेस पृष्ठ ३, १९५७।

८. १६४—भाई नहीं लेजबे २. धन वंधल गठरी।
१—जब तोके मरण आइके धइर लेवी, सेखन घर दुरा महल छोइड़ जावे।
२—जे कुछ संग में होवी तोहर ठिन, उसबके वाइंध के तो कइर ले मुठरी।
३—एखन हो चेता मुरुख मने, छन भरकेर ख्वरके के कहेक पारी।
४—एक दिन प्रभु तो लेखा मंगतई जे, कहबे तो सेखन के वचाएक पारी।
५—जे प्रभु यीशु के नी जानी जिन्दगी में, सेके तो प्रभु कहीं नी जानों तोके।
६—प्रभुकेर दासमन विन्ती करत हैं, यीशुकेर चरण धइर लेवा भाइया॥ पृष्ठ ११२-१३।

प्रतिलिपि मुझे देखने को मिली। यह प्रतिलिपि कापी के आकार के २२१ पृष्ठों में पूर्ण होती है और इसमें ३६५ अनुच्छेद हैं। व्याकरण रोमन लिपि में लिखा गया है। इसमें पन्द्रह अध्याय तथा एक इंट्रोडक्शन है। यह प्रतिलिपि सन् १६३४ ई० की है।

श्री बुकाउट का देहान्त कलकत्ते में १४ अगस्त १६०७ को हुआ। अतः यह स्वयं-सिद्ध है कि यह व्याकरण सन् १६०६ ई० के आसपास या पहले लिखा गया होगा। इस व्याकरण का इंट्रोडक्शन बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

श्री बुकाउट द्वारा संगृहीत लोक-कथाओं का संग्रह "सदानी फोक-लोर स्टोरीज", के नाम से उपलब्ध है। कापी के आकार के पृष्ठों में साइक्लोस्टाइल कर यह संग्रह प्रकाशित किया गया है। संपूर्ण पुस्तक रोमन लिपि में अंकित है। दाहिने पृष्ठ पर नागपुरी में लोक-कथा प्रस्तुत है और उसी का अंग्रेजी अनुवाद बायें पृष्ठ पर दिया गया है। पाद-टिप्पणियों में अनुवाद बायें पृष्ठ पर दिया गया है। पाद-टिप्पणियों में कठिन नागपुरी शब्दों के अंग्रेजी में अर्थ भी दिए गए हैं।

इस संग्रह में निम्नलिखित ग्यारह लोक-कथाएँ संगृहीत हैं :—

(१) चालीस गो चोरमन
(२) सगुनवाला जोलहा
(३) बेलपत्ती रानी
(४) गुरु अउर चेला
(५) गुदड़ चरई
(६) चारो परीमन
(७) बनसपत्ती राजा
(८) मायागर राजा
(६) बन भइंसाकर बेटी (बन रंगी रानी)
(१०) नवाँ नोकर, तथा
(११) हरनी रानी।

इस संग्रह की भूमिका रेवरेण्ड हेनरिक फ्लोर ने लिखी है, जिसमें यह उल्लेख मिलता है कि ये कहानियाँ श्री बुकाउट ने बरबे नामक गाँव के एक लोहार से सुनकर लिपिबद्ध की थीं। इन कहानियों का संशोधन रेवरेण्ड एल० कार्डोन ने किया था।[६] श्री फ्लोर की भूमिका नागपुरी पर पर्याप्त प्रकाश डालती है।

श्री पीटर शांति नवरंगी ने इसी संग्रह की सगुनिया जोलहा, चालिस गो चोरमन, बेलपइत रानी, गुरु और चेला तथा गुंडरी चरई करछउवामन नामक लोक-कथाओं को "ए सदानी रीडर" तथा "ए सिम्पल सदानी ग्रामर" नामक अपनी पुस्तकों में किंचित् संशोधन के साथ स्थान दिया है। श्री नवरंगी ने 'सगुनिया

६. दी रेवरेण्ड सी० बुकाउट, एस० जे०. कलेक्टेड देम इन राईटिंग विद दी हेल्प ऑफ वन ऑफ हिज केटेचिस्ट्स ऐण्ड दे वेयर सब्सीक्वेन्टली रिवाइज्ड ऐण्ड करक्टेड बाई दी रेवरेण्ड एल० कार्डोन एस० जे०।

—सदानी फोक-लोर स्टोरीज, फोरवर्ड, पृष्ठ-३।

जोलहा" का "नागपुरिया (सदानी) साहित्य" नामक अपनी पुस्तक में नाट्य-रूपान्तर (लीला) भी प्रस्तुत किया है।

(८) रेवरेण्ड जे० जान्स

काथलिक मिशन, राँची में मुझे "नागपुरिया कहानी" नामक एक पांडुलिपि मिली। पांडुलिपि की लिपि रोमन है। आवरण पृष्ठ के एक कोने पर मई १९२९ (रोमन लिपि में) अंकित है, जो संभवत: इसका लेखन-काल है। इसके लेखक रेवरेण्ड जे० जान्स हैं। पांडुलिपि तीन कापियों में विभक्त है। इसमें निम्नलिखित लोक-कथाएँ सम्मिलित है :—

(१) चाँदीपुरी आदि, (२) बनसपत्ती राजा, (३) गुरु और चेला, (४) बन भैंसाकेर बेटी बनसंगी रानी, (५) हरनी रानी, (६) नवाँ नोकर, (७) चालीसगो चोरमन, (८) बेलपत्ती रानी तथा (९) सगुनवाला जोलहा।

श्री बुकाउट के संग्रह "सदानी फोक-लोर स्टोरीज" तथा श्री जान्स के संग्रह" नगपुरिया कहानी" की तुलना से यह ज्ञात होता है कि श्री बुकाउट के संग्रह में श्री जान्स के संग्रह की सभी लोक-कथाएँ (मात्र चाँदीपुरी आदि छोड़कर) संगृहीत हैं, बल्कि उसमें गुदड़ी चरई तथा मायागर राजा ये दो लोक-कथाएँ अधिक हैं। इन कहानियों की भाषा तथा वाक्य-गठन में पूर्ण समानता है। श्री जान्स ने अपने संग्रह में सिर्फ आदरसूचक सर्वनामों तथा क्रियाओं का प्रयोग किया है पर श्री बुकाउट ने ऐसा नहीं किया। उदाहरणार्थ "गुरु और चेला" की एक पंक्ति नीचे प्रस्तुत है :—

—एगो बूढ़ा रहयँ जे खोब गरीब रहयँ।

—रेव० जे० जान्स।

—एगो बूढ़ा रहे जे खोब गरीब रहे।

—रेव० सी० बुकाउट।

इन दोनों संग्रहों से यह भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि ये दो अलग-अलग प्रयास हैं, पर भाषा तथा वाक्य-गठन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक सम्मिलित प्रयास रहा होगा, जिसमें श्री जान्स ने श्री बुकाउट को पांडुलिपि तैयार करने में सहयोग दिया हो। श्री जान्स की चर्चा न तो श्री बुकाउट ने की है और न श्री पीटर शांति नवरंगी ने ही।

(९) रेवरेण्ड अल्फ्रेड पी० बून, एस० जे०

नागपुरी के विकास-प्रचार में काथलिक मिशन के जिन विदेशी मिशनरियों ने सहयोग प्रदान किया, उनमें रेवरेण्ड अल्फ्रेड पी० बून का उल्लेख बड़े आदर के साथ किया जायगा। श्री बून ने नागपुरी में सबसे अधिक लिखा, पर दुर्भाग्यवश

इनकी रचनाएँ प्रकाश में नहीं आ सकीं। श्री वून द्वारा रचित नागपुरी साहित्य की सूची नीचे प्रस्तुत है—

(क) प्रभु यीशु खीष्ट मसीह
(ख) संत मार्क केर लिखल सुसमाचार
(ग) संत लुकस केर पवित्तर सुसमाचार
(घ) संत योहन केर लिखल सुसमाचार
(ङ) साइलमइर केर हरेक एतवार दिन केर चुनल सुसमाचार
(च) प्रेरितमनकेर कार्य

(क) प्रभु यीशु ख्रीस्ट मसीह—

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तथा टंकित प्रति दोनों ही कायलिक मिशन में उपलब्ध हैं। टंकित पुस्तक तीन जिल्दों में है। प्रथम जिल्द में १-९१, दूसरी जिल्द में ९२-१६२ तथा तीसरी जिल्द में १६३-२४९ पृष्ठ हैं। पुस्तक निम्नलिखत तीन भागों में विभक्त है :—

पहला भाग—जेसु ख्रीस्ट केर लड़कपन	पृष्ठ १—१५
दोसर भाग—जेसु ख्रीस्ट केर धर्म-काज अउर सिखान	पृष्ठ १६—१६२
तीसर भाग—जेसु ख्रीस्ट केर दुख उठान, मरन, जी उठान	पृष्ठ १६३—२४९।

यह पुस्तक रोमन लिपि में लिखी गई है। यह "वरवम सलुटीस" नामक फ्रेंच पुस्तक का नागपुरी अनुवाद है। इसका लेखन-काल १९४० है।

(ख) संत मार्क केर लिखल सुसमाचार—

इस पुस्तक की पांडुलिपि काथलिक मिशन, राँची में सुरक्षित है, जिसमें फुलस्केप आकार के १३२ पृष्ठ है। पुस्तक रोमन लिपि में लिखी गई है। पांडुलिपि के १३२ वें पृष्ठ पर हमीरपुर ३० अक्टूबर १९३३ ई० रोमन लिपि में अंकित है, अतः यह स्पष्ट है कि पाण्डुलिपि का लेखन सन् १९३३ ई० में हमीरपुर (राउरकेला) में सम्पन्न हुआ।

(ग) संत लुकस कर पवित्तर सुसमाचार—

इस पुस्तक की पांडुलिपि भी काथलिक मिशन, राँची में सुरक्षित है, जिसमें फुलस्केप आकार के १५२ पृष्ठ हैं। इस पुस्तक में भी रोमन लिपि का ही प्रयोग किया गया है। पृष्ठ १५२ की पीठ पर मामेरला १८ अक्तूबर १९४१ अंकित है, अतः स्पष्ट है कि यह पुस्तक "मामेरला" में सन् १९४१ ई० में लिखी गई।

(घ) संत योहन केर लिखल सुसमाचार—

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि भी काथलिक मिशन, राँची में सुरक्षित है। पांडुलिपि में फुलस्केप आकार के ४४ पृष्ठ हैं। "संत योहन के सुसमाचार" में इक्कीस खंड होने चाहिए, पर इस पाण्डुलिपि में सात ही खण्ड लिखे गए हैं, अतः यह पुस्तक पूर्ण नहीं मानी जा सकती। पुस्तक का लेखन-काल सन् १९४१ ई० है।

(ङ) साइल भइर केर हरेक एतवार दिनकेर चुनल सुसमाचार—

इस पुस्तक की पांडुलिपि तथा टंकित प्रति काथलिक मिशन, राँची में सुरक्षित है। पांडुलिपि कापी के आकार के १४६ पृष्ठों में है और टंकित प्रति इसी आकार के १०० पृष्ठों में है। इस पुस्तक में भी रोमन लिपि का प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक का लेखन-काल १९४० ई० है।

(च) प्रेरितमनकेर कार्य—

इस पुस्तक की पांडुलिपि काथलिक मिशन, राँची में सुरक्षित है। पांडुलिपि कापी के आकार के १८३ पृष्ठों में हैं। इस पुस्तक में भी सर्वत्र रोमन-लिपि का प्रयोग किया गया है। इसका लेखन-काल सन् १९४१ ई० है।

उपर्युक्त सभी पुस्तकें अप्रकाशित हैं। पुस्तकों की संख्या की दृष्टि से विदेशी काथलिक मिशनरियों में श्री बून ने नागपुरी में सबसे अधिक पुस्तकें लिखी हैं। श्री बून के गद्य का एक संक्षिप्त उदाहरण पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत है।[10]

(१०) रेवरेण्ड फादर एन्तोनी सोयस

काथलिक मिशन के श्री एन्तोनी सोयस ने सदरी भोकेबुलरी नामक एक संक्षिप्त शब्दकोष तैयार किया। इस कोष की टंकित प्रति काथलिक मिशन, राँची में देखने को मिली। इसमें फुलस्केप आकार के ३४ पृष्ठ हैं। इस कोष में लगभग छब्बीस सौ अंग्रेज़ी शब्दों के समानार्थक नागपुरी शब्द दिए गए हैं। नागपुरी बोली का इसे

१०. "जेसु अउर ढेइर चमत्कार अपन चेलामन केर सामने कइर हे, जे ई किताब मे नखे निखल, लेकिन उ लिखल जाय हे जेमे तोहरे मन ई पतियार करा कि जेसु ख्रीस्त ईश्वरकेर बेटा हेके, फिन कि पतियार करेक से उकर नाम में जीवन के पावा।

ई तो ओहे चेला हेके जे उबातमन केर गोवाही के देवेला, ओहे हेके जे उमने के लिख देई हे, अउर उकर गोवाही सत अहे सेके हमरेमन जानिला। अउर ढेइर बात—अहे जेके जेसु करलक, ओहे बातमन, एक-एक कईरके, लिखल जातयँ होलें, किताब मन, जेकर में उमनकेर बारे लिखल होतक, गोटा दुनया में अटबे नी करतयँ।"—प्रभु जेसु ख्रीस्त मसीह (टंकित प्रति), भाग—३, पृष्ठ २४९।

प्रथम कोष माना जा सकता है। इस कोष के लेखन-काल का उल्लेख कहीं भी उपलब्ध नहीं।

(११) रेवरेण्ड पीटर शांति नवरंगी

नागपुरी भाषा और साहित्य के विकास में काथलिक मिशन राँची के श्री पीटर शांति नवरंगी ने उल्लेखनीय कार्य किया है। श्री नवरंगी स्वयं नागपुरी भाषी थे, अतः नागपुरी-सम्बन्धी उनकी सेवाएँ विशेष महत्त्व रखती हैं। श्री नवरंगी स्वयं नागपुरी के एक सफल साहित्यकार हैं। अबतक इनकी निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :—

(क) ए सिम्पल सदानी ग्रामर—

इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९५६ ई० में काथलिक मिशन रांची की धार्मिक साहित्य समिति ने किया। यह नागपुरी का तीसरा प्रकाशित व्याकरण है, जो अपने पूर्व प्रकाशित व्याकरणों की अपेक्षा अधिक विस्तृत तथा उपयोगी है। इस पुस्तक में रोमन तथा देवनागरी दोनों लिपियों का प्रयोग किया गया है। अन्त में "सगुनिया जोलहा" नामक लोककथा श्री बुकाउट के संग्रह से संकलित है।

श्री नवरंगी ने नागपुरी का एक इससे भी कहीं अधिक विस्तृत व्याकरण तैयार किया था, जो दुर्भाग्यवश प्रकाशन के पूर्व ही कहीं गुम हो गया।

(ख) ए सदानी रीडर—

इस पुस्तक का प्रकाशन काथलिक मिशन राँची के द्वारा सन् १९५७ में हुआ। १८३ पृष्ठों की इस पुस्तक में लोक-कथाएँ, वार्त्ता और गीत संगृहीत हैं। पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है। प्रथम खंड में लोक-कथाएँ तथा वार्त्ता, दूसरे खण्ड में गीत तथा तीसरे खण्ड में प्रेम-लहरी (ख्रीस्त की संक्षिप्त जीवनी) है।

श्री नवरंगी के "ए सिम्पल सदानी ग्रामर" तथा "ए सदानी रीडर" के संयुक्त अध्ययन से नागपुरी सीख पाना संभव है, इस दृष्टि से ये दोनों पुस्तकें अत्यंत उपयोगी हैं।

(ग) मरकुस कर लिखल सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार—

इस पुस्तक का प्रकाशन काथलिक मिशन, राँची ने किया। यह बाइबल के सुसमाचार का अनुवाद है। स्मरणीय है कि बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता ने भी "मार्क" के सुसमाचार का नागपुरी संस्करण सन् १९०८ में प्रकाशित किया था।

(घ) संत मतीकर लिखल ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार—

काथलिक मिशन राँची ने इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९६३ में किया। यह पुस्तक मत्ती के सुसमाचार का नागपुरी अनुवाद है। स्मरणीय है कि कलकत्ते की

बाइबल सोसाइटी ने भी सन् १९०७ ई० में मत्ती के सुसमाचार का नागपुरी अनुवाद प्रकाशित किया था।

(ङ) ईसु-चरित-चिन्तामइन—

दो सौ आठ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन काथलिक मिशन, राँची ने सन् १९६३ ई० में किया। इस पुस्तक में ईसु की जीवनी पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। पुस्तक ठेठ नागपुरी भाषा में लिखी गई है। कदाचित् नागपुरी में प्रकाशित पुस्तकों के बीच यह प्रथम पुस्तक है, जिसमें दो सौ से भी अधिक पृष्ठ है।

(च) संत जोहन कर लिखल सिरी ईसु कर पवितर सुसमाचार—

इस पुस्तक का प्रकाशन भी काथलिक मिशन राँची ने किया। यह बाइबल के सुसमाचार का अनुवाद है।

(छ) संत लुकस कर लिखल ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार—

सन् १९६४ ई० में काथलिक मिशन राँची ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया। यह लूक के सुसमाचार का नागपुरी अनुवाद है। स्मरणीय है कि कलकत्ते की बाइबल सोसाइटी ने भी सन् १९१२ ई० में लूक के सुसमाचार का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया था।

(ज) नागपुरिया (सदानी) साहित्य—

इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९६४ ई० में हुआ। श्री नवरंगी द्वारा पूर्व-लिखित पुस्तक "सदानी रीडर" का यह पूरक खंड है। इस पुस्तक में (१) तिरिया चरित, (२) बन्दरा बहुरिया, (३) बन-हरिनी कर बेटा, (४) छोटकी बहुरिया, (५) रविनाथ अउर छविनाथ, (६) कमल अउर केतकी, तथा (७) बहिरा-बहिरी नामक लोक-कथाएँ संगृहीत हैं। सगुनिया जोलहा नामक लोक-कथा का नाट्य-रूपान्तर (लीला) भी इसमें सम्मिलित है।

पद्य भाग में डमकच, बिहा गीत, फगुवा, झूमइर, जनी झूमइर, पावस, लहसुव्वा तथा भजन संगृहीत हैं।

(झ) नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण—

इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १९६५ में हुआ। नागपुरी के प्रकाशित सभी व्याकरणों में यह व्याकरण अत्यधिक विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक माना जा सकता है।

(ञ) इन पुस्तकों के अलावे श्री नवरंगी ने नागपुरी का एक संक्षिप्त शब्दकोष भी तैयार किया है जो प्रकाशित नहीं हो सका है।

श्री नवरंगी ने अकेले नागपुरी भाषा और साहित्य की जो सेवा की है, वह प्रशंसनीय ही नहीं, बल्कि आश्चर्यजनक भी है। ४ नवम्बर १९६८ को विधाता ने हमलोगों से श्री नवरंगी को उस समय छीन लिया जबकि हमें उनके निर्देशन की विशेष आवश्यकता थी। इनके निधन के कारण नागपुरी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र

में जो एक रिक्तता उत्पन्न हो गई है, उसकी पूर्ति संभव नहीं प्रतीत होती। नागपुरी गद्य तथा पद्य के क्षेत्र में श्री नवरंगी के नवीन प्रयोग कभी भी भुलाए नहीं जा सकते। सच तो यह है, मृत्यु के पूर्व के सात-आठ वर्षों को उन्होंने नागपुरी को ही पूर्णतः समर्पित कर दिया था।

श्री नवरंगी के गद्य का एक नमूना पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत है।[३१]

(१२) रेवरेन्ड फादर जोहन केरकेट्टा

(क) सादरी धर्मगीत—

१९५४ ई० में कैथलिक प्रेस, राँची ने श्री केरकेट्टा द्वारा संकलित एक "सादरी धर्म गीत" नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया। सन् १९६३ ई० तक इस पुस्तिका के पाँच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। नागपुरी-भाषी ईसाइयों के बीच यह पुस्तिका अत्यंत लोकप्रिय है। इसमें ईसाई धर्म सम्बन्धी १४२ गीत हैं। गीत संख्या—१११ पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत है।[३२]

(ख) एतवार केर पाठ—

सन् १९६० ई० में सम्बलपुर से इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। यह अनुवाद है। विभिन्न रविवारों तथा पर्वों के लिए चिट्ठी और सुसमाचार इसमें संगृहीत हैं।

(१३) कैथलिक धर्म की सादरी प्रश्नोत्तरी

सन् १९५६ ई० में इस पुस्तक का प्रकाशन सम्बलपुर (उड़ीसा) के कैथलिक मिशन ने किया। इस पुस्तक में लेखक का नाम कहीं भी मुद्रित नहीं। पुस्तक में धर्म-

३१. ठीक समय में मुनी पहुँचलैं। जब ऊ दरबार में पइठलैं, तो इसन लागलक मानो दरबार इजोर होए गेलक। जनता जेठ उहाँ जमा होए रहैं, सउब अकचकाए के उठठ ठाढ़ भेलैं तनिक हाथ जोरलैं अउर उनके मुँह देखालैं। मुनियो आनन्दचित्त होए मधुर मुसकुराय के अउर हाथ जोड़के पहिले राजा के तनिक सउब केउके मुँह देखालैं, अउर 'अपने सउब सुआगत लागिन धइनबाद' कहलैं। सउब दरबारीमन उनके एकटक देखते रहइ गेलैं।
इन्दु-चरित-चिन्तामइन, पृ० १५, १९६३।

३२. स्वर्ग राइज जाएक लागिन
टी० स्वर्ग राइज जाएक लागिन भाइमन,
एखने से डहरके खोजब,
स्वर्ग राइज जाएक लागिन भाइमन।
१—गोटेक डहर मधुर आहे ॥ २ ॥ गोटेक डहर चकर आहे।
२—मधुर डहर स्वर्ग राइज लेजी ॥ २ ॥ चकर डहर नरक गड़ा लेजी।
३—स्वर्ग राइज में सबो सुख आहे ॥ २ ॥ नरक गड़ा में सबो दुःख आहे।
पृष्ठ ६२-६३, १९६२

संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। कुछ उदाहरण पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत हैं।[13]

इस प्रकार राँची के जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन, एस० पी० जी० मिशन तथा काथलिक मिशन के विभिन्न मिशनरियों ने नागपुरी भाषा की सहायता लेकर अपने धर्म-प्रचार के कार्य को गतिशील बनाया। पर इस तथ्य पर भी सदा ध्यान रखना चाहिए कि इससे नागपुरी भाषा तथा उसके साहित्य के विकास में जो सहयोग प्राप्त हुआ, वह कम महत्त्वपूर्ण नहीं। डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने सर्वप्रथम बिहारी बोलियों के ऊपर सन् १८८३ ई० में ध्यान दिया था। बिहारी बोलियों के अध्ययन के पीछे एक सरकारी ध्येय था, जिसकी पूर्ति के लिए "सेवेन ग्रामर्स ऑफ दी डायलेक्ट्स एण्ड सबडायलेक्ट्स ऑफ दी बिहारी लैंग्वेजेज" नामक पुस्तक का प्रकाशन डॉ० ग्रियर्सन ने करवाया। परन्तु डॉ० ग्रियर्सन की दृष्टि नागपुरी (गँवारी) पर नहीं जा सकी। नागपुरी की उपेक्षा का इतिहास यहीं से प्रारंभ माना जा सकता है। कई वर्षों के उपरांत रेवरेण्ड ई० एच० ह्विटली ने सन् १८९६ ई० में गँवारी की ओर ध्यान दिया। यह एक अलग बात है कि दुर्भाग्यवश "नागपुरी" के ऊपर विद्वानों ने उतना ध्यान नहीं दिया, जितना कि मैथिली, मगही और भोजपुरी पर। परन्तु यह कम संतोष की बात नहीं है कि छोटानागपुर की विभिन्न भाषाओं की जैसी सेवा ईसाई मिशनरियों ने की है, वह बिहार की किसी भी भाषा या बोली के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकती है। श्री होपफमैन ने मुंडारी का तेरह खंडों में विश्व कोष (एनसाइक्लोपेडिया) प्रस्तुत किया, जो अपने ढंग की एक अनोखी चीज है।

जर्मन एवजेलिकल लुथेरान मिशन के श्री इड्नेस की यह धारणा थी कि नागपुरी (जो उन दिनों गँवारी के नाम से जानी जाती थी) की सहायता से ही धर्म-प्रचार संभव है। इसी मिशन के श्री नोतरोत्त मुंडारी को यह स्थान दिलाना चाहते थे। श्री इड्नेस के अथक एवं अनवरत परिश्रम के कारण उनके द्वारा अनूदित सुसमाचारों की लोकप्रियता बढ़ी और एस० पी० जी० मिशन तथा काथलिक मिशन दोनों ने ही नागपुरी को अपने मिशनों में समुचित स्थान प्रदान किया। ईसाई मिशनों में नागपुरी को प्रविष्ट कराने का एकमात्र श्रेय श्री इड्नेस को ही दिया जा सकता है।[14]

१३. प्रश्न संख्या ८८—पाप का हेके ?

—जाईन बुईझ के परमेश्वर केर हुक्म, उठाए देवहेंक पाप हेके।

प्रश्न सख्या १२६—हमरेमन अपन आत्मा के का नियंर शुद्ध और पवित्र रखब ? —पृष्ठ १०

—अपन मन में खुशी से कोनो खराब सोच, चाहे लालच नी करब होले हमरेमन अपन आत्मा के शुद्ध और पवित्र रखब। —पृष्ठ १६।

१४. वाल्टर होल्स्टन, जोहानस एवांजेलिस्ता गोस्सनर ग्लाउंब उंद जेमिन्दे, गोटिजेन १९४९ (मूल जर्मनी से)

ईसाई मिशनरियों के तत्त्वावधान में रचित नागपुरी साहित्य
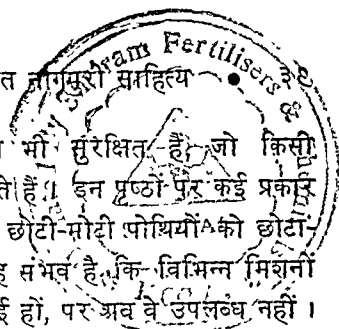
काथलिक मिशन राँची में कुछ ऐसे पृष्ठ अभी भी सुरक्षित हैं, जो किसी नागपुरी शव्दकोप की रचना-प्रक्रिया की याद दिलाते हैं। इन पृष्ठों पर कई प्रकार की लिखावट देखी जा सकती है। ऐसे अनेक पृष्ठ एवं छोटी-मोटी पोथियों को छोटा-नागपुर के विभिन्न मिशनों में ढूँढा जा सकता है। यह संभव है कि विभिन्न मिशनों के द्वारा नागपुरी की और भी पुस्तकें प्रकाशित की गई हों, पर अव वे उपलब्ध नहीं। एस० पी० जी० मिशन की अपनी एक पुस्तक की दुकान है। वहाँ के व्यवस्थापक ने १९६३ में ही वताया कि कई वर्षों पूर्व सभी पुरानी पुस्तकों को कूड़ा समझकर जला दिया गया। इसकी संभावना है कि उस तथाकथित कूड़े में कुछ अनुपलब्ध एवं आवश्यक नागपुरी पुस्तकें भी स्वाहा हो गई होंगी। जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान मिशन की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है। विश्वयुद्ध प्रारंभ हो जाने के कारण इस मिशन के पुराने प्रकाशन तथा कागजात इधर-उधर हो गए। यहाँ का जर्मन एवंजेलिकल लुथेरान चर्च प्रेस, राँची के प्राचीनतम प्रेसों में एक है। नागपुरी की अनेक पुस्तकें यहाँ मुद्रित हुई, परन्तु उचित प्रवन्ध एवं पुरानी पुस्तकों के प्रति उदासीनता के कारण यहाँ भी पुरानी पुस्तकों की "प्रेस कापी" सुरक्षित नहीं रखी गई।

काथलिक मिशन की व्यवस्था संतोषजनक है। यहाँ नागपुरी सम्वन्धी प्रायः सभी सामग्रियाँ सुरक्षित मानी जा सकती हैं।

"सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट मिशन" का आगमन राँची में सवसे पीछे सन् १९१९ ई० में हुआ। इस मिशन की ओर से नागपुरी में कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की गई। अव राँची के प्राय: सभी मिशन हिन्दी में ही धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन में रुचि दिखला रहे हैं।

नागपुरी भापा एवं साहित्य के विकास में जिन ज्ञात-अज्ञात ईसाई मिशनरियों ने कुछ भी कार्य किया है, नागपुरी जगत् सदैव उनका आभारी रहेगा।

३

नागपुरी के विकास में आकाशवाणी, राँची का योगदान

आधुनिक युग में प्रचार तथा प्रसार के निमित्त रेडियो एक सशक्त माध्यम है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरांत सभी प्रकार के संदेश गाँवों तक पहुँचाने में रेडियो ने विशेष योगदान किया है। सम्पूर्ण राष्ट्र में आकाशवाणी के क्षेत्रीय-केन्द्रों के खुल जाने से श्रोताओं को अनेक प्रकार के कार्य-क्रमों को सुनने का अवसर प्राप्त होने लगा। बिहार में सबसे पहले आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना पटना में हुई। सम्पूर्ण बिहार राज्य की सेवा का भार पटना केन्द्र के ऊपर था। देहाती श्रोताओं के लिए "चौपाल" कार्य-क्रम का प्रसारण यहाँ से प्रारम्भ किया गया, जिसका माध्यम भोजपुरी है। बिहार में अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं, अतः यह संभव नहीं कि पटना से सभी बोलियों की रचनाएँ पर्याप्त मात्रा में प्रसारित की जातीं। विशेषकर छोटानागपुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने में पटने का आकाशवाणी केन्द्र पूर्णतः असफल रहा। इसी को ध्यान में रखकर राँची में आकाशवाणी का एक केन्द्र प्रारम्भ करने के लिए केन्द्र से अनुरोध किया गया। केन्द्र ने जनता की इस माँग को स्वीकार कर २७ जुलाई १९५७ को राँची में आकाशवाणी-केन्द्र की स्थापना की, जो छोटानागपुर के श्रोताओं की निरन्तर सेवा करता आ रहा है।

आकाशवाणी राँची के द्वारा "हमारी दुनिया"[1] नामक साठ मिनटों का एक कार्य-क्रम प्रतिदिन प्रसारित किया जाता है, जिसमें "प्रादेशिक समाचार" भी सम्मिलित है। यह कार्य-क्रम विशेषकर ग्रामीणों के लिए है। राँची केन्द्र से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में "हमारी दुनिया" का विशेष महत्त्व है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत नागपुरी, मुंडारी, उराँव, हो तथा संताली बोली की रचनाएँ भी प्रसारित की जाती हैं। "हमारी दुनिया" में सामान्य रूप से नागपुरी का ही प्रयोग किया जाता है।

१. पहले "हमारी दुनिया" का नाम "देहाती दुनिया" था।

राँची में आकाशवाणी-केन्द्र की स्थापना से यहाँ की बोलियों को एक नई शक्ति प्राप्त हुई। छोटानागपुर लोक-साहित्य की दृष्टि से एक सम्पन्न क्षेत्र है, पर विद्वानों ने छोटानागपुर की इस विशिष्टता की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है। ईसाई मिशनरियों ने इस क्षेत्र में जो प्रयास किए हैं, वे अमूल्य हैं। यहाँ की बोलियों को एक सामान्य मंच की आवश्यकता थी, जिस मंच पर सभी बोलियों का संगम हो पाता। इस अभाव की पूर्त्ति राँची में आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना से हुई मानी जा सकती है।

आकाशवाणी राँची ने सामान्यतः छोटानागपुर की प्रायः सभी बोलियों की सेवा की है, पर नागपुरी की विशेष रूप से। इस केन्द्र की स्थापना होते ही नागपुरी साहित्य का अवरुद्ध विकास पुनः प्रारम्भ हो गया। नागपुरी साहित्य की सीमाएँ प्रत्येक दृष्टि से विस्तृत होने लगीं। नूतन साहित्यिक विधाओं के उन्मेष के साथ-साथ नये साहित्यकारों का प्रादुर्भाव हुआ। प्राक्-आकाशवाणी काल में नागपुरी "पद्य" में बँधी हुई थी, पर आकाशवाणी की स्थापना के साथ ही वह गद्य के विस्तृत प्रांगण में भी कूकने लगी। प्राक्-आकाशवाणी काल में नागपुर में गीत लिखने की प्रथा खूब प्रचलित थी। ये गीत सिर्फ मनोरंजन के साधन थे। कुछ लोक-कथाएँ भी प्रचलित थीं, जो नानी के मुखों में ही सुरक्षित थीं। परन्तु नागपुरी की नैसर्गिक सामर्थ्य से किसी ने भी लाभ नहीं उठाया था। नागपुरी छोटानागपुर की आन्तर-भाषा मानी जाती है। इस आन्तर-भाषा की सहायता प्राप्त कर आकाशवाणी आज छोटानागपुर के गाँव-गाँव में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

आकाशवाणी की स्थापना से नागपुरी लोकगीतों तथा लोक कथाओं के उद्धार की ओर लोगों का ध्यान पुनः गया। इन विधाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित नई साहित्यिक विधाओं का भी श्रीगणेश हुआ :—

(१) रेडियो-वार्त्ता
(२) रेडियो-नाटक
(३) कहानियाँ
(४) मौलिक निबन्ध

(१) रेडियो-वार्त्ता

पत्र-पत्रिकाओं में जो महत्त्व निबन्धों का होता है, वही महत्त्व आकाशवाणी में रेडियो-वार्त्ता का है। शिल्प की दृष्टि से रेडियो-वार्त्ता तथा निबन्ध के लेखन में थोड़ा ही भेद है। आकाशवाणी, राँची की स्थापना के पूर्व नागपुरी में न तो रेडियो-वार्त्ता की उपयोगिता थी और न आवश्यकता ही। आकाशवाणी की स्थापना से इस विधा को विशेष बल प्राप्त हुआ। आधुनिक विषयों पर आकाशवाणी के द्वारा

नागपुरी में वार्त्ताएँ प्रस्तुत की जाने लगीं। ये वार्त्ताएँ विशेपत: ग्रामीणों की रुचि के अनुकूल होती हैं। आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित होने वाली वार्त्ताओं में कृषि, योजना, साहित्य, स्वास्थ्य तथा अन्य विपयों को स्थान मिलता रहा है। इस नई विधा के आविर्भाव से नागपुरी गद्य को पुप्ट होने का अवसर प्राप्त हुआ। आकाशवाणी राँची ने नागपुरी जगत् को कई सफल वार्त्ताकार दिए जिनमें सर्वश्री योगेन्द्र नाथ तिवारी, प्रफुल्ल कुमार राय, रघुमणि राय, लक्ष्मणसिंह, राधाकृष्ण, सुशील कुमार, विप्णुदत्त साहु, जगदीश नारायण सिंह, जगतमणि महतो, सुश्री यशोदा कुमारी तथा श्रीमती सरस्वती, विसेश्वर प्रसाद 'केशरी' तथा श्रवण कुमार गोस्वामी आदि हैं।

(२) रेडियो-नाटक

विशेष उत्सवों पर नाटक खेलने की प्रथा छोटानागपुर में बहुत दिनों से चली आ रही है। परन्तु नागपुरी में मौलिक नाटकों का नितांत अभाव है। फलस्वरूप हिन्दी के नाटक ही अब तक खेले जाते रहे थे। हिन्दी नाटक भी नागपुरी मंच पर आकर लगभग नागपुरी नाटक का ही स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं, क्योंकि पात्र अपनी सुविधा के अनुसार हिन्दी कथोपकथनों का रूपान्तर नागपुरी में कर लिया करते हैं। आज भी नागपुरी साहित्य में मौलिक नाटकों का अभाव बना है।

आकाशवाणी राँची की स्थापना से नागपुरी नाटकों का अभाव तो दूर नहीं हो सका, पर किसी सीमा तक उस अभाव को दूर कर सकने में रेडियो नाटकों ने विशेप भूमिका निभाई है। शिल्प की दृप्टि से मंच पर अभिनीत नाटक तथा रेडियो नाटक मे बड़ा अन्तर है। रेडियो नाटककार को सामान्य नाटककार की अपेक्षा अधिक सजग रहना पड़ता है। मंच पर प्रस्तुत नाटक दृश्य तथा श्रव्य दोनों होता है, पर रेडियो से प्रसारित नाटक, मात्र श्रव्य होता है। इस सीमा को ध्यान में रखकर ही रेडियो नाटक लिखे जाते हैं। इस कठिन शिल्प-विधान के रहते हुए भी नागपुरी में अत्यधिक सफल रेडियो नाटक लिखे गये। इन नाटकों का नागपुरी-भाषी जनता ने उत्साहवर्द्धक स्वागत किया।

नागपुरी रेडियो नाटक के लेखन के क्षेत्र में जिन व्यक्तियों को विशेप ख्याति तथा सफलता प्राप्त हुई, उनमें सर्वश्री सुशील कुमार, विप्णुदत्त साहु तथा श्रवण कुमार गोस्वामी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन लेखकों के अतिरिक्त सर्वश्री राधाकृष्ण, भुवनेश्वर "अनुज" तथा स्व० किशोरीसिंह आदि लेखकों के रेडियो नाटक भी बड़े सफल प्रमाणित हुए।

श्री सुशीलकुमार

आकाशवाणी के राँची-केन्द्र ने श्री सुशीलकुमार का धारावाहिक रेडियो-नाटक "चोका, बोका, कोका" सन् १९५७ के दिसम्बर के अंत तक पाक्षिक रूप से तेरह

किस्तों में प्रसारित किया। चोका, वोका, कोका इस नाटक के तीन पात्र हैं, जिनके माध्यम से देश में चल रही पंचवर्षीय योजनाओं का परिचय लोगों को प्रदान किया गया। सम्पूर्ण नाटक-श्रृंखला में ऐसा कहीं भी नहीं लगता कि ये प्रचार के लिए लिखे गए नाटक हैं। हास्य तथा व्यंग्य से पूर्ण कथोपकथन इन नाटकों को जीवंत बना देते हैं। "चोका, वोका, कोका" को श्रोताओं ने विशेष रूप से सराहा, अतः सन् १९५८ के वर्ष में एक और धारावाहिक नाटक "तेतर केर छाँहें" का प्रसारण प्रारम्भ हुआ।

"चोका, बोका, कोका" के अतिरिक्त श्री सुशील कुमार का धारावाहिक नाटक "लोधोसिंह" ६ किस्तों में प्रसारित किया गया। इसके कुछ अंश प्रकाशित भी हुए हैं। इन नाटकों को सुनकर अनायास ही श्री रामेश्वरसिंह काश्यप का प्रसिद्ध रेडियो नाटक "लोहासिंह" की याद आ जाती है।

श्री विष्णुदत्त साहु

जनवरी १९५८ से जून १९५८ तक श्री विष्णुदत्त साहु के 'तेतर केर छाँहें" नामक धारावाहिक रेडियो-नाटक का प्रसारण आकाशवाणी राँची से किया गया। ये नाटक भी पाक्षिक रूप से प्रसारित हुए। "तेतर केर छाँहें" के अन्तर्गत सोलह नाटकों का प्रसारण हुआ।

"तेतर केर छाँहें" अर्थात् इमली के वृक्ष के नीचे मंदरा नामक गाँव के लोगों की बैठक हुआ करती है, जिसमें सुखराम भगत, घिस्सू, भगतिन, टूटल सिंह, हरखू भगत, मास्टर साहब तथा तिवारी जी इन सात पात्रों के बीच बातचीत होती है और वे विभिन्न विषयों पर बातें करते हैं। प्रत्येक नाटक में एक विशेष विषय की चर्चा होती है। सामान्यतः प्रत्येक नाटक में श्री साहु ने एक गीत रखा है।

श्री विष्णुदत्त साहु के नाटकों की भाषा श्री सुशील कुमार की भाषा की तरह फुदकती हुई नहीं। इन नाटकों पर "प्रचार" हावी-सा लगता है, फिर भी नागपुरी-क्षेत्र के श्रोताओं ने इन नाटकों को काफी पसन्द किया।

अब ये नाटक पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हो गए है, जिन पुस्तकों के नाम क्रमशः "तेतर केर छाँहें" तथा "मांदर के बोल पर" है। इन पुस्तकों का प्रकाशन जन-सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार ने किया है।

श्रवण कुमार गोस्वामी

श्री विष्णुदत्त साहु लिखित "तेतर केर छाँहें" का प्रसारण जून १९५८ तक होता रहा। जुलाई १९५८ से दिसम्बर १९५८ तक इस कार्य-क्रम के लेखन तथा निर्देशन का भार श्रवण कुमार गोस्वामी को सौंप दिया गया। इस अवधि में

श्रवण कुमार गोस्वामी के चौदह रेडियो नाटक प्रसारित हुए। ये नाटक पिछले रेडियो नाटकों से कुछ भिन्न रहे। इन नाटकों में "प्रचार" पर ध्यान कम रखा गया और श्रोताओं के मनोरंजन तथा नाटकीयता पर अधिक। प्रत्येक नाटक के अंत में एक गीत की योजना भी इन नाटकों में थी, जिसके कारण ये नाटक श्रोताओं के द्वारा खूब पसन्द किए गए। अभिनेताओं को अपनी प्रतिभा-प्रदर्शन का सर्वप्रथम अवसर इन्हीं नाटकों में प्राप्त हुआ। रेडियो-नाटक के शिल्प-विधान की दृष्टि से भी ये नाटक सफल प्रमाणित हुए। इस शृंखला के कुछ नाटकों को श्री तीनकौड़ी साहु ने राँतू नामक ग्राम में मंच पर प्रस्तुत किया, जो दर्शकों के द्वारा अत्यधिक प्रशंसित हुए।

उपर्युक्त तीन रेडियो नाटककारों के अतिरिक्त अन्य लेखकों की रचनाएँ भी आकाशवाणी से यथा-कदा प्रसारित की गई। स्वर्गीय किशोरी सिंह (आकाशवाणी के कर्मचारी कलाकार) स्वयं एक अच्छे नाटककार थे। उनसे नागपुरी साहित्य को विशेष आशाएँ थीं, पर दुर्भाग्यवश उनका असमय ही निधन हो गया।

रेडियो-नाटक के क्षेत्र में आकाशवाणी, राँची के तत्कालीन अधिकारी श्री सत्यप्रकाश 'किरण' ने विशेष रुचि प्रदर्शित की। उन्हीं के श्रम के कारण नागपुरी साहित्य को अनेक सफल नाटककार तथा अभिनेता प्राप्त हुए। अब तो आकाशवाणी राँची नागपुरी रेडियो-नाटकों के प्रसारण के प्रति उदासीनता दिखलाने लगी है।

(३) कहानियाँ

नागपुरी में प्रचलित लोक-कथाओं की संख्या अनेक हैं। अब तक नागपुरी लोक-कथाओं का संकलन एवं प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाया है। आकाशवाणी की स्थापना से लोक-कथाओं के संकलन में अनेक व्यक्तियों की रुचि जाग्रत हुई है।

आकाशवाणी, राँची केन्द्र के द्वारा अक्सर नागपुरी लोक-कथाएँ प्रसारित हुआ करती हैं। इन लोक-कथाओं के संग्रह-कर्त्ताओं में सर्व श्री पीटर शांति नवरंगी, भुवनेश्वर "अनुज", शिवशंकर राय, श्रवण कुमार गोस्वामी तथा सुश्री सीता कुमारी के नाम उल्लेखनीय हैं।

नागपुरी में मौलिक कहानियाँ भी इधर लिखी जाने लगी हैं, पर इस दिशा में आकाशवाणी राँची ने कोई विशेष कदम नहीं उठाया है, परन्तु इसकी स्थापना से कुछ ऐसे साहित्यानुरागी अवश्य सामने आए हैं, जिनकी रुचि लोक-कथाओं के संग्रह में है।

(४) निबन्ध

रेडियो के द्वारा प्रसारित होने वाले निबन्धों तथा वार्ताओं में विशेष अन्तर नहीं रह पाता, फिर भी निबन्ध के ऊपर अलग से विचार किया जाना समीचीन

होगा। नागपुरी में कुछ मौलिक निबन्ध और कुछ निबन्ध हिन्दी माध्यम से नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में आकाशवाणी राँची के द्वारा प्रसारित किए गए। इन दोनों प्रकार के निबन्धों से नागपुरी साहित्य की प्रगति को विशेष बल प्राप्त हुआ।

नागपुरी के मौलिक निबन्धकारों में सर्वश्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, पीटर शांति नवरंगी, राधाकृष्ण, सुशील कुमार, जगदीशनारायण सिंह "पवन", रघुमणि राय तथा लक्ष्मण सिंह आदि प्रमुख हैं।

सर्व श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, श्रवण कुमार गोस्वामी, विसेश्वर प्रसाद "केशरी" तथा बलदेव साहु आदि ने नागपुरी साहित्य के सम्बन्ध में विवेचनात्मक निबन्ध हिन्दी में प्रस्तुत किए।

उपर्युक्त विधाओं के अतिरिक्त नागपुरी लोक-गीतों का प्रसारण आकाशवाणी, राँची केन्द्र की एक विशिष्ट उपलब्धि है। पर्व-त्योहार तथा विशिष्ट अवसरों के अनुकूल नागपुरी कार्यक्रम आकाशवाणी, राँची के द्वारा निरन्तर प्रसारित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों का रसास्वादन नागपुरी-भाषी श्रोता बड़े चाव से करते हैं।

आकाशवाणी, राँची की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

२७ जुलाई १९५७ को आकाशवाणी, राँची की स्थापना हुई। उस समय "देहाती दुनिया" के संचालन का भार श्री जुलियस तीगा तथा श्री सत्यप्रकाश नारायण "किरण" के हाथों था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री राधाकृष्ण भी उस समय आकाशवाणी, राँची के एक विशिष्ट अधिकारी थे, जो स्वयं नागपुरी भाषा तथा साहित्य में गहरी पैठ रखते हैं। इन तीन व्यक्तियों ने 'देहाती दुनिया" नामक कार्यक्रम को विशेष प्रभावोत्पादक बनाने का सफल प्रयास किया। श्री सत्यप्रकाश नारायण "किरण" नवोदित प्रतिभाओं को ढूँढ़ निकालने में दक्ष थे, फलस्वरूप "देहाती दुनिया" के अन्तर्गत प्रसारित होने वाली तत्कालीन रचनाओं का स्तर पर्याप्त संतोषजनक तथा उन्नत रहा। श्री "किरण" का स्थानान्तरण अन्यत्र हो गया। श्री राधाकृष्ण ने आकाशवाणी को छोड़ दिया। इन व्यक्तियों के स्थान पर नये अधिकारी आते-जाते रहे हैं, पर "हमारी दुनिया" (भूतपूर्व "देहाती दुनिया") (विशेषतः नागपुरी) के कार्यक्रमों में प्रगति के लक्षण दिखाई नहीं पड़ते।

२७ जुलाई १९५७ से लेकर अब तक आकाशवाणी, राँची ने नागपुरी साहित्य के क्षेत्र में अनेक सफल प्रयोग किए। नागपुरी में "रेडियो-नाटक" का लेखन आकाशवाणी, राँची की एक अन्यतम देन है, जो अविस्मरणीय है। आकाशवाणी,

राँची के द्वारा प्रसारित धारावाहिक रेडियो-नाटकों को लोग आज भी वड़े आदर के साथ याद करते है।

आकाशवाणी, राँची ने नागपुरी को गद्य-लेखन के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाया। उसने नागपुरी साहित्य को अनेक सफल गद्यकार दिए। आकाशवाणी की स्थापना से नागपुरी साहित्य-जगत् में जागृति की एक लहर दौड़ गई।

आकाशवाणी, राँची की अपनी कुछ सीमाएँ भी रही हैं। आरम्भिक काल में "देहाती दुनिया" में नागपुरी कार्यक्रमों को अधिक समय दिया जाता था, परन्तु इधर "हमारी दुनिया" के अन्तर्गत, हो, उराँव, मुंडारी तथा संताली रचनाओं को भी समय दिया जाने लगा है, अतः नागपुरी को कम समय दिया जाना विलकुल स्वाभाविक है। अव "हमारी दुनिया" में नागपुरी रचनाओं को प्रत्येक महीने में लगभग दो सौ पचास मिनटों की अवधि प्रदान की जाती है। समय की इस सीमा के कारण नागपुरी साहित्य के प्रसारण में कमी हुई है। इसके साथ-साथ नागपुरी रचनाओं के स्तर में गिरावट भी आने लगी है। इसके लिए दोषी कौन है, यह कहना कठिन है। इन दिनों नागपुरी रचनाओं के स्तर में गिरावट की प्रवृत्ति वढ़ती ही जा रही है, जो आकाशवाणी के लिए भी शोचनीय है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि इन सीमाओं के होते हुए भी आकाशवाणी, राँची ने नागपुरी साहित्य की अमूल्य सेवाएँ की हैं। यहाँ आकाशवाणी की स्थापना न हुई होती तो शायद नागपुरी गद्य तथा पद्य की अनेक विधाओं का श्रीगणेश भी नही हो पाता। इस दृष्टि से नागपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास में आकाशवाणी के राँची केन्द्र ने जो उल्लेखनीय योगदान किया है वह कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

४

नागपुरी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

किसी भी भाषा तथा साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण हुआ करती है। इस दृष्टि से नागपुरी अभागिन ही मानी जाएगी, क्योंकि नागपुरी में आज भी ऐसी कोई पत्रिका नहीं, जिसके माध्यम से नागपुरी-भाषी अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकें। पर नागपुरी पूर्णतः अभागिन भी नहीं मानी जा सकती, क्योंकि इसके विकास में अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने महत्त्वपूर्ण योग दिया है। यहाँ ऐसी ही कुछ पत्र-पत्रिकाओं का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। इन पत्र-पत्रिकाओं को सुविधा के लिए दो वर्गों में रखा जा सकता है :—

(१) नागपुरी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ, तथा
(२) नागपुरी रचनाएँ प्रकाशित करने वाली पत्र-पत्रिकाएँ

(१) नागपुरी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ

(क) नागपुरी के प्रथम समाचार-पत्र का प्रकाशन ३ फरवरी १९४७ को हुआ। विवरण इस प्रकार है :—

(क) पत्र का नाम	आदिवासी
(ख) प्रकाशन-अवधि	हफ्तेवारी खबर-कागज
(ग) प्रकाशन-स्थल	राँची
(घ) संपादक	राधाकृष्ण
(ङ) प्रकाशक	दि पब्लिसीटी डिपार्टमेंट गवर्नमेंट ऑफ विहार
(च) मुद्रक	के०सी० त्रिवेदी, सुदर्शन प्रेस, राँची
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	फुलस्केप आठ पृष्ठ
(ज) वार्षिक शुल्क	१॥)

(झ) एंक प्रति ०
(ञ) लिपि देवनागरी

"आदिवासी" नागपुरी में प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र है, पर नागपुरी में इसका प्रकाशन अधिक दिनों तक संभव नहीं हो सका। इसके प्रारंभिक तीन अंक पूर्णतः नागपुरी में प्रकाशित किए गए। चौथे तथा पाँचवें अंक को संयुक्त कर 'जंगल-अंक" प्रकाशित किया गया। इस अंक से ही नागपुरी को हटाकर "आदिवासी" का प्रकाशन हिन्दी में किया जाने लग गया। इस सम्बन्ध में इसके भूतपूर्व सम्पादक श्री राधाकृष्ण से यह जानकारी प्राप्त हुई कि यह परिवर्त्तन राजनीतिक दवाव के कारण करना पड़ा था।

"आदिवासी" के प्रारंभिक तीन अंकों में कविता, लेख, संपादकीय, समाचार, टिप्पणी, चिट्ठी, बुझौवल तथा लोक-कथाओं का प्रकाशन किया गया। एक स्थानीय समाचार-पत्र में जो विशेपताएँ होनी चाहिए, वे सारी विशेषताएँ इन अंकों में सम्मिलित थीं। सरकारी समाचार-पत्र होते हुए भी पाठकों के पत्रों का प्रकाशन "चिट्ठी" के अन्तर्गत इस पत्र की एक विशिष्टता थी। सम्पादन तथा मुद्रण की दृष्टि से भी ये अंक अत्यन्त स्वच्छ एवं आकर्षक थे।

"आदिवासी" के प्रथम अंक में शिलानंद ने लिखा है—"हमरे वाबु राधाकिसन कर धइन मानत ही कि उनकर जतन से अब ए दानी (सदानी)[1] भाखाओ में एकठो खवर कागज निकसेक लागलक।.........हम आसरा करतही कि छोटानागपुर कर सउवे केउ इ पहिला सदानी खवर-कागज के देइख के खुश होवएँ अउर इके घर-घर पसराएक कर जतन करवएँ। हम सोचीला कि इ खवर-कागज छोटानागपुर कर सउब जाइत-पाइँत कर अदमीमन के एक करी, सउब में पेरेम कर सम्बन्ध जोरी, सउव के उनइत करेक कर डहर बताइ और हमर देस के ऊँच उठाइ।"[2] वास्तव में "आदिवासी" के प्रकाशन का यहाँ के लोगों ने समुचित स्वागत किया था। श्री शिलानंद ने अपने निबंध में "आदिवासी" से जो आशाएँ की थीं, वे निराधार नहीं थीं, पर राजनीतिक-कुचक्रों के कारण ऐसा नहीं हो सका। यदि "आदिवासी" का प्रकाशन आज भी नागपुरी में होता रहता तो शायद नागपुरी का साहित्य और भी विकसित तथा व्यापक होता।

"आदिवासी" का प्रकाशन आज भी हो रहा है। यह सत्य है कि "आदिवासी" अब एक हिन्दी-साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, पर इसके भूतपूर्व संपादक श्री राधाकृष्ण तथा कार्यकारी-संपादक, श्री सुशीलकुमार लाल सदैव इसके लिए प्रयत्नशील रहे हैं कि "आदिवासी" में नागपुरी रचनाओं को निरन्तर सम्मिलित

१. "ए दानी" यह मुद्रण की भूल है इसे सदानी होना चाहिए।
२. "सदानी भाखा" से, आदिवासी ३ फरवरी १९४७, पृष्ठ २, कालम १।

किया जाय। छोटानागपुर में प्रचलित जितनी भी भाषाएँ या वोलियाँ हैं उनकी रचनाओं को "आदिवासी" में सदा से स्थान मिलता रहा है। १९४७ से लेकर अब तक अनेक नागपुरी कवियों, लेखकों, निबन्धकारों, कहानीकारों, नाटककारों तथा अनुसंधाताओं को प्रकाश में लाने का श्रेय "आदिवासी" को है। एक प्रकार से नागपुरी-भाषी लोगों के लिए "आदिवासी" ही एकमात्र ऐसा मंच है, जहाँ से वे कुछ बोल सकते हैं। परन्तु, सरकारी साप्ताहिक होने के कारण "आदिवासी" की सीमाएँ किसी से छिपी नहीं है। राजकीय अनुशासन का पालन करते हुए भी इस पत्र ने नागपुरी के विकास में जो योगदान किया है, वह अविस्मरणीय ही नहीं, ऐतिहासिक भी है।

(ख) नागपुरी में दूसरे पत्र का प्रकाशन अप्रैल १९६१ को हुआ। विवरण इस प्रकार है—

(क) पत्र का नाम	नागपुरी
(ख) प्रकाशन-अवधि	मासिक
(ग) प्रकाश-स्थल	राँची
(घ) सम्पादक	योगेन्द्रनाथ तिवारी
(ङ) प्रकाशक	योगेन्द्रनाथ तिवारी, नागपुरी भाषा परिषद्, राँची।
(च) मुद्रक	सरस्वती प्रेस, कोर्ट कम्पाउण्ड, राँची।
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	डबल क्राउन अठपेजी (आकार) सोलह (पृष्ठ संख्या)
(ज) वार्षिक-शुल्क	तीन रुपये
(झ) एक प्रति	२५ नये पैसे
(ञ) लिपि	देवनागरी

नागपुरी भाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक "नागपुरी" का ऐतिहासिक महत्त्व है। इसके प्रकाशन से नागपुरी साहित्य में उत्साह की नई लहर दौड़ गई थी और लोगों को यह विश्वास हो चला था कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास को एक नई दिशा प्राप्त होकर रहेगी। परन्तु, दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हो सका। मुश्किल से नागपुरी के चार ही अंक प्रकाशित हो सके—अप्रैल अंक, जून अंक (यह मई तथा जून का सम्मिलित अंक था) जुलाई अंक तथा अगस्त अंक। नागपुरी का प्रकाशन वंद हो जाएगा इसका आभास मई-जून अंक में प्रकाशित नागपुरी भाषा परिषद् के मुख्य मंत्री श्री प्रफुल्लचंद्र राय के "इने उने केर बात, आउर'अपनइने से" शीर्षक निवेदन से मिल गया था—

"ढेइर मेहनत कोसिस करल पर अपनइन केर ई जे महिनवारी कागज "नागपुरी" निकलथे एखन पक्का निकलल नइ कहेक चाही। इकर में कएठो बात

खास हय। पहिले, इके महिनवारी निकालेक ले एक न (एक)[३] आदमी के खटेक चाही। से केउ मर्दा सेके एकन कुछ नइ मिली। मगर कागज के महिनवारी निकालेहेक होई। कौन-कौन बात कागज में छपी सेकर देखेक, उके ठीक करेक आउर आपन कट से आपन विचार राखेक काम उनकर हेके। दोसर, कागज के महिनवारी निकालेले कागज केर दाम आउर छपाई देवेक चाही। महीना पाछे करीब डेढ़ सव रुपइया केर हिसाब है। महिनवारी एतना रुपइया नइ मेल से बराबर कागज निकलना भारी बात हेके। रुपइया के तो जोगाड़ करेहेक होई। तीसर, लाइन लेउ, आदमी भी मिल गेलक, रुपइया केर जोगाड़ भी होय गेलक तेउ कागज नइ निकली। कागज भीतरे जे छपाएला सेकर लिखवइया चाही। से लिखवइया सनेकेर भारी जरूरत है। चउथा, कागज केर छपाइहें नइ होई। इकर बिक्री ले परचार चाही। ई काम केर करवइया सहर आउर देहात में होवेहेक चाही तबे कागज बढ़िया से चली। पाँचवाँ नागपुरी भाखा बोलवइया-मन केर मन में आपन बोली, साहित्य आउर शब्द पर गरब करेक चाही आउर मन में कखनो इके हीनेक नइ चाही।

जब अपनेमन सब केउ इ पाँचों चीज के अपनावैं तो हमरे केर नागपुरी बोली हँसे लागी। इकर हँसी खुसी के कतना जे आदमी उकर कटे खिचावैं सेकर कोनो हिसाब नखे। इकर में हमरेइन-मन केर मान आउर सान है।"[४]

जो आशंका थी वह सच निकली। अगस्त १९६१ के अंक के पश्चात् नागपुरी का प्रकाशन बन्द हो गया।

"नागपुरी" के चार अंकों में सर्वश्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, शिवावतार चौधरी, छुन्नूलाल अम्बिका प्रसाद नाथ साहदेव, प्रफुल्लकुमार राय, रामेश्वर राम, हरिनन्दन राम, विश्वेश्वर ओझा, सुरेखा कुमारी, छछन्दल, विकल, जगनिवास नारायण तिवारी, महादेव उरांव, नईमुद्दीन मिरदाहा, विसेश्वर प्रसाद केसरी, भवभूति मिश्र, देवराम तथा विनय कुमार तिवारी आदि समसामयिक लेखकों के अलावा पुराने कवियों यथा धनीराम तथा हनुमानसिंह आदि की रचनायें प्रकाशित हुई। इन सभी अंकों में गद्य की प्रधानता मिलती है। सम्पादक के द्वारा लिखे गए "नागपुरी बोली" (अप्रैल. १९६१), "हमरे केर बोली" (जून १९६१), "नागपुर में नागपुरी" (जुलाई १९६१) तथा "आपन भाषाक बात" (अगस्त १९६१) शीर्षक सम्पादकीय यह प्रमाणित करते हैं कि नागपुरी में उच्चकोटि का गद्य भी लिखा जा सकता है। मौलिक कहानी-लेखन के क्षेत्र में श्री प्रफुल्ल कुमार राय[५], श्री हरिनन्द राम[६] तथा

३. (एक) मुद्रण में छूट गया है।
४. आवरण-पृष्ठ—३ से।
५. दिन बातक बात (अप्रैल १९६१) "अबसरे भी मिले दुसे···आउर खिलखिलो" (जून १९६१)
६. नाटने बाचलव जिया मार (जून १९६१)।

श्री विकल[7] की कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। नागपुरी कविताओं पर श्री भवभूति मिश्र[8] तथा श्री विसेश्वर प्रसाद केशरी[9] के द्वारा नागपुरी में प्रस्तुत विवेचनों से यह आशा बँधती है कि नागपुरी में आलोचना के लिए शब्दावली तथा अभिव्यक्ति की कोई विवशता नहीं।

सन् १९६४ में "नागपुरी भाषा-परिषद्" राँची के द्वारा एक चार पृष्ठों का प्रचार-पत्र निकाला गया, जिसमें "नागपुरी" (महिनवारी कागज) के पुनः प्रकाशन का उल्लेख है। इससे ये विवरण प्राप्त होते हैं—

प्रधान सम्पादक	पं० योगेन्द्रनाथ तिवारी
महिनवारी चंदा	५० कचिया
एक बरिसकर चंदा	५ रुपया
मनिआडर भेजेक पता	मनीजर नागपुरी; प्रगति प्रेस; रातू रोड, राँची।

इस प्रचार-पत्र में अपनी भाषा के महत्त्व पर पूरा-पूरा प्रकाश डाला गया है और आशा की गई है कि 'नगपुरिया संसकिरती के जीआएक जोगाएक जगाएक लागिन" लोग बड़ी संख्या में "नागपुरी" के ग्राहक बनेंगे। वार्षिक ग्राहकों को यहाँ तक छूट दी गई थी कि यदि वे धान कटने के बाद चंदा देना चाहें तो ऐसा भी कर सकते हैं[10] पर शायद पाठकों के ऊपर इस छूट का भी कोई अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ सका। इस बीच "नागपुरी" के पुनःप्रकाशन की पूरी योजना बनाई जा चुकी थी और पत्र का एक अंक प्रेस में प्रकाशनार्थ दिया भी जा चुका था। इस बार डबल-क्राउन १६ पेजी में "नागपुरी" का प्रकाशन किया जाने वाला था। इस प्रकाश्य अंक के मुझे सोलह मुद्रित पृष्ठ प्राप्त हुए हैं, जिनमें सर्व श्री राधाकृष्ण (डाइन-कर पैरी), भुवनेश्वर "अनुज" (कंचन नाथ) तथा नईम उद्दीन मिरदाहा (गीत किसानु) की रचनाएँ सम्मिलित हैं। इस प्रकार नागपुरी भाषा परिषद् की यह योजना भी सफल नहीं हो सकी, जबकि परिषद् को श्री सुशील कुमार बागे (तत्कालीन मंत्री, विहार सरकार) तथा श्री शिवप्रसाद साहू (लोहरदगा के प्रसिद्ध व्यवसायी) का संरक्षण प्राप्त था।

"नागपुरी" का पुन. प्रकाशन अब तक संभव नहीं हो सका है। आज भी लोग इस पत्र के पुराने अंकों की चर्चा करते हैं और यह अनुभव करते हैं कि "नागपुरी" का पुनः प्रकाशन होना चाहिए। श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी ने वृद्धावस्था में

७. अब भेली लेदरा पिधइया (जुलाई तथा अगस्त १९६१)।

८. नागपुरी लोक गीत में शाक्त भावना (हिन्दी में अनूदित जुलाई तथा अगस्त १९६१)।

९. अम्बा मजरे मधु मातलइ रे (जुलाई १९६१)।

१०. जें भाई धान कटेक बाद रुपया भेंजबैं से चिठी से खुलासा लिख देबैं तबले उनकरठन कागज भेंजेक सुरु होए जाई। मुदा उनके धान कटने हें रुपया तुरत भेइज देवेक होई।

भी "नागपुरी" का प्रकाशन कर नागपुरी तथा उसके साहित्य का विकास-पथ प्रशस्त किया है। वह आज भी "नागपुरी" को अपनी सेवाएँ देने को उद्यत हैं। परन्तु इस दिशा में नागपुरी भाषा परिषद् की निष्क्रियता ही कदाचित् सबसे अधिक बाधक है। यदि भोजपुरी तथा मगही में पत्रिकाओं का अनवरत प्रकाशन संभव है, तो कोई कारण नहीं कि "नागपुरी" के एक मासिक-पत्र का पोषण नागपुरी-भाषी जनता न कर सके।

(ग) नागपुरी में तीसरे पत्र का प्रकाशन अक्तूबर १९६६ को हुआ। विवरण इस प्रकार है—

(क)	पत्र का नाम	नागपुरिया समाचार
(ख)	प्रकाशन-अवधि	मासिक
(ग)	प्रकाशन-स्थल	राँची
(घ)	प्रधान सम्पादक[११]	लक्ष्मीनारायण तिवारी
	सम्पादक	रूपा और ज्वाला
(ङ)	प्रकाशक	रूपा और ज्वाला
(च)	मुद्रक	बागला प्रेस, राँची
(छ)	पृष्ठ-संख्या तथा आकार	पृष्ठ-संख्या चार आकार-डबल क्राउन चारपेजी
(ज)	वार्षिक शुल्क	१-२० पैसे
(झ)	एक प्रति	१० पैसे
(ञ)	लिपि	देवनागरी

नागपुरी के जीवन में "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन एक संयोग ही माना जाएगा, क्योंकि इसके पहले "नागपुरी" के प्रकाशन की सारी तैयारियाँ धरी-की-धरी रह गई थीं। यह पत्र कुछ लोगों के समक्ष आकस्मिक रूप से प्रस्तुत हुआ और देखते-ही-देखते लुप्त भी हो गया। "नागपुरिया समाचार" चार पृष्ठों का समाचार मासिक था। एक माह के वासी समाचारों को पढ़ने के लिए शायद कोई भी प्रस्तुत न हो, संभवतः इसी कारण समाचार-पत्र के रूप में इसे लोकप्रियता नहीं मिल सकी। इसके प्रकाशन के उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रायः सभी अंकों में यह कहा गया है—

> "नगपुरिया बोली के आगे बढ़ावे के ख्याल से ई समाचार पत्र निकालल जात है। जे के भी ई समाचार पत्र में समाचार या

११. इस पत्र के सभी अंको मे लक्ष्मीनारायण तिवारी (प्र० स०) छपा है, इससें यह भ्रम भी होता है लक्ष्मीनारायण तिवारी प्रबन्ध सम्पादक रहें हों, पर वह प्रधान सम्पादक थे।

कोई कहानी गीत भेजेक होय, खुशी से भेइज सकीला। समाचार पत्र छपेक पन्द्रह दिन पहिले खबैर पहुँच जायक चाही। नीचे लिखल मुताविक पता में भेजव—

सम्पादक

नागपुरिया समाचार

वागला प्रेस, मेन रोड, राँची।"

"नागपुरिया समाचार" के सभी अंकों को देखने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि "नागपुरी" को आगे बढ़ाने (जो इसका घोषित उद्देश्य है) के बहाने इससे कुछ निश्चित उद्देश्यों को पूरा करना था, जो इस प्रकार हैं—

(क) आनन्द मार्ग का प्रचार करना, तथा

(ख) चुनावों में नागपुरिया समाज के नाम पर "प्राउटिस्ट ब्लॉक" के उम्मीदवारों के लिए जनमत तैयार करना

इस पत्र का प्रकाशन १९६७ के आम-चुनावों के कुछ माह पूर्व किया गया था, इससे भी यह स्पष्ट है कि इसके प्रकाशन का उद्देश्य राजनीतिक था। फरवरी १९६७ के अंक के प्रथम पृष्ठ में प्रउत (प्राउटिस्ट ब्लॉक) के सम्बन्ध में प्रकाशित किया गया है—

["प्रउत"]

मानव समाज में जे जाईत पाईत कर भेद-भाव है ऊ बनावटी है। सव भगवान कर छऊवा हकें। ई दुनिया में सबकर बराबईर अधिकार है। लेकिन आई-भ काइल्ह समाज के दुभाग में बाइट सकत ही। एक नैतिक और दोसर अनैतिक। ब्राह्मण, क्षत्रिय बनिया भले ही अनैतिक दल के आदमी कहल जायल। ईकर से बाँचेक उपाय एहे है कि सब कोई मिल जुइल के अनैतिक दल के आदमी मन कर विरुद्ध आवाज उठायक चाही। दुनिया कर कल्याण खातिर महामानव श्री पी० आर० सरकार केर बनावल 'प्रउत" में मदद करेक चाही। "प्रउत" समाजवाद केर एक नावा विचार हेके जे नैतिकता आउर आध्यात्मिकता में टिकल है। इकर पाँच तरह के विचार है।

१—समाज के कहल बेगर केकरो धन दौलत जमा करेक हक नई मिलेक चाही।

२—दुनियाँ के सब चीजकर समाज में बराबईर बटवारा होवे के चाही।

३—दुनियाँ के सब आदमी कर जेकर में जैसन गुण है सेकर गुण कर पूरा-पूरी उपयोग होवेक चाही।

४—दुनियाँ में ऊँच-नीच, धनी-गरीब के बीच में जे भेद-भाव है सेकर में मेल-मिलाप होवेक चाही ।

५—उपयोग के तरीका, देश, समय, आउर पात्र के मोताबिक बदलते रहेक चाही जेकर से कि हमेशा उन्नति करते रही ।"

इसी अंक के पृष्ठ—३ पर एक चुनाव-सम्बन्धी अपील भी छपी है, जो ध्यान देने योग्य है :—

"अपील

चुनाव पहुँचलक है : सतर्क होय आऊ । राउर केर "मत" कर बहुत बड़े कीमत है । ओकर से कोउ चुनाव जीत सकेला आऊर केउ हाईर भी सकेला ।

एहे जे इकर उचित प्रयोग करु । सतर्क रहु कि राऊर कर "मत" अयोग्य आऊर समाज विरोधी आदमीन कर पक्ष में न जाय ।

प्रगतिशील नागपुरिया समाज राऊर से अपील करेला कि राऊर आपन "मत" ओहे आदमीन के दोऊ जे नैतिक, साधक समाज-सेवी आऊर त्याग भावना से परिपूर्ण है ।

मंत्री

नागपुरिया समाज, राँची ।"

इस अपील में यह ध्यान देने योग्य है "राऊर आपन "मत" ओहे आदमीमन के देऊ जे नैतिक, साधक, समाज सेवी आऊर त्याग भावना से परिपूर्ण है ।" इस कसौटी पर आनन्द-मार्ग का प्रत्याशी ही खरा उतर सकता है । स्पष्ट है कि अवान्तर रूप से विशेष प्रकार के उम्मीदवार के पक्ष में ही यह अपील जारी की गई थी ।

"नागपुरिया समाचार" में सामान्यत: समाचार ही प्रकाशित होते थे । इसके विभिन्न अंकों में ऐसी कोई भी रचना नहीं मिली जो साहित्यिक दृष्टि से उल्लेखनीय हो । वास्तविकता तो यह है कि इस पत्र ने नागपुरी साहित्यकारों का सहयोग प्राप्त ही नहीं किया था और अनेक नागपुरी साहित्यकारों को यह आज भी पता नहीं है कि "नागपुरिया समाचार" का कभी प्रकाशन भी हुआ था ।

ईसाई मिशनरियों ने धर्म-प्रचार के लिए नागपुरी का सहारा लिया था, इसी प्रकार ऐसा लगता है "आनन्द-मार्ग" के प्रचार के लिए ही "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन किया गया था । ऐसी अवस्था में नागपुरी भाषा तथा साहित्य को इससे कुछ लाभ न हो सका, तो इसे अस्वाभाविक नहीं माना जाना चाहिए । परन्तु, इनमे यह तथ्य तो लोगों के सामने आता ही है कि इस क्षेत्र के लोगों को समझाने-बुझाने का "नागपुरी" सर्वाधिक सशक्त माध्यम है ।

अप्रैल-मई १९६७ के संयुक्ताक के पश्चात् "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन बन्द हो गया। कई महीनो के उपरान्त इसका एक अक दिखाई पडा जिस-पर अक १६, मंगलवार अप्रैल १९६८ मुद्रित है। यह अक नई सज्जा के अतिरिक्त निम्नलिखित परिवर्त्तनो के साथ पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुआ .—

प्रधान सम्पादक—लाल अरविन्द, ज्वाला।
प्रकाशक —प्रोग्रेसिव फेडरेशन आफ इडिया, राँची।
शेष विवरण यथावत्।

इस अंक के पश्चात् "नागपुरिया समाचार" का प्रकाशन अगस्त १९६८ तक होता रहा और इसके बाद इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इस प्रकार तीसरे नागपुरी पत्र का प्रकाशन भी कुछ अकों के बाद ठप्प हो गया जबकि जून-जुलाई के अक मे यह विज्ञापन प्रकाशित किया गया कि अब इस पत्र का पाक्षिक प्रकाशन होगा। आगे चलकर दिनाक २२ अक्टूबर १९८९ मे 'नागपुरिया समाचार" को दैनिक पत्र बना दिया गया, पर कुछ ही अको क बाद इसका प्रकाशन भी बन्द हो गया। यह पत्र डबल-क्राउन ४ पेजी आकार मे प्रकाशित होता था और इसमे चार पृष्ठ रहा करते थे। इसके प्रधान सम्पादक आचार्य चित्तेशानन्द अवधूत थे। मेरे जानते बिहार की किसी क्षेत्रीय भाषा मे प्रकाशित होनेवाला यह सर्वप्रथम दैनिक था। इस दृष्टि से 'नागपुरिया समाचार' का ऐतिहासिक महत्त्व है।

(२) नागपुरी रचनाएँ प्रकाशित करने वाली पत्र-पत्रिकाएँ

कुछ ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ भी है जिनका प्रकाशन नागपुरी मे तो नही हुआ, पर वे यदा-कदा नागपुरी रचनाएँ प्रकाशित करती रही है। यहाँ ऐसी ही पत्र-पत्रिकाओ का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। यहाँ यह उल्लेख कर देना उचित होगा कि इन पत्रिकाओ के सभी अक उपलब्ध नही होते है। इन पत्र-पत्रिकाओ के सम्पादको या प्रकाशको से सम्पर्क स्थापित करने पर बडी निराशा हुई, क्योकि प्राय: सबने इन्हे कूडा समझकर नष्ट कर दिया। इनके पास कार्यालय-प्रति तथा प्रेस-प्रति भी अब सुरक्षित नहीं।

(क) झारखण्ड

(क) पत्र का नाम	झारखण्ड
(ख) प्रकाशन-अवधि	मासिक पत्र
(ग) प्रकाशन-स्थल	गुमला (राँची)
(घ) सम्पादक	ईश्वरी प्रसाद सिंह
(ङ) प्रकाशक	साहित्य आश्रम, गुमला, राँची

(च) मुद्रक	सर्चलाइट् प्रेस, पटना
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	पृष्ठ-संख्या—सोलह आकार—डवल काउन आठ पेजी
(ज) वार्षिक मूल्य	१॥)
(झ) एक प्रति	=) ॥
(ञ) लिपि	देवनागरी

"झारखण्ड" (मासिक) का पहला अंक जनवरी १९३८ में प्रकाशित हुआ और वर्ष के अन्त तक इसका प्रकाशन होता रहा। बारह अंकों के पश्चात् इसका प्रकाशन बन्द हो गया। सन् १९३८ में श्री ईश्वरी प्रसाद सिंह ने गुमला से "झारखण्ड" प्रकाशित कर अदम्य उत्साह का परिचय दिया था। "झारखण्ड" के नीचे "हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचारक" मुद्रित रहा करता था, परन्तु हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के प्रचार के अलावा" झारखण्ड" में यदा-कदा नागपुरी गीत भी प्रकाशित किए जाते थे, जिनमें "बसन्त की बहार" (गजेन्द्र सिंह)[१२] श्री गणेश वन्दना (गौरी नाथ पाठक),[१३] तथा गीत (ग्रामीण)[१४] आदि उल्लेख योग्य हैं। इस पत्र के किसी भी अंक में नागपुरी गद्य की कोई रचना नहीं मिली, पर श्री द्वारका प्रसाद के एक लेख का शीर्षक ही नागपुरी में है—"हमरे मन हिन्दी नी जानी"[१५] जिसमें कई स्थानों पर नागपुरी गद्य का प्रयोग किया गया है। बानगी के लिए कुछ पंक्तियाँ उद्धरित की जाती हैं :—

> "मुरुख सफा सफा कपड़ा पिन्ह रहे और उकर हाथ में गोटेक लउरी रहे जेकर मे मइढ़ रहे। उके देखके ही सब बुझ्झ गेलैं कि येही सार नासकटवा हेके। फिर तो लावा हरो, अउर ईसन ईसन लाठी बजरलक कि उसार दाँत गिजिड़ देलक।"

"मासिक झारखण्ड" ने हिन्दी के साथ-साथ नागपुरी की भी जो सेवा की है, वह बहुमूल्य है। इस पत्र की महत्ता इसमें भी है कि इसने पहली बार छोटा-नागपुर की पथरीली भूमि पर साहित्य-पताका फहराने की चेष्टा की थी, संभवतः इन्हीं विशेषताओं के कारण यह पत्र बिहार सरकार के द्वारा स्कूलों, कॉलिजों तथा होस्टलों के लिए स्वीकृत था।

१२. फरवरी १९३८, पृष्ठ १।
१३. फरवरी १९३८, पृष्ठ ९।
१४. मार्च १९३८, पृष्ठ १।
१५. कार्त्तिक, १९९४ वि० पृष्ठ ११।

(ख) आदिवासी सकम

(क) पत्र का नाम	आदिवासी सकम (रोमन में मुद्रित)
(ख) प्रकाशन-अवधि	साप्ताहिक
(ग) प्रकाशन-स्थल	जमशेदपुर
(घ) सम्पादक	जयपाल सिंह
(ङ) प्रकाशक	जयपाल सिंह, फाउन्ड्री हाउस, टाटानगर
(च) मुद्रक	सच्चिदानन्द दत्त जमशेदपुर प्रिंटिंग वर्क्स, लिमिटेड ११ काली माटी रोड, साकची, जमशेदपुर
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	पृष्ठ-संख्या-आठ आकार-डवल-क्राउन चार पेजी
(ज) वार्षिक शुल्क	०
(झ) एक प्रति	एक आना
(ञ) लिपि	देवनागरी, रोमन तथा बंगला

"आदिवासी सकम" एक बहुभाषी साप्ताहिक समाचार-पत्र था जो प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित हुआ करता था। इसका पहला अंक ६ जुलाई १९४० को प्रकाशित हुआ था। श्री इग्नेस कुजूर ने अपनी पुस्तक "झारखण्ड दो मुहाने पर" (पृष्ठ—१४०) में बताया है कि इस पत्र का प्रकाशन मार्च १९४१ तक हुआ था। इस पत्र के अंक कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। इस पत्र के कुछ अंक मुझे श्री जुलियस तीगा ने दिखाने की कृपा की।

"आदिवासी सकम" के प्रत्येक अंक में हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा बंगला की रचनाएँ सम्मिलित हुआ करती थीं। कभी-कभी नागपुरी, मुंडारी तथा उराँव भाषा की रचनाएँ भी प्रकाशित हुआ करती थीं। प्राप्त सूचनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि "आदिबासी सकम" छोटानागपुर का एक लोकप्रिय पत्र था, जिसे यहाँ के पुराने लोग अभी भी "सकम" के नाम से याद करते है।

"आदिबासी सकम" के प्रायः सभी अंकों में कुछ समाचार तथा टिप्पणियों का प्रकाशन नागपुरी में किया जाता था। नीचे ऐसी ही एक टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है :—

"लड़ाई में आदिबासी मनक हाथ।

एखन विलायत में जोर लड़ाई चलाथे। दुनिया के दुश्मन हिटलर गोली और आग से वे दया-मया छौवा, बुढ़ा जनाना मनकेर नाश कराथे। लड़ाई केर सूरत एसन अहे कि चंद रोज में हमरदुरा में लड़ाई आय जाई। लड़ाई लगिन हमर

आदिवासीमन वहुत जोर कराथैं कि दुश्मन हैर जाओक। आदिवासी मन कारखाना में जोर से काम कराथैं जे में कि सरकार के वेसी हथियार मिलोक। आदिवासीमन लड़ाई में भी जायले तैयार अहैं। सरकार केर हुकुम केर एकला देरी है। आदिवासी-मन लड़ाई ठांव में काम करके ले भी जायले तैयार अहैं। अफसोस एतने अहै कि आदिवासी मनके अपन पूरा काम करैक ले सरकार दुरा नी खोईल अहे। रुपैया आदिवासी मन ठन नखे। ऊ मन गरीब आदमी हिकैं। मदद तन, मन और धन तीन रकम कर होवेला। आदिवासी मन-तन और मन से मदद देथैं और देवेले आगे भी तैयार अहैं।

ई लड़ाई केर बड़ा २ नतीजा होई। कानून में फेरफार होई। से ले सब कोई के जागले रहना चाही। जागना चाही केवल मोका देखे ले नहीं परन्तु सच्चा काम करेक लगिन। दुसर मन के देखीला कि ई चीज मिली ऊ चीज मिली होले सरकार के मदद देव कहैंना। ई गलत वात सरकार से हीके। जय और क्षय केर साथ में हिन्दुस्तान में सोवकर जय और क्षय अहे।"[१६]

"आदिवासी सकम" के प्राय: प्रत्येक अंक में "उ दिनक वतिया" नामक एक स्तम्भ प्रकाशित होता था, जिसमें व्यंग्यात्मक-पद्य का प्रकाशन किया जाता था यथा—

"आदिवासी बनाम विहारी।
दुयो गेलैं कच्हैरी,
अरदली रहे मड़वारी।
हाकिम भेलैं अनारी,
झगड़ा कलवा बिनारी।
अलावे तियन तरकारी,
गोवाह भेलैं घर-वारी, दुयो मांय छौवारी।
फैसला प्रान्त बटवारी ॥"

जे० तीगा[१७]

"आदिवासी सकम" झारखण्ड पार्टी का समाचार-पत्र था, फलतः इसमें प्रकाशित अधिकांश रचनाएँ राजनीति से प्रेरित हुआ करती थीं। मौलिक रचनाएँ किसी भी भाषा में देखने में नहीं आई। नागपुरी के साथ भी यही बात थी। फिर भी श्री जयपाल सिंह ने अपने पत्र में नागपुरी को स्थान देकर नागपुरी की जो सेवा की है, वह महत्त्वपूर्ण है। यों तो वह यह मानते ही थे कि यदि झारखण्ड प्रान्त का कभी निर्माण हो सका, तो यहाँ की सम्पर्क-भाषा नागपुरी ही बनाई जाने योग्य है।

१६. आदिवासी सकम, १४ सितम्बर, १९४०, पृष्ठ ५।
१७. आदिवासी सकम, २७ जुलाई १९४०।

(ग) अबुआ झारखण्ड

(क) पत्र का नाम	अबुआ झारखण्ड
(ख) प्रकाशन-अवधि	साप्ताहिक
(ग) प्रकाशन-स्थल	राँची
(घ) सम्पादक	इग्नेस कुजूर
(ङ) प्रकाशक	इग्नेस कुजूर
(च) मुद्रक	जी० ई० एल० चर्च प्रेस, राँची
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	पृष्ठ-संख्या—छः। आकार डिमाई चार पेजी
(ज) वार्षिक शुल्क	६॥)
(झ) एक प्रति	दो आने
(ञ) लिपि	देवनागरी

साप्ताहिक "अबुआ झारखंड" का प्रकाशन १४ दिसम्बर १९४७ को प्रारंभ हुआ, जो कई वर्षों तक अनवरत रूप से प्रकाशित होता रहा। इस सम्बन्ध में इसके तत्कालीन सम्पादक श्री इग्नेस कुजूर का कथन है—"इस साप्ताहिक का सम्पादक और प्रकाशक मैं सात वर्षों तक था। १९५० में मुझे बिहार विधानसभा में एम० एल० ए० के लिए झारखण्ड पार्टी की ओर से खड़ा किया गया। श्री इग्नेस बेक इस साप्ताहिक के वर्तमान सम्पादक हैं।"[१८] इससे स्पष्ट है कि "अबुआ झारखण्ड" का सम्पादन श्री इग्नेस कुजूर तथा श्री इग्नेस बेक दोनों व्यक्तियों ने क्रमशः किया था। श्री बेक के देहावसान हो जाने के कारण "अबुआ झारखण्ड" का प्रकाशन बंद हो गया है।

श्री इग्नेस कुजूर द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखंड" के प्रायः सभी अंकों में "दोना-दोनी" नामक एक स्तम्भ प्रकाशित किया जाता था, जो नागपुरी में हुआ करता था। इस स्तम्भ में "टुटू" द्वारा सामयिक समस्याओं पर व्यंग्य प्रस्तुत किया जाता था। इस स्तम्भ के अन्तर्गत जो व्यंग्यात्मक रचनाएं प्रकाशित हुई हैं, वे काफी पैनी और शिष्ट हैं। विभिन्न समस्याओं पर चोट करने की प्रणाली लेखक की मौलिकता की परिचायक है। नागपुरी में भी इतने तीखे व्यंग्य लिखे जा सकते हैं—यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है। इस स्तम्भ को प्रकाशित कर श्री इग्नेस कुजूर तथा टुटू ने नागपुरी साहित्य में व्यंग्यात्मक रचनाओं की जो नींव डाली है, वह पर्याप्त पुष्ट है। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है :—

'तकली सिखाई'

हमर सरकार केर दोहाई कि इहाँ-उहाँ सगरो "वेसिक-शिक्षा" केर स्कूल

१८. इग्नेस कुजूर, झारखण्ड दो मुहाने पर, पृष्ठ—१४०-१४१।

जारी कैर देलक। शिक्षा केर अन्त में आसरा करल जायला कि हमर जवान मन उद्योग-धंधा कैरके अपने जीवन में कहियो गोलैंची कर फूल रोपेक पारबैं। एहे निशान के पहुँचते लड़का-लड़की अपन जिम्मेवारी समैझ जाबैं।

पर आगे शिक्षा लागीन तो मोंय सरकार के एहे सलाह देबों कि अपन "बजट" से हरेक कालेज केर थियेटर होल में एक ठो कुल्हू और एक काना बरद केर व्यवस्था करदैं कि सिखाई और कताई से फुरसत पायके पेराई भी सीखेख पारबैं। और ठीक डिग्री लेवेक पहिले उम्मीदवारमन एक ठो "तेल मालीस" केर कोर्स पास करेक पारबै। इकर से लक्ष्य है कि पीछे केर जिन्दगी में नहीं तो कालेज से ठीक निकलेक खने स्टूडेन्ट के काम आय सकेला—नौकरी के खोज में।

मोर काका मोर से सहमत है कि भैसचानसेलर साहेब ठीन एक ठो दरखास्त पेश करल जाय के कम-से-कम झारखंड में बी० ए० डिग्री के बदले टी० एम० (तेल मालीस) रखल जाय। कारण बिहार केर ई बिभाग में ई कोशल केर बहुत थोड़ा प्रचार आहे।"[१९]

सन् १९४७ के उपरांत विद्यालयों में तकली चलाने की शिक्षा देना कई वर्षो तक अनिवार्य था। इसकी अनुपयोगिता तथा टी० एम० (तेल मालिश) की उपयोगिता पर "ढुठू" ने जो व्यंग्य किया है, वह ध्यान देने योग्य है। ऐसे ही चुभते हुए व्यंग्य का एक नमूना और देखिए—

"ई जनता सरकार केर रैज हेके :—

जहाँ कि बाघ और बकरी एके घाट पानी पियाथैं तो खाली सिह और बाघे मन के रैज शासन केर बागडोर काहे देवल जाई? आसरा कराथी कि अब "बकरियों" मन के मौका देवल जाई और उ मनक हाथ में "बाघडोर" देवल जाई। जनता सरकार केर माने मोर काका कहाथै कि उ ऐसन जिनिस हेके जे न एक ठो आदमी केर हथे टिक सकी, न नव आदमी केर हथे न नव लाख केर वले। ई सोभे केर एकमत और राय से चैल सकी और चलाथे।

रौरो चला...."कदम कदम बढ़ाये जा....बढ़ाये जा"।[२०]

बिहार की राजनीति प्रारंभ से ही जातीयताग्रस्त रही है, जिसकी ओर लेखक ने "बाघ और सिह" शब्दों के माध्यम से संकेत किया है। इस संदर्भ में "बाघडोर" शब्द का प्रयोग कर जो चमत्कार पैदा किया गया है, वह प्रशंसनीय है।

श्री इग्नेस बेक द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखण्ड" में नागपुरी रचनायें सम्मिलित नहीं की जाती थीं, अतः इस पत्र के सम्बन्ध में कुछ भी कहना अप्रासंगिक होगा।

१९. ३ मार्च १९४९ (विशेषांक) पृष्ठ १६।
२०. २५ जनवरी १९४८, पृष्ठ २।

(ख) झारखंड समाचार

(क) पत्र का नाम	झारखंड समाचार
(ख) प्रकाशन-अवधि	साप्ताहिक
(ग) प्रकाश-स्थल	राँची
(घ) सम्पादक	इग्नेस कुजूर
(ङ) प्रकाशक	इग्नेस कुजूर
(च) मुद्रक	इग्नेस कुजूर करमा प्रिंटिंग प्रेस ४९, पुरुलिया रोड, राँची
(छ) पृष्ठ-संख्या तथा आकार	पृष्ठ-संख्या-४ आकार—फुलस्केप
(ज) वार्षिक शुल्क	रु० ४-८० पैसे
(झ) एक प्रति	१० पैसे
(ज) लिपि	देवनागरी (यदा-कदा रोमन)

साप्ताहिक "झारखण्ड समाचार" का प्रकाशन ९ जून १९६८ को प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक इग्नेस कुजूर हैं, जिन्होंने सन् १९४७ से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक "अबुआ झारखंड" का सम्पादन किया था। "झारखंड समाचार" एक हिन्दी साप्ताहिक है, जिसमें यदा-कदा अंग्रेजी का भी प्रयोग किया जाता है। श्री कुजूर ने जिस प्रकार अपने सम्पादन-काल में "दोना-दोनी" नामक स्तम्भ चालू किया था, उसी प्रकार उन्होंने "झारखंड समाचार" में "बुधवा का लूर" नामक एक स्तम्भ प्रारम्भ किया है, जो इस पत्र के प्रायः प्रत्येक अंक में रहता है। "बुधवा का लूर" के अन्तर्गत सामयिक तथा स्थानीय महत्त्व की समस्याओं का व्यंग्यात्मक-चित्र नागपुरी में प्रकाशित किया जाता है पर स्तम्भ-लेखक का नाम नहीं दिया जाता है।[२१] "दोना-दोनी" की तरह "बुधवा का लूर" भी एक सफल स्तम्भ है, जिसकी रचनाएँ मस्तिष्क पर बड़ा गहरा प्रभाव डालती हैं। नीचे ऐसे ही दो अंश उद्धरित किए जाते हैं :—

(१)

"बतिया हनर अब की ऐसन अहे कि ई जमाना नें गोटेक दल बेगर खड़ा करले जीएक बड़ा कठिन। मोय गोटेक दल खड़ा करेक खोजायों।

२१. यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि इग्नेस बेक द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखंड" में कभी-कभी "बुधवा का लूर" हिन्दी में प्रकाशित हुआ करता था, पर उक्त पत्र का प्रकाशन अब बन्द हो चुका है। "बुधवा का लूर" छापने की प्रेरणा श्री कूजूर को यहीं से मिली है।

कटिक सोचू, ई जवाना हिके जीएक वेस जीएक केर और पैसा खाएक ले वेस काम करेक केर। पुरखा परिया और आईज के परिया में आकाश पाताल केर फरक आहे। सोबहे अगर चोरीये करवैं और पैसा जमा करिये लेवैं, तो का देश धनी नी बनी ? आईज केर आदमी मनक कपार, मोर देखेक में एहे लाईन धराथे। आईज केर जमाना हिके—बेटा बीटी मायं बापकेर लीडरी करेना, छोड़ा छोंड़ी मन मास्टर मांस्टरीन के पढ़ाएक सिखएना, कारखाना में लेबर फोरमेन के चलाएला।

से दिन सुनली कने सोब गोदी केर छौवा मन माए केर छाति से दूध पीएक से "स्ट्राईक" कईर देलयँ। ऊ मनक माँग सुनली—ई ठठरी पंजरी काया छाती केर थोड़े सन दूध से ई "स्पेस" युग में अब काम नी चली। हरेक माय के हरेक आधा बेला मे एक पौंड दूध देवेकहें पडी और नही तो हमरे एतना⋯हजार छौवा मनकेर "स्ट्राईक" चालू रही।"[२२]

(२)

"मोर लगोटिया सांग कहो कधियो नी रहंय। हाँ ढेईरे दिन होलक कि करेया बाल सांग तो रहंय। आईज सोब कने कने हो गेलंय। आईज मोर सांग मन हिने फुलपेंटिया ड्रेनपईप और हुने "टाइट-ड्रेस" पेट दिसवा।

ई जमाना रौरे जानत्रे करीला कि उघराएक जिनिस के ढपयना और ढपेक जिनिस के उघरा छोड़यना। साईत ई बतिया भी रौरे जानीला कि ई उघराएक ढापेक जमाना मे पछिमे विलाईत बटे गोड नी ढपायना और पूर्वी जापान बटे घेचा खुले रखयना। ईकर बीच हमारे मनक मुलुक में पेट के नी ढपयना।

का सोचाथी रौरे, हियों आदिवासी करेयावाला मर्दाना मनकेर कोनहो बात नी होवाथे, होवाथे पटना, दिल्ली और हुन्दे बड़का शहर से राँची टाटा में आवल टाईट फिट जनाना-मनकेर ॥"[२३]

"झारखण्ड समाचार" में प्रकाशित "बुधवा का लूर" की भाषा व्याकरण-सम्मत तथा परिमार्जित है। ये विशेषताएँ "दोना-दोनी" में दिखाई नहीं पड़ती। सन् १९६८ में राँची जिले के कई क्षेत्रों में आदिवासियों (विशेषतः ईसाइयों) के द्वारा हिंसात्मक आन्दोलन किए गए थे और उथल-पुथल की उस अवस्था मे ही इस पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। अतः "बुधवा का लूर" के अन्तर्गत ऐसी अनेक रचनाएँ हैं, जो वर्ग-विशेष का प्रतिनिधित्व करने के कारण स्वस्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत कर पाने में असमर्थ है, पर जहाँ तक व्यंग्यात्मक शैली का प्रश्न है, उनकी सामर्थ्य पर शंका

२२. २१ जुलाई १९६८, पृष्ठ २।
२३. ६ मार्च, १९६९, पृष्ठ २।

नहीं जा सकती और यह माना जाना चाहिए कि नागपुरी की अभिव्यक्ति को सक्षम बनाने में "बुधवा का लूर" भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उपर्युक्त पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त "शबरी" (चक्रधरपुर), साप्ताहिक हलधर (डाल्टनगंज), राँची एक्सप्रेस (साप्ताहिक, राँची) राँची टाइम्स (साप्ताहिक, राँची) तथा राँची कॉलेज पत्रिका आदि में भी नागपुरी रचनाएँ देखने में आई है।

'राँची एक्सप्रेस' में अब नियमित रूप से प्रति सप्ताह 'नागपुरी स्तम्भ' का प्रकाशन होने लगा है। इस स्तम्भ में मुख्य समाचार नागपुरी में प्रस्तुत किए जाते हैं। इसी प्रकार 'राँची टाइम्स' (राँची) तथा साप्ताहिक हलधर (डाल्टनगंज) में भी नागपुरी स्तम्भ का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था, पर वह क्रम कुछ ही सप्ताहों के बाद टूट गया। इधर 'राँची टाइम्स' ने श्री प्रफुल्ल कुमार राय की एक लम्बी रचना—'संकर—एक ठो जिनगी' का प्रकाशन कर एक सराहनीय कार्य किया है।

यहाँ जिन-जिन पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख किया गया है, उन्होंने नागपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परन्तु इन पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन अस्थायी तथा सामयिक प्रमाणित होता रहा है। किसी भी प्रचलित भाषा तथा उसके साहित्य के विकास के लिए पत्र-पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन एक अनिवार्यता ही मानी जानी चाहिए, किन्तु दुर्भाग्यवश "नागपुरी" में आज भी कोई ऐसा पत्र या पत्रिका नहीं जो इसका दिग्दर्शन कर सके।[२४] इस अभाव की ओर नागपुरी-भाषी लोगों का ध्यान आकृष्ट हो रहा है, अतः यह आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में नागपुरी मे नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हो जाएगा।

२४. 'जय झारखंड' (डाल्टनगंज) नामक एक नागपुरी पत्र का प्रकाशन अगस्त १९७२ से प्रारंभ हुआ है पर इसका भी नियमित प्रकाशन निश्चित नहीं।

५

नागपुरी शिष्ट साहित्य में प्रतिफलित छोटानागपुर की संस्कृति

साहित्य हमारे जीवन का प्रतिबिम्ब भी है। साहित्य में मनुष्य के हर्ष-विषाद, आशा-आकांक्षा, सभ्यता-संस्कृति, उन्नति-अवनति तथा उसके जीवन की छोटी-बड़ी सभी समस्याओं के चित्र देखे जा सकते हैं। नागपुरी साहित्य में भी नागपुरी भाषियों के जीवन की प्रतिच्छाया देखी जा सकती है। नागपुरी आदिवासियों तथा गैर-आदिवासियों दोनों प्रकार के लोगों की भाषा है। नागपुरी का प्रयोग प्रत्येक धर्म तथा वर्ग के लोग अपने जीवन में करते हैं, फलस्वरूप नागपुरी साहित्य की सेवा हिन्दू, मुस्लिम तथा ईसाई सभी प्रकार के साहित्यानुरागियों ने की है। इस प्रकार नागपुरी साहित्य की भाव-भूमि पर्याप्त विस्तृत तथा व्यापक हो गई है। अपनी इस व्यापकता के कारण नागपुरी साहित्य छोटानागपुर के जन-जीवन को बड़ी तेजी से प्रभावित करने लगा है।

नागपुरी लोक-साहित्य तथा शिष्ट साहित्य के विवेचन से इस निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है कि नागपुरी का साहित्य किसी भी क्षेत्रीय-भाषा के साहित्य से हीन नहीं। संसार की प्रायः सभी भाषाओं के साहित्य में सबसे पहले पद्य का विकास हुआ है। यही स्थिति नागपुरी की भी है। नागपुरी का अधिकांश साहित्य पद्य में सुरक्षित है, परन्तु अब गद्य-लेखन का भी प्रारम्भ हो चुका है।

नागपुरी साहित्य का सम्यक् काल-विभाजन तो संभव नहीं, क्योंकि इसका कोई इतिहास नहीं। पर. प्रवृत्तियों की दृष्टि से इसे तीन मुख्य खंडों में सुविधापूर्वक रखा जा सकता है :—

(१) भक्ति साहित्य,
(२) शृंगार साहित्य, तथा
(३) आधुनिक साहित्य

नागपुरी का सम्पूर्ण भक्ति तथा शृंगार साहित्य पद्य में उपलब्ध है, विशेषतः गीतों के रूप में। आधुनिक साहित्य के अन्तर्गत गद्य तथा पद्य दोनों का विकास हो रहा है। आधुनिक नागपुरी साहित्य-रचना को आज की तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों तथा घटनाओं ने संभव बनाया है। फलतः भक्ति-साहित्य तथा शृंगार-साहित्य की अपेक्षा आधुनिक नागपुरी साहित्य में छोटानागपुर के जन-जीवन की झाँकी विशेष रूप से पाई जाती है। सच तो यह है कि नागपुरी का भक्ति साहित्य लोगों को जीवन की समस्याओं से विमुख करता रहा। इसी प्रकार छोटे-मोटे सम्पन्न लोगों, जमींदारों तथा राजाओं ने शृंगार साहित्य को अपनी काम-वासना को उभाड़ने तथा मनोरंजन का साधन समझा। इस दृष्टि से उपर्युक्त दोनों प्रकार के नागपुरी साहित्य जन-जीवन को प्रभावित कर सकने में अक्षम सिद्ध हुए, किन्तु आधुनिक नागपुरी साहित्य सभी प्रकार के लोगों के लिए है। आज नागपुरी साहित्य जनता के इतना अधिक समीप है जितना कि वह कभी भी नहीं था। यह संतोष का विषय है कि नागपुरी साहित्य में छोटानागपुर की संस्कृति प्रतिफलित होने लग गई है। इस पर नीचे विशेष रूप में विचार किया जा रहा है। सुविधा की दृष्टि से नागपुरी के पद्य तथा गद्य साहित्य पर क्रमशः अलग-अलग विचार करना समीचीन होगा।

(१) नागपुरी काव्य में प्रतिफलित छोटानागपुर की संस्कृति

(क) छोटानागपुर का जन-जीवन—

छोटानागपुर की धरती रत्नगर्भा मानी जाती है, पर इस धरती के बेटे सदा से भूखे तथा नंगे रहते आए हैं। यहाँ अनेक परिवर्त्तन होते रहे, परन्तु छोटानागपुर के निवासियों के जीवन में कोई क्रांति नहीं आ सकी। यहाँ की जनता आज भी दीन-हीन ही है। यहाँ के अधिकांश आदिवासियों को अपनी जीविका उपार्जित करने के लिए आसाम के चाय बागानों में अभी भी जाना पड़ता है। शेख अलीजान ने ऐसे ही एक आदिवासी मजदूर का तलस्पर्शी चित्र निम्नलिखित गीत में प्रस्तुत किया है—

काम करे गेलौ दइया, टौंका बगान हो
हायरे संघत बिना, मन रहे न थीराये ॥ १ ॥
मन के राखु थीर, तीन साले घुरब फीर
हायरे लिखल जहाँ, तहाँ जीना असथान ॥ २ ॥
तनिको न राखुमन तन में फीकीर हो
हायरे भरोसा जानी, पुरा भजु भगवान ॥ ३ ॥
जीला तो सीबसागर, पोस्ट सोनारी हो
हायरे रहना डेरा, है ये चारि नम्बर खोली हो ॥ ४ ॥

दईया सुनली हाम, चारि आना पाँच आना
हायरे बहुत मिले, कहे "सेख अलीजान" बहुत मीले ॥ ५ ॥[1]

छोटानागपुर का एक मजदूर स्वजन-परिजन से दूर आसाम के शिवसागर जिले के चाय-बागान में काम कर रहा है। वह चार नम्बर की खोली में रहता है। वह वह सोचता है कि उसकी तकदीर में शिवसागर की ही रोटी है। उसका हृदय स्थिर नहीं रह पाता, पर वह अपने को सान्त्वना देता है—कोई बात नहीं, तीन वर्षों के बाद मैं फिर अपनी मातृभूमि छोटानागपुर लौटूँगा।

कुछ अभागे ऐसे भी होते हैं, जो चाय-बागान तक भी पहुँच नहीं पाते। ऐसे लोग रत्नगर्भा छोटानागपुर में रहकर ही जीवन की यातनाएँ भोगते हैं। गर्मी का मौसम है। चारों ओर भयंकर धूप पड़ रही है। बाहर निकलने का साहस कोई नहीं करता। पर इस चिलचिलाती धूप में भी किसी को घर से बाहर निकलना ही पड़ता है—पेट की आग शान्त करने के लिए। वह "एक मूठा अन्न" के लिए दरवाजे-दरवाजे घूमता है, पर उसे कुछ भी नहीं मिलता। वह आम के एक-दो फलों के लिए पेड़ के नीचे पहुँचता है। यह किसी व्यक्ति-विशेष का चित्र नहीं। छोटानागपुर के अधिकांश लोगों की यही दुरवस्था है। इस यथार्थ को वासन्तीपूत (स्व० पीटर शांति नवरंगी) ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में अपनी "ई बछरक रउद अउर भूख" नामक कविता में प्रस्तुत किया है—

हेठे धरती दहकत, उपरे तो लू लहरत।
जीव मोर अकुलाए, काया ई विकलाए ॥१॥
कहीं जे पानी पाती, जुड़ाती तनिक छाती।
हा! दइया इसन दसा, सगरे जीवन कासा ॥ २ ॥
पेट में एक अन नहीं, अंग में सवांग नहीं।
करब तो काजे करब, बइसलो कइसे रहब ॥ ३ ॥
चलु, जाई अम्बा तरे, अब नि रहाए ई घरे।
एक-दुइ जे फल पावब, तो परान तो राखब ॥ ४ ॥
मगर हा! घरक हालइत, हा! भूखल मनुख जाइत।
घरनी उदास देखे, छउवा कांदे भूखे ॥ ५ ॥
दुरा-दुरा घुइल फिरली, लाज डर छोड़इ कहली।
"एक मूठा अन देहू, बूड़त बचाय लेहू ॥ ६ ॥

1. नगपुरीया झमकच छत्तीसरंग, पृष्ठ १।

छउवा मोर कलपत, घरनी मोर तलफत।
घर में एक खुदी नहीं, कोनो उपाय नहीं॥ ७॥
सब बट निरास भेली, एके जवाब पाली
"न कहे, कोनो न कहे, का देउ कोनो न कहे"॥ ८॥
भगवान! हमर पर तरसु, अब हमर जान बक्सु।
ई बछर जीते रहब, तो पर आस फिर नई करब॥ ९॥[२]

प्रत्येक समाज में कुछ सम्पन्न लोग तो रहते ही हैं, परन्तु ऐसे लोगों का जीवन भी किंचित् विचित्र होता है। एक व्यक्ति सम्पन्न है, पर अपनी पत्नी के साथ उसका व्यवहार अमानुषिक है। एक ऐसे ही पति के सम्बन्ध में उसकी पत्नी शिकायत करती है—वह अपने पति के साथ रहना नहीं चाहती। वह अपने पति के अत्याचार अब और नहीं सहना चाहती। वह कहती है—

आपने तो मुहजारा धोती फेटा पिंधेला,
हामके तो लेदरा देवेला,
ऐसन पुरुष से मोंय नि रहोंना॥
आपने तो मुहजारा दही दूध खायेला,
हमके तो चोकोंडा कर लेटो देवेला,
ऐसन पुरुष से मोंय नि रहोना॥
आपने मुहजारा लाली सेज सोवेला,
हामके झेंझेरा पटिया देवेला,
ऐसन पुरुष से मोंय नि रहोंना॥[३]

इन पंक्तियों में "मुहजारा" शब्द बड़ा सार्थक है। जहाँ इस शब्द में पत्नी का आक्रोश झलकता है, वहाँ उसकी प्यार भरी झिड़की का पुट भी कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं।

भारतीय समाज में नारियों को सदा प्रताड़ना मिलती रही है। युवावस्था तक कन्या पिता का बोझ मानी जाती है। विवाह के बाद पति का प्रेम किस्मत वाली ही पाती है, अन्यथा अन्य नारियों के जीवन में सास और ननद की जली-कटी बातें ही होती हैं। रुक्मिनी ने एक ऐसी ही नायिका के दुःखमय जीवन का सजीव वर्णन किया है—

२. आदिवासी, स्वतंत्रता-दिवस अंक १९६४, पृष्ठ २०।
३. नगपुरिया फगुआ गीत, पहला भाग, पृष्ठ १४।

कासे कहबूं पिया दुःख के बीचारी,
दुःख सहे नहीं पारी, सासु ननन्द देलैं गारी,
गारी सुनि जीवा हारी ॥ १ ॥
नहीं सहे पारों पिया ऐसन ऐसन गारी,
कांचा काया लागे मारी, नैहरे नइ बाबा महतारी,
सेहे बदे मन मारी ॥ २ ॥
कहे रुकमिनी गोरी ठाढ़े कर-जोरी,
जिनगी है दिन चारी, रौरे संगे देबूं जीव डारी,
करु पिया इतबारी ॥ ३ ॥[४]

सास और ननद की गालियाँ इतनी असह्य हैं कि नायिका की कच्ची काया (तरुणावस्था) भी माटी (वृद्धावस्था) में परिवर्तित हो जाती है। नायिका माता-पिता विहीन है, अतः वह असहाय है। उस निर्बल के राम सिर्फ उसके पति ही हो सकते हैं, जिसे वह अपने पूर्ण-समर्पण का विश्वास दिला रही है।

जीवन की यह गाड़ी आगे कैसे चले ? इसे घसीटना भी बड़ा कठिन है। इस कठिनाई की अनुभूति शेख अलीजान को है। यह स्वर्ण-सा जीवन भी उन्हें भार प्रतीत होता है—

होरी ए हो पेट के फिकिर हये भारी हो
एरी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ १ ॥
होरी काम धंधा चले मंदा, दुनिया है महाफंदा,
नहिं भला होत उपकारी हो
एरी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ २ ॥
होरी गेल बेपार करे, असरा देखत घरे
पइंचा उधार करी करी,
हो एरी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ ३ ॥
होरी आवके फुहरी नारी, खोजे कहैं काठी-झुंरीं,
का कहु खीसे काँपे दाढ़ी
हो एरी छउवा पूता करये दिकदारी ॥ ४ ॥[५]

४. देशी झूमर, भाग ३, पृष्ठ ४।
५. फगुआ गीत, भाग ३, पृष्ठ १४।

भारतीय किसानों का जीवन कृषि पर निर्भर करता है। छोटानागपुर में जो नदियाँ हैं वे पहाड़ी हैं, अतः बरसात में वे भर जाती हैं और गर्मी के दिनों में बिलकुल सूख जाती हैं। इस विषम परिस्थिति के कारण यहाँ सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं। यहाँ की कृषि पूर्णतः इन्द्र महाराज की अनुकम्पा पर निर्भर करती है। अतिवृष्टि हो तो दिक्कत, अनावृष्टि हो तो कठिनाई। दोनों ही परिस्थितियाँ यहाँ के किसानों के लिए समस्याएँ उत्पन्न करनेवाली प्रमाणित होती हैं। एक किसान है, वह ऋण लेकर खेती करता है, पर उसकी आशाओं पर तुषारापात हो जाता है। वह चिंता के बोझ से दबा जा रहा है। उसकी इस मनःस्थिति को बटेश्वरनाथ साहु ने शब्दबद्ध करने का जो सफल प्रयास किया है वह दर्शनीय है—

हाय रे हाय—फिकीर में आइज डुब गेली।
कैसे के जीवन हामर चली ॥ १ ॥
बुनली ऋण करी धान, सेकरो में पानीक टान।
समय में ऋण न चुकाली, कैसेक जीवन हामर चली ॥ २ ॥
एक जोड़ा डांगर, पैंचा उधरा घर
एक दिन बेईमान मेली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ३ ॥
साँझ पहर भेल, तेल-काठी घटि गेल
राइत-सगर भूखे बिताली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ४ ॥
छौवा-पूता नाती! उधरे बितावैं राती
कखनो ने सुखे सुतली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ५ ॥
बटेश्वर साव कहे देखि के जे दृग बहे
हरि के न कबहुँ भुलाली, कैसे के जीवन हामर चली ॥ ६ ॥[6]

छोटानागपुर के जन-जीवन में पर्व-त्योहारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन अवसरों पर छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष तथा बच्चे-बूढ़े सभी खूब आनन्द मनाते हैं। करमा और होली ये दो त्योहार ऐसे हैं, जिनकी प्रतीक्षा लोग बड़ी व्यग्रता से करते हैं। करमा का त्योहार आ गया है। इसके सम्बन्ध में धनीराम बक्शी कहते हैं—

भादो का एकादशी, सबे नारी हँसी-खुशी।
आउ-माई खेलब रसिया, आजु करम केर रतिया ॥
बाग बगइचा बारी सबे दिसे हरी हरी।
बड़ी रीझ लागे से गोइया, आजु करम केर रतिया ॥[7]

६. लोकगीत, पृष्ठ १३।
७. देशी झूमर, भाग ७, पृष्ठ १२।

जिस "फगुआ" की प्रतीक्षा थी वह निकट है। पर फगुआ मनाने का उल्लास ठंढा पड़ता जा रहा है। आर्थिक विषमताओं का प्रभाव छोटानागपुर के ऊपर तेजी से पड़ रहा है। लोग त्योहारों के प्रति उत्साहहीन-से प्रतीत होते हैं। एक इसी प्रकार का उत्साहहीन व्यक्ति अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहता है—

एसो का फगुआ भाई बड़ी झखना,
कासे कहवुं मने गुनि रहना।
कासे कहवुं हाय बिसुरल नहीं जाय,
इस्ट कुटुम सबे मेल बिराना।
कासे कहवुं मने गुनि रहना॥
बनला के सबे मीत दुनिया के एहे रीत,
टका के लोभे सभे होत अपना।
कासे कहवुं मने गुनि रहना॥[८]

छोटानागपुर के बेटों की अधिकांश आय शराब और हाँड़ी पीने में बर्बाद हो जाती है। शराब तथा हाँड़ी पिलाकर भोले-भोले नागपुरी-भाषियों को लोगों ने खूब-लूटा-खसोटा। इस कमजोरी के कारण छोटानागपुर के लोग आज भी पिछड़े हुए हैं। इस दुरवस्था को देखकर एक अज्ञात कवि बड़े दर्द भरे स्वर में नसीहत देता है—

का लगिन नगापुर अंगा तोरा मैला भेल
नगापर का लगिन नैना बहि लोर,
हाँड़ी तोरा नगापुर देसा के लूईट लेल,
नगापुर दारु तोरा राजी लूईट लेल,
अब छोड़ू नगापुर हाँड़िया रे दारु
नगापुर छोड़ी देऊ महुवा का रस।[९]

यहाँ की अनुसूचित जनजातियों में यह प्रथा है कि कन्या के विवाह के लिए वरपक्ष से रुपये लिए जाते हैं। यह परंपरा प्राचीन है, किन्तु कुछ नये लोग इसे अच्छा नहीं समझते। एक कन्या जिसका विवाह इसी प्रकार हुआ है, वह अपनी माँ से शिकायत करती है—तूने मुझे जन्म दिया और पाला-पोसा। खुट्टी-चुन्नी तथा दूध-भात देकर तुमने मुझे बड़ा किया, पर तुमने सिर्फ साड़ी-कपड़े के लिए पाँच रुपये में एक अनजान व्यक्ति के हाथ मुझे बेच दिया—

८. धनीराम बक्शी, फगुआ गीत, पहला भाग, पृष्ठ ४।
९. लील खो-रआ खे खेल, खण्ड २, पृ० ५२।

जनमले नयो मोरा जनमले रे
धरती धरि धरि जनमले
पिरीती धरि धरि जनमले
पोसालेगे नयो मोरा पोसाले रे
खुदी चुनी से पोसाले रे
दूधे भाते से पोसाले रे
बेचाले नयो मोरा बेचाले रे
पंचे टका लागिन बेचाले रे
साड़ी लुगा लगिन बेचाले रे ।[१०]

(क) कलियुग और छोटानागपुर :—

युग के अनुरूप छोटानागपुर भी द्रुतगति से परिवर्त्तित होता जा रहा है। कलियुग के दुष्प्रभाव से छोटानागपुर नहीं बच सका। इसी कलियुग के सम्बन्ध में लक्ष्मणराम गोप कहते हैं—

कलि के महिमा अति भारी हो संत,
चलु पंथ करि के विचारी ॥ ध्रुव ॥
झूठा संत ग्रंथ को कहै सत्य असत्य धरी कान,
पाखंडी के बात सुनै सज्जन के अपमान ॥
वेद पुरान जत गुप्त भये ग्रन्थ सत्,
निज मति करै अनुसारी हो संत ॥ चलु ॥ १ ॥
भये लोग सब मोह बस, तजि दियो सुकर्म,
जिमि मृगा जाने नहीं कस्तूरी के मर्म ॥
भटकी फिरत मृग चिन्है नहीं निज दृग,
इत उत चलत निहारी हो संत ॥ चलु ॥ २ ॥
दधि माखन घृत छाड़िकर, सुरा पियत सुख मान,
तजि अमृत विष के गहे करे न मन अनुमान ॥
उलटी करम करी मनहु में आशा भरी,
अन्त पाये दुःख अति भारी हो संत ॥ चलु ॥ ३ ॥

१०. लील खो-रम्रा खे खेल, खण्ड २, पृष्ठ ३२४।

मेवा मिसटान को छाड़िकर मीन माँस के खान,
छीर देत लागे नहीं हाड़ ही खात स्वान ॥
सोच न विचार करैं मनहु न ध्यान,
घरे नित करें अधम अहारीं हो संत ॥ चलु ॥ ४ ॥
माता-पिता को छाड़िकर कर त्रिया सो नेह लगाय,
अन्न-वस्त्र के कारने रहत सदा बिलखाय ॥
नर नारी दुयो जोरी रहत आनन्द भरी,
अनेक रंग में सजाई हो संग ॥ चलु ॥ ५ ॥
निज त्रिया को तजिकर करत कलि के संग,
जात पात चिन्हे नहीं जैसे दीप पतंग ॥
लछुमन लाज तजी नाचत है रुप सजी,
छने छने रूप के निहारी हो संत ॥ चलु ॥ ६ ॥[११]

कलियुग के प्रभाव में आकर हिन्दु तथा मुसलमान दोनों धर्मो के अनुयायियों ने झूठ को सच बनाना प्रारंभ कर दिया है। लोग धर्म के मार्ग से हटकर पापाचार को अपना रहे हैं। शेख अलीजान इस "उलटी जमाना" को देखकर चकित हैं—

होरी ए हो उलटी जमाना देखु भाई हे,
झुठ बात के सचा तो बनाई ॥ १ ॥
होरी का हिन्दु मुसलमान धरम ना करे खयाल,
बहत त्रिकट पंथे जाई हे, झुठ बात के सचा तो बनाई ॥ २ ॥
होरी कम नेकी पूरा सेखी, बदी तीन गुना रही,
का तो करार आई हे, झुठ बात के सचा तो बनाई ॥ ३ ॥
होरी हाय त्रिया हाय माल हर खन रहे खयाल
दिन दिन लालच बढ़ाई हे, झूठ बात के सचा तो बनाई ॥ ४ ॥
होरी "सेख अलिजान" कहे, बुझी आपन रहे,
जेकर जैसन कमाई हे, झुठबात के सचा तो बनाई ॥ ५ ॥[१२]

"धर्म" अब चर्चा का विषय रह गया है। आधुनिक युग में धर्म के लिए कहीं भी कोई स्थान नहीं। अब्बास अली रोजेदारों को चेतावनी देते है कि फरेब से क्या लाभ—

रोजा फरज हये मानु बतीया भला मानु बतीया,
कबर में कोई ना जाने कवन गतीया ॥ १ ॥

११. नागपुरिया गीतावली, पृष्ठ १८।
१२. फगुआ गीत, भाग ३, पृष्ठ-३।

दिन में बीमार कछे बेसे रतीया भला बेसे रतीया
पेट में दरद कहै हमार छतीया ॥ २ ॥
बहुत फरेब रचे झूठो बतीया भला झूठो बतीया
कमाय मरे रौंची शहर हटीया ॥ ३ ॥
जनी बोले कैसे करबै पेठीया भला करबै पेठीया
तनीको ना बूझै मीलब मटीया ॥ ४ ॥
कोई तो देखले मोके सुते खटीया भला छूछे पटीया
गेल बादे ठसर ठसर झोटीया ॥ ५ ॥
अब्बास लिखे गीतिया भाई रीतिया भला देखी रीतिया
मन करे मारबै घुमाय लटीया ॥ ६ ॥[13]

गाँव की सीधी-सादी लड़कियाँ जो कभी एक अनजान पुरुष को देखकर दरवाजे की ओट में छिप जाया करती थीं, अब उनके माथे पर आँचल भी नहीं। वे "रेजा" के रूप में शहरों में काम करती हैं, किन्तु उनके बनाव-शृंगार को देखकर दाँतों तले उंगली दबानी पड़ती है। डोमन राम ने बड़े समीप से रेजाओं का अध्ययन किया है। वह कहते हैं—

कलीयुगे रेजा काम जारी
निच नारी गोई, सर्ग उपरे पगुढारी
बमकन मोटर गाड़ी झलमल उड़े
साड़ी छीट जाकिट साया बुटे दारी,
चमतकारी गोई नख सील भूषण संवारी ॥ १ ॥
चिरझारी झालैर खोपा-लोपा उपर फूलक खोपा,
सेन्दुर काजर लाल कारी-मृग हारी गोई
निपटे मोहन रुपधारी ॥ २ ॥
गले भला मुंगा मोती-छतीय लजरत
अति उत्तम हरवा केरं हारी झमझकदारी गोई
डोमना सुजन मन टारी ॥ ३ ॥[14]

रेजाओं का बनाव-शृंगार अखरनेवाली बात नहीं, परन्तु इस नई सभ्यता

१३. लेखक की हस्तलिखित प्रति से।
१४. कलयुग खण्ड, पृष्ठ ५।

के कारण ये अपने पति के पास जाना ही नहीं चाहतीं, यही बुराई की जड़ है। आगे डोमन राम कहते हैं—

कहीयो ना गेले सुसुरारी दीमीकदारी गोई
नही अरे समये के गुजारी
परके पुरुष संगे बिहरत रीझे रंग,
पिया के ना खभरी पुछारी बिसारी गोई उड़त टरक असवारी ॥ १ ॥
जबले तरुणीपन-चाहत जगत्जन
समय गेले कोईयो न निहारी बरनारी गोई
जीन्दगी जीवन दिन चारी ॥ २ ॥
माथ बापक राखु डर, जाहु तो ससुर घर
करु दुवो कुल उजियारी दुलारी
गोई डोमना सुन्हु सुकुमारी ॥ ३ ॥[१५]

कलियुग ने पैसे का महत्त्व बढ़ा दिया है। अब मनुष्य का मूल्यांकन पैसे के आधार पर किया जाने लगा है। कलियुग की इस नई देन से छोटानागपुर अप्रभावित कैसे रह सकता है? अब्बास अली अपने एक गीत में कहते हैं—

कलियुग आई गेल पैसा बसे दूरे गे साजैन
कलियुग ऐसन अवसरे ॥ घु ॥
पैसा रंग पैसा रूप पैसा है जेवर गे साजैन, कलियुग......
पैसा हित पैसा मित पैसा चित तोर गे साजैन, कलियुग...
पैसा है अमृतवाणी पैसा जीवा मारे गे साजैन, कलियुग...
पैसा से होय बड़ छोट बनत अमीरे गे साजैन, कलियुग...
पैसा से मालिक बने पैसा से नोकरे गे साजैन, कलियुग...
पैसा से इज्जत कुल बिकत डहरे गे साजैन, कलियुग......
पैसा के पूजत नर सगर नगरे गे साजैन, कलियुग.........
पैसा के ही कारने अब्बास नोकरे गे साजैन, कलियुग...।[१६]

धन के बढ़ते हुए महत्त्व ने मनुष्य को गौण बना दिया है। परिणामस्वरूप छोटानागपुर की सामान्य जनता सदा कर्ज के बोझ से दबी रहती है, जैसाकि शेख अलीजान की निम्नलिखित पंक्तियों में कहा गया है—

१५. कलयुग खण्ड, पृष्ठ ५।
१६. हस्तलिखित प्रति से।

इ दुखे मिले न उपाय, जीयब कवन साय।
आहु महाजन करी, रीन से बोराय।
जीयब कवन साय, रहौ दुखी अनेक बढ़ाय।[17]

(ग) छोटानागपुर—स्वतंत्रता के पूर्व :—

बीसवीं शताब्दी के पूर्व छोटानागपुर एक दुर्गम प्रांत माना जाता था। इस ओर आने का साहस बहुत कम लोग किया करते थे। मुगलों के शासन-काल में भी यह क्षेत्र एक प्रकार से उपेक्षित एवं उनके शासन की सीमा से बाहर रहा। यदा-कदा इस क्षेत्र के ऊपर छोटे-मोटे हमले हो जाया करते थे। अंग्रेजों ने ही छोटानागपुर को शासन प्रदान किया। पर इसके लिए उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा।

सन् १८३१ ईस्वी में एकाएक छोटानागपुर में एक "लरका आंदोलन" या "कोल आंदोलन" उठ खड़ा हुआ।[18] इस आंदोलन में छोटानागपुर के हजारों गैर-आदिवासी यहाँ के आदिवासियों के द्वारा बड़ी निर्ममता के साथ मौत के घाट उतार दिए गये। इस नरसंहार को हापामुनि के बरजूराम पाठक नामक नागपुरी कवि ने स्वयं अपनी आँखों देखा था। इस अमानुषिक हत्याकांड से संबंधित बरजूराम पाठक के अनेक गीत उपलब्ध हैं। नीचे के दो गीतों में इसी आंदोलन के चित्र प्रस्तुत हैं—

छोटानागपुरक हाल, अठारह सौ अठासी साल,
लरा मुंडा कोल्ह बउरावल ए सजनी,
गँवागाई मंत्र टिकावल, ए सजनी ॥ धुन ॥

ढाल धनुष तीर असि धरी बनी बीर,
नर बाँधी दल अधिकावल ए सजनी,
गँवागाई मंत्र टिकावल ॥ १ ॥

सकल हनकरी मरल प्रबल करि,
गृहपरे अनल लगावल ए सजनी,
गँवागाई मंत्र टिकावल ॥ २ ॥

सुनहु लरका सरूड कहे बरजु प्रचंड,
नागपुरी छन्द गीत गावल ए सजनी
गँवागाई मंत्र टिकावल ॥ ३ ॥[19]

१७. नगपुरिया गीत छत्तीस सं. पृष्ठ १० ।
१८. डॉ० जगदीशचंद्र मिश्र. दि कोल इनसरेक्शन (१९६९) कलकत्ता ।
१९. श्री दिवाकरमणि पाठक (हापामुनि) से प्राप्त ।

लरका आंदोलन के कारण यहाँ के सदान लोगों को काफी हानि उठानी पड़ी। यह विपत्ति ऐसी थी कि इसका बखान भी संभव नहीं—

लरका अधिक दुःख दिहल हमारी,
विरहे व्याकुल जीव कहते न पारी,
गे साजैन परल विपत्ति बड़ भारी ॥ धुवा ॥
संपत हरन किए—गृहानल डारी
त्रिया सहिते सुत करल संहारी,
गे साजैन परल विपति बड़ भारी ॥ १ ॥
ग्राम के निवासी खल राखल आगरी
रन में निकाली देलैं भेल महामारी
गे साजैन परल विपत्ति बड़ भारी ॥ २ ॥
कतहुँ अरज करी करल पुकारी,
नहीं जीव जान देल पापी दुराचारी,
गे साजैन परल विपत्ति बड़ भारी ॥ ३ ॥
बरजू विलाप करे हापामुनि द्वारि,
निशि दिन बुझी बहे नैना वारि,
गे साजैन परल विपत्ति बड़ भारी ॥ ४ ॥[२०]

लरका आंदोलन को दवाने में अंग्रेजी शासन को बड़ी कठिनाई से सफलता मिली। पर, इसके वाद अंग्रेजों का प्रभाव छोटानागपुर में बढ़ने लगा। अंग्रेजों के बढ़ते हुए इस प्रभाव से नागवंशी राजा-महाराजाओं को प्रत्यक्ष नुकसान उठाना पड़ा, परन्तु उनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे अंग्रेजों से लोहा ले पाते। नागवंशी राजा-महाराजाओं की इस विवशता की पुष्टि नीचे की पंक्तियों से हो जाती है—

फिरंगी चढ़ल जब दल भारी,
नागवंसी कांपत जीवहारी ॥
ए हरी परबत पहार छितिये छांछि,
बन भीतरे देलैं डेरा ड़ारी ॥
ए हरी तम्बू का मिलान रुंडा,
चौफेरा बाँधे घोडा गाड़ी,

२०. श्री दिवाकरमणि पाठक (हापामुनि) से प्राप्त।

ऊपरें तोप छूटल भारी,
नागवंसी कांपत जीवहारी ।।[२१]

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारत के लोग तैयार हो रहे थे । स्वतंत्रता की भावना ने जोर मारा और समूचे भारत में १८५७ का प्रसिद्ध सिपाही विद्रोह हुआ । इस स्वतंत्रता-संग्राम की आग छोटानागपुर तक आ पहुँची । यहाँ के सपूतों ने भी अंग्रेजी शासन को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने का प्रयास किया । इस आंदोलन का केन्द्र राँची बना और इसका नेतृत्व बड़कागढ़ के विश्वनाथ शाही तथा उनके सहयोगी पाण्डे गणपतराय ने किया । अंततोगत्वा यह आन्दोलन अंग्रेजों के द्वारा दबा दिया गया । विश्वनाथ शाही को राजद्रोह के अभियोग में १६ अप्रैल १८५८ को फाँसी की सजा दी गई । फाँसी के समय पाण्डे गणपतराय ने विश्वनाथ शाही से जो कहा था वह नागपुरी गीतों की थाती है—

चढ़् ठाकुर मति डरु फाँसी,
कैल नहीं परसों तो होबों राउर साथी ।[२२]

विश्वनाथ शाही शहीद होकर अमर हो गए । वह यहाँ के निवासियों के हृदय में सदा-सर्वदा के लिए बस गए । उस सिंह-पुरुष की स्मृति में पाण्डेय दुर्गानाथ राय की "शहीद विनती" नामक निम्नांकित रचना उल्लेखनीय है—

ठाकुर विश्वनाथ साय, सिंह पुरुष जनम पाय छोटानागपुरें
देश खातिर उठलें वीर कसिके कमरें भाई
ऐसन नर विरले अवतरें भाई
ऐसन नर विरले अवतरें ।
अंगरेज के ऐताचार, सहीं नहीं अब दिल हमार
कहिके जुद्ध करे, गोला बारुद बम-बन्दूक
कुछ के नहीं डरे भाई
ऐसन नर विरले अवतरें भाई
ऐसन नर विरले अवतरें ।
देशवासी के सुख कारण, करी लेलें मने द्रीढ़ परन
साहसी नी डरे
देश हमार होवी उद्धार

२१. घनीराम बक्शी, फगुआ गीत, पहला भाग, पृष्ठ १३ ।
२२. कुशलमय शीतल छोटा नागपुर की कलीसिया का वृत्तांत (१६५५) पृष्ठ ४५ ।

कहिके जीद्द धरे भाई
ऐसन नर विरले अवतरे भाई
ऐसन नर विरले अवतरे।
फांसिक जब हुकुम आय, तबु नहीं चीने घबराय
हाय-हाय सब करे रौंचीक बीचे
कदम्ब गछे झूलों देलें उपर भाई
ऐसन नर विरले अवतरे भाई
ऐसन नर विरले अवतरें।
धन्य धन्य कहँ हरेक-जन, गोटे राज जस गावें
सभे ठन, गाँव-नगर-सहरे
ऐसन नर विरले अवतरे भाई
ऐसन नर विरले अवतरें।[23]

धीरे-धीरे छोटानागपुर में अंग्रेजों के पैर जम गए। ईसाई मिशनरियों ने यहाँ के भीतरी गाँवों में जा-जाकर धर्म-प्रचार का कार्य प्रारंभ कर दिया। इस तरह छोटानागपुर में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। इसी युग में लोगों ने बड़े आश्चर्य के साथ रेलगाड़ी के दर्शन किए—

फिरंगी कर देसे आहे बहुत लोहारे
फिरंगी कर देसे आहे बहुत लोहा रे।
तहाँ से लोहा मंगाए हाकिम
रेल तो बनावे सुन्दरी ओगे
हाकिम बड़ी बुधिमान ओगे॥ १॥
लोहा-कर इंजिन बने काठकर डाबा बने।
रेलगाड़ी उड़े लागल पवन समान सुन्दरी ओगे
हाकिम बड़ी बुधिमान सुन्दरी ओगे॥ २॥
नीचे तो आइग पानी, ऊपरे भभकानी,
शेषकर सुटी भेल, चढ़ल मुसाफिर रेल,
डाइवर चलावे कल, गारदो देवे बल

२३. आदिवासी, २८/४/१९६६, पृष्ठ ४।

भमकही भमकही पल में पहुँच ही ॥ ३ ॥
रेलगाड़ी उड़े लागल पवन समान ।[२४]

अंग्रेज़ी शासन की जड़ें छोटानागपुर में जमने लगीं। जिन जंगलों पर यहाँ के निवासियों का स्वत्वाधिकार था, उन पर भी सरकार की कुदृष्टि पड़ गई। महारानी (संभवतः विक्टोरिया) के जंगल सम्बन्धी नये आदेश से छोटानागपुर की जनता चिंतित हो उठी। जनता की इस व्यथा का चित्रण निम्नांकित पँचपरगनिया गीत में देखने योग्य है—

महारानी हुकुम आनी, जंगले इसतार भेल,
मुंडा मानकी कोरिछे भाभोना, काटिले जेहल जुरवाना ॥ १ ॥
जिंजरीते नाप कोरिली, चोइख दिके टिका दिलो,
बिटे बाबू चोपोरासी जामा, काटिले जेहल जुरबाना ॥ २ ॥
परमिट निये बने पुसे, केभा काटे केभा घोसे
साल कुसुम आसन मोहुल माना, काटिले जेहल जुरबाना ॥ ३ ॥
हेनो राधे कृपाहीन, केमोने बाँचिबो दीन,
एक सेर चाउर चाइर आना केमोने बाँचिबो दुइ जना ॥ ४ ॥[२५]

इंगलैंड से सम्राट् पंचम जार्ज का भारत में आगमन हुआ। सारा भारत पंचम जार्ज के समक्ष नतमस्तक हो उठा। सम्राट् का मुक्त-हृदय से ऐसा स्वागत किया गया कि यहाँ का कवि भी मौन नहीं रह सका और वह पंचम जार्ज की प्रशस्ति में गा उठा—

बिलात ते एलो राजा, पोंचोम जार्ज महाराजा,
आनोन्दित दिली ते आसिलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे
शोभिलो हे, दो रोशने प्राण जुड़ाइलो ॥ १ ॥
गुनिबे के हाथी घोड़ा, सोभा कोतो गेलो जोड़ा,
कोनो रांगे बाजोना बाजीलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे ॥ २ ॥
जोमिदार बाबू राजा, गुनी माने सोबे प्रोजा,
मिलिये ताहाके पुजिलो, दिलिरो गादी ते से बोसिलो हे ॥ ३ ॥

२४. डमकच गीत, पृष्ठ १४।
२५. घनीराम बक़्शी, देशी झूमर, भाग ७, पृष्ठ ७-८

जे रूपे देखी हो मेल। नाना रूपेर होलो खेला

घोरे घोरे आलो जालिलो, दिलिरो गादी ते से वोसिलो हे ॥ ४ ॥

दीन दुखी सोबे सुखी, होलो तारे देखी,

"घोनिराम" जोयो जोयो वोलौ, दिलिरो गादी ते से वोसिलो हे ॥५॥[२६]

सन् १९३२ ई० में छोटानागपुर की भूमि की माप हुई जो "सर्वे सेट्लमेंट" के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय सरकारी आदमियों ने ग्रामीणों से काफी लाभ उठाया। छोटानागपुर की अशिक्षित जनता सर्वेक्षण के अधिकारियों से कितना घबराती थी, उसका बड़ा ही सफल चित्र शेख अलीजान ने इस गीत में प्रस्तुत किया है—

पहुँचल साल नवासी आय, गौरमीन्ट से हुकुम पाय,

अमीन जमा परे, करत नाप सगर गाँव नगर नगरे सखी

हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ १ ॥

घर घर पारि देत सुवा, सब काम जे ठीक हुवा,

विहान हाजिरे कोई भंडी कोई सिकर

तख्त मुड ऊपरे सखी, हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ २ ॥

गाँवकर सब मुड़ा पहान, करत भेट सांझ विहान,

कोटवार हांक पारे, का सेखी का गुमान,

निकलत सब डरे सखी, हरखन जांच रइयत ऊपरे ॥ ३ ॥

देखत अमीन कागज पतर, निकलत नाम जेकर जेकर,

सही सब करे, करु खेयाल काहे बेहाल,

विधि पट तरे सखी, हरखन जाँच रइयत ऊपरे ॥ ४ ॥

सेखी करत कतई भन, सुनत, "सेख अलिजान"

पहिले सबरे, सरकार करत सक्रिस

नोटिस जब करे सखी, हरखन जांच रइयत ऊपरे ॥ ५ ॥[२७]

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनमत तैयार होने लगा। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता-संग्राम प्रारम्भ हो गया। भारत की जनता अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए एक झंडे के नीचे आ गई। सारे भारत में सभाएँ होती रहीं, जनमत बनता रहा। और...एक दिन छोटानागपुर के रामगढ़ नामक स्थान में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन का जो विवरण शेख अलीजान ने प्रस्तुत किया है, वह देखते ही बनता है—

२६. देशी झूमर, भाग ८, पृष्ठ ६।
२७. नगपुरिया गीत छत्तीसरंग, पृष्ठ १३।

आखरी सभा किये पयान, रामगढ़ जग तंबु तान,
मैदान मंजूरे काइट-काइट के जंगल झाड़
शहर बास करे, देखत मन लागत चकरे ॥ १ ॥
उत्तर है सरग टीसन, दखिन है काना जकसन,
बिच में है डेरा गिरे, छावनी छपर लाइन,
घेरत टटरे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ २ ॥
सामान है बेशुमार, गेट पीछे दुई पहरदार
चौबिस पहरे, चाहत लोग अन्दर जाय,
टीकस पास करे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ ३ ॥
दीसत गलि पक्का रोड, चलत गाड़ी हजार जोड़,
गनती कौन करे, साँझ बिहान आवत जात
रेल से मोटरे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ ४ ॥
बिजली खुटा छावल तार, टाँकी भरन भये तैयार,
कल से जल भरे, खात पियत जात नहाय
देखनद सागरे हो, देखत मन लगत चकरे ॥ ५ ॥
खरचत अनि दूध घीव, दधि माखन बड़ जीव,
लखपनि कडोरे सबजी बागान फूल,
सोहत सुन्दरे हो, देखत मन लागत चकर ॥ ६ ॥
लागत हैं कनेकसन, कहत "सेख अलिजान",
बम्बा सर करे, गांधी महाराज छाज,
बरनित सगरे हो, देखत मन लागत चकरे ॥ ७ ॥[२८]

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव यों तो सारे भारत पर पड़ा, पर छोटानागपुर में महँगाई को बढ़ाने में इस युद्ध का विशेष योग रहा। इतना ही नहीं छोटानागपुर के विभिन्न क्षेत्रों में सैनिकों के अड्डे रखे गए, जिनके कारण यहाँ के लोगों के सामने अनेक प्रकार की नई समस्याएँ उठ खड़ी हुईं। "रेजिमेंट के आर्डर" के सामने यहाँ के अच्छे-अच्छे लोग काँपा करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय छोटानागपुर की जो दुर्गति हुई, उसका बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्रण शेख अलीजान ने इस गीत में प्रस्तुत किया है—

पहुँचल देखु अइसन दिन, सबकर सेखि भेलक हीन,
कोई नहीं उबरे, राजा जमींदार गरीब,

२८. नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, पृष्ठ १।

झंखत घरे घरे हो, मिलत चाउर डेढ़ सेरक दरे ॥ १ ॥
महँगी बढ़े सुबह शाम, बड़े-बड़े करें कुलिक काम,
रेजिमेंट ओडरे, अइसन दुख छोटानागपुरे हो
मिलत चाउर डेढ़ सेरक दरे ॥ २ ॥
छव सात आना मिलत रेट, चौकिदार में खटात मेट,
जहाँ तहाँ काम परे, राज बढ़ि के देत समान
गरीब सब डरे हो, मिलत चाउर डेढ़ सेरक दरे ॥ ३ ॥
सब चीज केर होवल टान, बुझि देखे "सेख अलिजान"
दूना दुख परे, चिंता भेल काचा उमरे हो
मिलत चाउर डेढ़ सेरक दरे ॥ ४ ॥[२९]

सैनिकों के शिविर शहर तथा गाँव सभी क्षेत्रों में स्थापित किए गए। इससे गाड़ियों का आवागमन बढ़ गया, जिसके सम्बन्ध में शेख अलीजान ही दूसरे गीत में कहते हैं—

सरकार केर पसन्द भेल, मोटर देखु हरेक मेल,
छोटानागपुरे, का शहर का देहात,
समझत नहीं परे हो, मन बेहाल बिच में का करे ॥ १ ॥
हलचल रामगढ़ राँची, बिच में कइसे इजत बाँची
नामकोम डेरा गिरे, कय सौ गाड़ी नहीं सुमार
चलत रोड परे हो, मन बेहाल बीच में का करे ॥ २ ॥[३०]

द्वितीय विश्वयुद्ध ने छोटानागपुर को महँगाई, भ्रष्टाचार तथा मुद्रास्फीति प्रदान किए। फौजी जवानों ने यहाँ के जीवन की नीति को पतित तथा गँदला बना दिया—

पलटन सब धन लूटे,
मोटर साइकल लोरी
जेकर में भरी भरी
गाँव-गाँव सब लूटे
पैसा कही कागज के छीटे
पलटन सब धन लूटे।[३१]

२९. नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, पृष्ठ २।
३०. नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, पृष्ठ २-३।
३१. केदारनाथ पाठक, आदिवासी, १५ अगस्त, १९६४, पृष्ठ, ३४।

इतना ही नहीं इस विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप यहाँ के लोगों ने "कंट्रोल" का परिचय प्राप्त किया, जिस कंट्रोल में नमक, तेल, कपड़ा, धान तथा चावल आदि सभी दुर्लभ हो गए—

समतें दु हाजार साले हलचल मचल रे
दुनिया आकाल भेला, जुद्ध में पलटन बोम्बा छोड़ल रे ॥ १ ॥
गाँव के गाराम पीछे भुलन्टी निकसाचल रे,
दुनिया आकाल भेला, सए पाचास लिख आसाम भेजल रे ॥ २ ॥
नोन तेल कन्ट्रोल भेल कपड़ा महँगा भेल,
दुनिया आकाल भेला, धान चाउर सब कोन बटें गेल रे ॥[32]

द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया, पर वचन के अनुसार अंग्रेजों ने भारत को स्वतंत्र नहीं किया। फलतः देश में रोष की एक नई लहर फैल गई। स्वतंत्रता-संग्राम ने जोर पकड़ा। स्वतंत्रता के इस संग्राम में अनेकों की जानें गईं। किसी का सुहाग लुट गया। किसी का लाल छिन गया और बिछड़ गया किसी बहन का भाई। अंततः भारत के सपूतों की आहुति ंग लाई। अंग्रेजी साम्राज्य को स्वतंत्रता के दीवानों के सामने झुकना पड़ा और १५ अगस्त १९४७ को पराधीनता की बेड़ियाँ टुकड़े-टुकड़े हो गईं और भारत की जनता स्वतंत्र हो गई—

आजादी मिलल बड़ भारी, सुनु नर नारी ॥ १ ॥
अढ़ाई सौ साल छाई विदेशी जाल,
निशिदिन करैं अत्याचारी ॥ २ ॥
लाख विधि तड़पालैं, बम गोला बरसालैं,
भारत में दुख भेल भारी ॥ ३ ॥
नर-नारी लाख मिली बलिदानी शुली लेली
कबहु न हिम्मत हारी ॥ ४ ॥
बड़े-बड़े नेतागण, तजलैं, तन-मन-धन
सपनों में धीरज न हारी ॥ ५ ॥
वटेश्वर कहे सब, आजादी न भूला अब,
कर्त्तव्य जान करु रखवारी ॥ ६ ॥[33]

स्वतंत्रता तो मिल गई, पर कैसे? इस सम्बन्ध में लक्ष्मण राम गोप की यह रचना अविस्मरणीय है—

३२. लक्ष्मण सिंह बड़ाईक, नागपुरिया गीत पचरंगी, पृष्ठ ३।
३३. वटेश्वरनाथ साहु, लोकगीत, पृष्ठ १४।

जब-जब दुनियाँ, में दुःखदायी राजा भेलैं,
तब-तब भगवान ले लैं अवतार कि दुनियाँ में
देलैं दुःख से छोड़ाये कि दुनिया में ॥ देलैं ॥ १ ॥
सत युग हरिश्चंद्र लेलैं अवतार हो,
काया के बेची राजा, सत्य के बचाय कि दुनियाँ में,
देलैं धरम बचाय कि दुनियाँ में ॥ देलैं धरम ॥ २ ॥
त्रेता में रामचंद्र ले लैं अवतार हो
रावण के मारि करि धरती उधारे कि दुनियाँ में
दुःख संत के मेटाये कि दुनियाँ में ॥ दुःख ॥ ३ ॥
द्वापर में कृष्णचंद्र ले लैं अवतार हो
कंस के मारी करी असुरे संहारे कि दुनियाँ में
देलैं जुलुम छोड़ाय कि दनियाँ में ॥ देलैं ॥ ४ ॥
कलकी में गांधी बाबा ले लैं अवतार हो
चरखा चलाये बाबा ले लैं तो सोराजे कि दुनियाँ में
दे लैं गोरा के भगाय कि दुनियाँ में ॥ देलैं गोरा ॥ ५ ॥
लछुमन कर जोरी, कहत विनय करी
भारत के सब जाति मति करु रारी कि सीनाजोरी,
भोगु पुरुन सोराजे करि हरि हरि ॥ भोगू पुरुन ॥ ६ ॥[34]

लोग आजादी का अर्थ गलत न समझ बैठें, इसलिए नईम मिरदाहा ने अपनी रचना "आजादी का संदेश" में इसका स्पष्ट अर्थ बताया—

आजादी कर बात सुनु, मंगल मनाय लेउ।
हिन्दुस्तानी भाई सब, गला मिलाय लेउ ॥
नावा-नावा नाबामत, सब कोई अपनाय लेउ।
आपन देशक लाज राखु, झंडा फहराय लेउ ॥
बढ़ाऊ तिरंगाक शान, जन गन गाय लेउ।
सन सैंतालीसक बात, मन में बैठाय लेउ ॥
हम हकी भारतवासी, एकता बनाय लेउ।
आईझ खुशीक दिन आहे, हिली-मिली खाय लेउ ॥

३४. नागपुरिया गीतावली, पृष्ठ १३।

छुवा-छूतक भेद-भाव, दिल से हटाय लेउ।
इसन बात बोलु भाई, सबके रिझाय लेउ॥[३५]

और पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस से तिरंगा आकाश में लहराता आ रहा है, जो हमें अनवरत यह संदेश दे रहा है—

केशरिया रंग कहै राखू वीर विचार,
यदि देशे आँच आय देहू पल में पछार,
एही है भारत देश सब जनक प्राण अधार,
गोइ केशरिया······
बीचे फरफर फहरत पटी सादा रंग,
कहैं सात्विक विचारे निभू सब कर संग,
एरी जिंदगी में सत्य अहिंसा के न करु भंग,
गोइ बीचे······
बीचे सोहे अशोक चक्र घन,
कहैं दिनोदिन बढ़ी उद्योगीकरण,
एरी प्रगति पथे नहि रुकी हमर चरण,
गोइ बीचे······
नीचे हरियर पटी कहैं जान,
है हामर देश कृषि प्रधान,
एरी बसुधा के छवि हरियर मोहि सबके प्राण
गोइ बीचे······[३६]

(घ) छोटानागपुर—स्वतंत्रता के पश्चात् :—

उन्नीस सौ सैंतालीस सने, पंद्रह अगस्त शुक्रवार दिने
होवलैं बापू मगने, फिरंगी भागलैं जने-तने
विदथी होलैं विना रने, फिरंगी भागलैं जने-तने।[३७]

पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को भारत स्वतंत्र हो गया। अंग्रेजों का साम्राज्य भारत से समाप्त हो गया। भारत के लोगों ने चैन की साँस ली और

३५. आदिवासी, स्वतन्त्रता दिवस विशेषांक १९६७।
३६. बलदेव प्रसाद साहु, आदिवासी, १५ अगस्त, १९६६, पृष्ठ ६४।
३७. नईमउद्दीन मिरदाहा, नागपुरिया गीत, भाग ५-६, पृष्ठ ४।

अपनी प्रिय कांग्रेस पार्टी से लोकप्रिय सरकार बनाने को कहा। अंग्रेजों के काले शासन के स्थान पर कांग्रेसी राज्य का श्री गणेश हुआ—

ऐ दैया भारत राजा भेला कंगरेसी,
नम्बर देखु बेसी, भारत राजा भेला कंगरेसी ॥ १ ॥
लिगवाला अति साज, सबे मिली चाहे ताज,
झारखंड भेल आदिवासी, नम्बर देखु बेसी,
भारत राजा भेल कंगरेसी ॥ २ ॥
सुभाष आजाद जवाहर, पटेल गांधी राजेन्दर
चाइल चलैं आपन देसी, नम्बर देखु बेसी,
भारत राजा भेल कंगरेसी ॥ ३ ॥
हिन्दु मुसलमान भाई, मेल से रहना होई,
पाकिस्तान जिना के फरमासी, नम्बर देखु बेसी,
भारत राजा भेल कंगरेसी ॥ ४ ॥[३८]

स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरांत छोटानागपुर की जनता भी स्वर्णिम स्वप्न देखने लगी कि स्वराज्य में ऐसा होगा और ऐसा नहीं होगा। सभी अपनी कल्पना की बातें करते। लोगों को कांग्रेस से बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। लोग समाज़वाद की भी बातें सोचने लगे। यहाँ के ग्रामीणों ने स्वराज्य की जो कल्पना की थी, उसे "लछुमन" ने अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है—

कठिन गोरमेंट बुधि लाई हो
सबे भाई से काम कराई।
जुगती लागाई गोरमेंट फील तो बनाई
दिने टाका हाजारी लगाई हो
सभे भाई से काम कराई ॥ १ ॥
महँगी देखी गोरमेंट तलब बढ़ाई
काम देखि सभे जमा होई हो,
सभे भाई से काम कराई हो।[३९]

पर "लछुमन" की तीव्र दृष्टि भविष्य को भी टोह लेती है। उन्हें भय है कि यदि लोगों को अधिक पैसे मिलेंगे, तो यहाँ के लोग उन्हें शराब पीने में बहा देंगे।

३८. शेख अलीजान, नागपुरिया गीत छत्तीसरंग, पृष्ठ १६।
३९. गीत पचरंगी, पृष्ठ १५-१६।

शराव पीकर वे कुल-शील को भी भूल जायेंगे, अतः "लछुमन" आगे कहते हैं—

भठी घरे जाई, मद पीके मताई
बोमी करे सबसे छुवाई हो,
समे भाई से काम कराई ॥ ३ ॥
सब नर नारी कुल सील के डुबाई
समुझि "लछुमन" पसताई हो
समे भाई से काम कराई ॥ ४ ॥*

पराधीनता से मुक्त होने का हमारा उत्साह ठंडा भी नहीं हुआ था कि भारत के ऊपर एक वज्रपात हो गया। ३० जनवरी १९४८ को वापू की हत्या कर दी गई और सारा संसार शोकमग्न हो गया—

काहे मलीन मुँह दीसत संसार,
तब सखी भाई क्रिया लगिन दुनिया अंधार ॥ १ ॥
देहली दरद देखि मलीन संसार,
तब सखी भाई गांधी विना दुनिया अंधार ॥ २ ॥
कोपिनी कसि कइसे मेटल अंग्रेजी राइज,
सखी भाई आजु कहाँ गांधी महाराज ॥ ३ ॥
पापी मुदैया नथू, देहली का शहरे जाई,
सखी भाई तकि देल गोलिया चलाई ॥ ४ ॥
नेहरू के दये राज आपने चललैं आज,
सखी भाई सरगहिं गांधी महाराज ॥ ५ ॥
कांदत देशे देशे, सुनु "धनी" कहत ऐसे,
सखी भाई मानि चलु गांधी उपदेश ॥ ६ ॥[४०]

जब भारत से अंग्रेजों का साम्राज्य समाप्त हो गया, तो लोगों ने राजा तथा जमींदारी प्रथा को भी समाप्त कर डालना चाहा। सरदार पटेल ने केन्द्र में रहकर राजा-रजवाड़ों को भारतीय संघ का अंग बना लिया। इधर विहार में कृष्ण वल्लभ सहाय के प्रयास से जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ—

भोट के भमना गेल, मेम्बर अपना मेल,
देखु सखी पलटल जात से जवाना रे ॥ १ ॥

*गीत पचरंगी, पृष्ठ १६।
४०. नागपुरिया जेबी संगीत, पृष्ठ २६।

कृष्ण वल्लभ सहाय, कहत है समुझाय,
आये गेला प्रजाक राइज, मेटतउ झंखना रे ॥२ ॥
बुझा-बुझी करि जाय, सभे देलैं एके राय,
जिमींदारी राजाक राइज, चाहि उठि जाना रे ॥ ३ ॥
मिली राजा जिमींदार, बुझावलैं बारे बार,
दरबारे नाहि चलल एकहू बहाना रे ॥ ४ ॥
जिमिदारी उठि गेल, राजाक राज टुटी गेल,
प्रजा प्रजा प्रजा राजा, प्रजा के बुझाना रे ॥ ५ ॥
गांधी कर आँधी जोर, चले लागल चहुँ ओर,
सुनु "घनी" गांधी नाम सगरे रटना रे ॥ ६ ॥[४१]

प्रजा-प्रजा और प्रजा ही राजा भारत में कैसे संभव हो ? इसके लिए नेताओं ने एक स्वर से कहा कि देश में शिक्षा का द्रुतगति से प्रचार किया जाना चाहिए ताकि भारत का एक-एक व्यक्ति शिक्षित हो जाय। शिक्षा का यह संदेश छोटानागपुर के गांवों में पहुँचा। फलतः लक्ष्मण राम गोप गा उठे—

उठु उठु भाई सब मति करु देर रे
बितल समय नहीं फिरे रे ॥.......
पढ़ी लेहु गुनी लेहु करु तो गेयान रे
औरो बनु पंडित महान् रे ॥[४२]

कांग्रेसी सरकार ने गाँव-गाँव में स्कूल का प्रबन्ध कर दिया—

अवसर अब इसन भेल
गाँवे-गाँवे इसकूल देल कांग्रेस सरकारे।[४३]

शिक्षा का महत्त्व बड़ी तेजी से बढ़ने लगा। शिक्षा की बढ़ती हुई महिमा को देखकर शेख अलीजान ने तो यहाँ तक कह दिया—

होरी जे नहीं बालक पढ़ावत हो माता पिता बएरी,
सभा मधे सोभा नहीं पावत, हँसे मधे बकुरी।
जे नहीं बालक पढ़ावत ॥ १ ॥[४४]

४१. नागपुरिया जेवी संगीत, पृ० २५-२६।
४२. नागपुरिया गीतावली, पृष्ठ १२।
४३. अम्बासघनी (हस्तलिखित प्रति से)।
४४. फगुआ गीत, भाग ३, पृष्ठ ३-४।

शेख अलीजान की बात लोगों के मन में उतर गई। "हंसों के बीच बगुला" बनकर रहना यहाँ के लोगों को बुरा लगा। अब सभी हंस बनने की तैयारी में जुट गए। इस दौड़ में वृद्ध स्त्री-पुरुष भी पीछे नहीं रह सके—

बुढ़वा के संगे बुढ़ी ठुनकते जाय,
हम्हों पढ़े जाब चलू नाम लिखाय।
× × ×
हमरे कर जोड़ा-पाड़ी, सिखलैं सब लिखा-पढ़ी
अँगुठा निशान अब केउ न लगाय।
हम्हों पढ़े जाब चलू नाम लिखाय।[४५]

केन्द्रीय सरकार ने भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करना चाहा। इसके लिए राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया गया। इस आयोग का आगमन छोटा-नागपुर में भी हुआ। आयोग के सामने यहाँ के निवासियों ने अपनी माँगें पेश की कि वे अपनी मातृभूमि का कोई भी हिस्सा उड़ीसा या बंगाल राज्य में नहीं मिलने देंगे। सरायकेला थाना उड़ीसा राज्य में मिला दिया जाएगा यह अफवाह चारों ओर फैल गई। इसके विरोध में सभाएँ हुई। लोग दिल्ली गए और बिहार सरकार ने भी अपनी "दावी" (दावा) प्रस्तुत की। सरायकेला बिहार राज्य में ही रह गया। इस सूचना को पाकर लोग नाच उठे। चारों ओर उत्सव मनाए गए—

होइलो उड़िसा राज सोराइकेला थाना रे,
खोबोर सुनिये दोदो लागिछे भाभोना रे ॥ १ ॥
सिंगभूमे केना बेचा जोहि होबे माना रे,
छुटिबे से कालीमाटी चाईबासा जाना रे ॥ २ ॥
गाँये गाँये सोमा कोरे कोरिछे मोंत्रोणा रे,
उठिलो विरोधो वाद के कोरिबो नाना रे ॥ ३ ॥
बिहारी कोरिलो दावी, दिये उजुर नाना रे,
आरोजी कोरिलो प्रजा, दिल्ली ते रावाना रे ॥ ४ ॥
दिल्ली से उठिलो मिमिल, हुकुम भेलो जाना रे,
सोराईकेला चाईबासा सोदोरे रो थाना रे ॥ ५ ॥
आनोंदो उल्लासे, "धोर्ना" बाजिलो बाजोना रे,
कुमारी कोरालेन सुखे बोड़ो पीना खाना रे ॥ ६ ॥[४६]

४५. पाण्डेय दुर्गानाथ राय, आदिवासी १२ नवम्बर १९६४, पृ० १८।
४६. धनीराम बक्शी, नागपुरिया जेबी संगीत, पृ० ३४-३५।

अंग्रेजो के शासन-काल मे भारत की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई थी। यहाँ की सारी दौलत इंगलैंड पहुँच गई थी, अतः नूतन भारत के पुनर्निर्माण के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गईं। प्रथम पंचवर्षीय योजना मे कृषि पर विशेष बल दिया गया। इसके उपरांत द्वितीय पंचवर्षीय योजना प्रारंभ हुई, जिसका संदेश छोटानागपुर के गाँवों में विष्णुदत्त साहु ने यों पहुँचाया—

सुनु भाइ, सुनु भाइ, पाँच बछर केर,
दूसर जोजना केर, समय आलक भाइ रे !
पहिल जोजना तो, सफल होलक सुनु,
दूसर जोजना केर, समय आलक भाइ रे !
कल कारखाना बढ़ी, अन धन खूब बढ़ी,
मोटर जहाज रेल, ठिने-ठिने चली रे !
सेहे लगी कहथी, दूसर जोजना के,
तन मन धन ले, मदैत करु भाइ रे !
दूसर जोजना के, सुफल होलहें जानू,
हमरेकर दरिदर, दूर भागी भाइ रे ![४७]

छोटानागपुर का औद्योगीकरण प्रारंभ हो गया। हटिया में भारी मशीन के कारखाने के निर्माण मे हजारों व्यक्ति जुट गए। हटिया की इस कायापलट को देखने के लिए लोग सैंकडो की संख्या में हटिया पहुँचने लगे। कवि भारत नायक ने भी हटिया कारखाना के निर्माण को समीप से देखा—

हटीया कारखाना के पालान चलु देखन भाई ।।
कारखाना के देखी समान करे पारी नहीं अनुमान
कुली रेजा लागलै अनठेकान, चलु देखन भाई
हटीया कारखाना के पालान।
हडसेर में डेम बँधाय, धुरवा में डीपु बनाय
सतरंजी में मीसीन लगाय, चलु देखन भाई
हटीया कारखाना के पालान।
लटमा से सडक सोधाय, पहान टोली आनी मीलाय
जगनाथजी रहें उँचे असथान, चलु देखन भाई
हटीया कारखाना के पालान।
सुलकी कुछ रहे दूर लार्टन मीरे कईलानपुर
कब होवी हीनु भुसूर से मिलान, चलु देखन भाई

४७. मादर के बोल पर, पृष्ठ ९-१०।

हटीया कारखाना के पालान।

भारत कहे अघाय देखी के सब मन लोभाय

हीनी हारी जानै भगवान चलु देखन भई

हटीया कारखाना के पालान।[४८]

अब हटिया के कारखाने ने अपना वास्तविक स्वरूप लगभग प्राप्त कर लिया है। हटिया नामक छोटे-से गाँव ने एक बड़े नगर का रूप ग्रहण कर लिया है। यहाँ अनेक प्रकार के लोग बसते हैं, अतः हटिया में नई संस्कृति देखी जा सकती है। हटिया की रौनक चकचौंध करने वाली है। नईमउद्दीन मिरदाहा ने इसी हटिया का रंगीन चित्र बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है—

हटिया शहर बड़ भारी भाई चलत ट्रेन कार गाड़ी

हटिया शहर बड़ भारी भाई चलत ट्रेन कार गाड़ी ॥ १ ॥

भवन बनावैं ईंट—सेकर में गदीया सीट

बहुत बढ़ल ठीकेदारी भाई हटिया शहर बड़ भारी

चलत ट्रेन कार गाड़ी भाई—हटिया शहर बड़ भारी ॥ २ ॥

बिजली से होवे फिट—देखु फैसन आउर जीट

बाबू भईया रहैं दिकदारी भाई—हटिया शहर बड़ भारी

चलत ट्रेन कार गाड़ी—हटिया शहर बड़ भारी ॥ ३ ॥

किमती लगावैं सेंट—चेहरा में करैं पेंट

नाज नखरा बड़ भारी भाई—हटिया शहर बड़ भारी

चलत ट्रेन कार गाड़ी—हटिया शहर बड़ भारी ॥ ४ ॥

सब्जी में लेवैं मटर—बात बोलैं अटर-पटर

समय दाईन्ज करैं दुराचारी भाई—हटिया शहर बड़ भारी

चलत ट्रेन कार गाड़ी भाई—हटिया शहर बड़ भारी ॥ ५ ॥

राईत जे बजलैं आठ—रेजा कुली धरैं ठाठ

करैं सब सिनेमा के तैयारी भाई—हटिया शहर बड़ भारी

चलत ट्रेन कार गाड़ी भाई—हटिया शहर बड़ भारी ॥ ६ ॥

नईम जे देखल हाल—देखी के होवल बेहाल

लिखत कठीन विचारी भाई—हटिया शहर बड़ भारी

चलत ट्रेन कार गाड़ी भाई—हटिया शहर बड़ भारी ॥ ७ ॥[४९]

४८. भारत का नया चमत्कार, पृष्ठ ३।

४९. नागपुरिया गीत, पाँचवाँ एवं छठा भाग, पृ० २-३।

गाँवों में पंचवर्षीय योजनाओं को कार्यान्वित करने का भार प्रखण्ड विकास पदाधिकारियों (ब्लॉक डेवलेपमेंट ऑफिसर) को दिया गया, जिन्हें लोग बी०डी०ओ० के नाम से जानते हैं। सड़क, कुआँ, तथा सिंचाई की व्यवस्था के लिए ग्रामीणों को ऋण दिए जाने लगे और चारों ओर बी०डी०ओ० का नाम गूँजने लगा—

गुँजे बी०डी०ओ० कर नाम काम खुले घुना धाम
गाँवे गाँवे रास्ता बनावैं गोईं साजैन मिली जुली
रुपीया गनावैं गोईं साजैन मिली जुली रुपीया गनावैं ॥ १ ॥
देहु बी०डी०ओ० साहब कुछ तो रुपीया
काम करी कुली केर कलपथीं हिया गोईं साजैन
कोईं नहीं पंथ के चलैया गोईं साजैन ॥ २ ॥
गाँवे गाँवे कुवाँ तालाब खोदथैं खोदवैया
कोईं कहें फेंईस गेलीं खाली जहर के पुड़िया
गोईं साजैन कोईं नहीं हमके बचैया गोईं साजैन ॥ ३ ॥
खने खने नापी जोखी करथैं करैया
संगे संगे कर्मचारी होवथैं घेरैया गोईं साजैन
कोईं नहीं बात के मनैया गोईं साजैन ॥ ४ ॥
बहुत खुललैं काम बोर्ड में लिखालैं नाम
जीप बैठी गाड़ी के उड़ालैं गोईं साजैन
करैं भलाई नाम जगालैं गोईं साजैन ॥ ५ ॥
कहत नईन बाबू—गीतिया बनाली आजू
पंचवर्षीय योजना के बारे गोईं साजैन
बिजली चमकी घरे घरे गोईं साजैन
बिजली लगातौ घरे घरे ॥ ६ ॥[५०]

और देखते-ही-देखते तृतीय पंचवर्षीय योजना भी प्रारंभ हो गई। पिछली दो योजनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए पाण्डेय दुर्गानाथ राय तृतीय पंचवर्षीय योजना का स्वागत करते हैं—

मोयँ तो खुसी भेलों भारी······
बिकास जोजना उपकारी, भाईं
मोयँ तो खुसी भेलों भारी······

५०. नागपुरिया गीत पहला एवं दूसरा भाग पृष्ठ ८-९।

डीहे डीहे गाँवे गाँवे, बाँध-कुवाँ ठाँवे-ठाँव
मोयँ तो खुशी भेलों भारी···
सड़क-इस्कूल बिस्तारी भाई, मोयँ तो···

खेती के उत्तिम नीति, सीखली जपानी रीति
मोयँ तो खुसी भेलों भारी···
बढ़ि गेलैं अच्छा पैदवारी भाई, मोयँ तो···

रोगे दुखे नखे डर, ब्लौके आहैं डाक्टर
मोयँ तो खुसी भेलों भारी····
बिना दामे छोड़ावैं बीमारी भाई, मोयँ तो····

नसल सुधारे अच्छा, बढ़ि गेलैं बाछी-बाछा
मोयँ तो खुसी भेलों भारी····
गाय भैंस भेलयँ दुधारी भाई, मोयँ तो····
तीसर जोजना परे, खेती-बारी देखू जोरे
मोयँ तो खुसी भेलों भारी
सिच्छा समाज के सुधारी भाइ, मोयँ तो···[५१]

भारत प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा था। यहाँ की शांतिप्रिय जनता अहिंसा तथा शांति पर विश्वास करती रही। किसे पता था कि अहिंसा के कथित पुजारी चीनी ही हमारे ऊपर आक्रमण कर बैठेंगे? अक्टूबर १९६२ में एकाएक भारत की उत्तरी सीमाओं पर चीनी हमले प्रारंभ हो गए। हमारा रक्षक हिमालय भी भारतीय जनता के साथ-साथ आंदोलित हो उठा। चीनियों को अपनी पवित्र मातृभूमि से निकाल बाहर करने का संकल्प छोटानागपुर के लोगों ने भी किया। इसके लिए ईश्वर से प्रार्थनाएँ की गईं—

गिरिधारी हो। आव मुरली खोसल डांडाय ले ले हाथे सुदरसन।
गीता अर्जुन सुनाव भारत जन-गन-मन॥
माया तोड़ हमनी के आईग कूदे सिखाव।
लदाख नेफाय चोर चीन के जनठूरा देखाव॥[५२]

छोटानागपुर के बच्चे, बूढ़े और जवान सभी पाण्डेय दुर्गानाथ राय के स्वर में स्वर मिलाकर गा उठे—

५१. आदिवासी, स्वतंत्रता दिवस अंक १९६४, पृ०-४६
५२. दुखहरण नायक, आदिवासी (कवितांक) ६ फरवरी १९६४, पृ० ४।

चलू तो भाई,
भारती जवान देखब पहलवान, चीन है कैसन बलवान ।
कहू तो आपन देसे, चढ़े कोई देवी कइसे,
आवी काले हमार सीमान देखब पहलवान ।
लोभी लालची अति, चलत चाइल अनति,
माने नहिं आगे के बिधान, देखब पहलवान ।
बाहरी चीकन बोली, भीतरे कठिन छली,
तउलली उकर इमान, देखब पहलवान ।
तन मन धन देके, मारी के भगावब उके,
लड़ब चलू चढ़ी के बीमान, देखब पहलवान ।
भारत आजाद राइज, छोट नहीं होवी आइझ,
मैक मोहन-रेखा है नीसान देखब पहलवान ।
कहत "दुरगानाथ" सोना-चाँदी-जेवरात,
राखी के का करब तो इ जान, देखब पहलवान ।[५३]

सारा राष्ट्र चीनी आक्रमण से जूझ रहा था, किंतु, दूसरी ओर कुछ ऐसी समस्याएँ भी थीं, जिनके कारण जनता काफी परेशान थी । ऐसा लग रहा था कि सन् १९६२ सिर्फ "हानियों का वर्ष" है । नईमउद्दीन मिरदाहा ने स्वयं अपनी आँखों सन् १९६२ को जैसा देखा था, वह नीचे प्रस्तुत है—

ईस्वी सन् बासठ के सुनहु कहानी
जेने देखु तने हानि-हानि गोई साजैन
रावैं जन हर्दये नखे पानी गोई साजैन ॥ १ ॥
रोपा रोपली सब बहुते जपानी
पौधा पुकार करैं थोड़ा देहु पानी गोई साजैन
जने देखु तने हानि-हानि गोई साजैन ॥ २ ॥
कृषक के हाल न पुछु कहाँ तक बखानी
झंखत धूप देखी हये अकाल निशानी गोई साजैन
जने देखु तने हानि-हानि गोई साजैन ॥ ३ ॥
सेठ जे साहूकार बोले निठुर बानी

५३. आदिवासी (कवितांक) ६ फरवरी १९६४, पृ० ६ ।

सस्ता दर चावल नहीं चलै सीना तानी गोई साजैन
जने देखु तने हानि-हानि गोई साजैन ॥ ४ ॥
पिन्धे ले कपड़ा नहीं खाब का लानी
छौवा पुता दीक करै करी का धरीनी गोई साजैन
जने देखु तने हानि-हानि गोई साजैन ॥ ५ ॥[५४]

चीनी आक्रमण के पश्चात् देश में महँगाई बढ़ती ही गई, जिसे रोक पाने में सरकार सर्वथा असफल सिद्ध हुई। इस मँहगाई के कारण गरीबों की कमर टूट गई। उन्हें जीवन के लिए नितांत आवश्यक चीजें भी नहीं मिलने लगीं। छोटानागपुर के लोगों ने इन गाढ़े दिनों को कैसे व्यतीत किया, उसका एक कारुणिक चित्र नीचे अंकित है—

सुनु तो नागपुरी भाई, इसन समय आय गेल।
रुपये सेर चाउर बिके, बहुत महँगी भेल ॥ १ ॥
साग सब्जीक भाव, बहुत जे बईढ़ गेल।
पियब कैसे चाह अब, चिनी तो कन्ट्रोल भेल ॥ २ ॥
डालडा, करुवा तेल, घीव से भी बईढ़ गेल।
जाय रहों गूर किने, माटी तेल सुना भेल ॥ ३ ॥
कपड़ा का जाब लेवे, नर से आगे नारी गेल।
एक से एकैस कहैं, इसन दोकानदारी भेल ॥ ४ ॥
धान मड़ुवाक भाव, उरीद से टईप गेल।
आलू सकरकन्दा, बहुत अमृत भेल ॥ ५ ॥
बोदी बराई राहर, एक भाव बिक गेल।
अदना तेतैर लगीन, बहुत जे दिक भेल ॥ ६ ॥[५५]

एक मुसीबत टली, तो देश के ऊपर एक नया संकट आ पड़ा। पाकिस्तान ने भारत के ऊपर आक्रमण किया, पर उसे इस आक्रमण की बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। नागपुरी के कवि बलदेव प्रसाद साहु ने भी यहाँ के लोगों की ओर से पाकिस्तान के समक्ष स्पष्ट कर दिया :—

नंद नन्दन वन है हामर कश्मीर
सेके लेइ कोन आखिर,

५४. नागपुरिया गीत, तीसरा एवं चौथा भाग, पृ० १९।
५५. नागपुरिया गीत, सातवाँ एवं आठवाँ भाग, पृ० १९।

अच्छा सजनि भाई, कुछ नहि पाइ कोइ करी कतनो ततबीर ॥ अच्छा० ॥
जेग कशमीर रहल भारत संग—
ढ लर कशमीर हमर अभिन्न अंग,
अच्छा सजनि भाई, कौन अयूबक चाल इके करी भंग ॥ अच्छा० ॥
पाकिस्तान चलैं कतनो चाइल
तनिकों नी इहाँ गली दाइल,
अच्छा सजनि भाई, बुभी गेली सभे हँस बकुलक चाइल ॥ अच्छा० ॥
भारती वीर करैं प्रण—
बाँधी मुड़ें पगरी कफन
अच्छा सजनि, भाई अनेनि ठेइब करु देब अनेनि दहन ॥ अच्छा० ॥
आइज है "बलदेवक" कहना
पाकिस्तान छोड़े कशमीरक सपना,
अच्छा सजनि भाई, नहि तो मानब बैरी नम्बर एक अपना ॥ अच्छा० ॥[५६]

ताशकंद में रूस की मध्यस्थता के अन्तर्गत भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अयूब खाँ के बीच समझौता-वार्ता हुई। पर इस समझौते के उपरांत ही भारत के सच्चे सपूत लालबहादुर शास्त्री का वहाँ आकस्मिक निधन हो गया। इस समाचार को सुनकर सारा संसार स्तब्ध रह गया। प्रत्येक भारतवासी इस आघात से रो पड़ा और साथ ही रो पड़े योवनारायण तिवारी—

दस जनवरी आसा छूटल भवन-वासा
लालबहादुर सुरपुर जाई
सुन्दरियो गे विधि आनी जुमाई-सुरपुर…
माघ महीना धरे
दस जनवरी परे
लाल बहादुर सुरपुर जाई
सुन्दरियोगे…
ताशकंद नाम धरे
छैआसठ आई परे
लाल बहादुर सुरपुर जाई

५६. आदिवासी, २ सितम्बर, १९६५, पृष्ठ १४।

सुन्दरियो गे....
कवि कहत गुनी
अचके मरन सुनी
लाल बहादुर सुरपुर जाई
सुन्दरियो गे...[५७]

श्री शास्त्री चले गए, पर उनके द्वारा दिए गए नारे "जय जवान" "जय किसान" आज भी हमारे हृदयों में गूँज रहे हैं—

जय जवान जय किसान, देश के सचा सान, जय-जय वीर महान।
तोहें हेकिस चक्रधारी, तोहें हेकिस हलधारी
तोहें हेकिस परम सुजान,
हिमगिरि विंध्य-शृंग, कृष्ण कवेरी गंग, तरंगित मान।
दुसासन खल मारी, खींचत द्रोपदी सारी,
रक्षा करु चट भगवान,
हाथे धरु सुदर्शन, चीर पुनीत धन, करु मुक्त दान।
नेफा लदाख भूमि, रन कच्छ चूमि चूमि,
उमगत चलू बलवान,
चले जइसे सिंहराज, दर्प बिदीर्न काज, पुलकित प्रान।
देस के माटी सोना, करि देउ कोना कोना,
पसेना के महिमा बखान,
सस्य स्यामला भूमि, हरित भरित पुनि, बने दूतिमान।
तिनरंग सोभा माने, सत्रु जय तेजवाने,
रइग देवइ गोट आसमान,
"केसरी" सत्य बल, नहीं भय नहीं छल, विदित जहान।[५८]

छोटानागपुर के गाँवों में पंचायती राज प्रारंभ हो गया। मुखिया का चुनाव होने वाला है, पर इस चुनाव को देखकर ही यह अनुभव किया जा सकता है कि भारत में प्रजातंत्र का नाटक कितना महँगा और छिछला है। वस्तुतः "वोट" "नोट" के विना संभव नही, अतः इसमें वेचारे मुखिया का क्या दोष—

५७. आदिवासी, १२ जनवरी, १९६७ पृष्ठ २।
५८. प्रो० विसेश्वर प्रसाद "केसरी", आदिवासी, गणतंत्र दिवस विशेपांक, १९६९, पृष्ठ ५८।

भल शुरु मुखीयाक भोट उड़े लागल कागजी नोट
जेके पावैं कहैं उके पोट, भेलैं लहा लोट
चलु तो भाई देखब कैसन भोट, भेलै लहा लोट ॥ १ ॥
समय जब बजे आठ, भोट वाला धरैं ठाठ
हुलैक देखैं पाकीट भेलैं शोट, भेलैं लहा लोट
चलु तो भाई देखब कैसन भोट, भेलैं लहा लोट ॥ २ ॥
किसान, मुरगा छाप उँट चरखा में देलै ठाप
फूलवाला खालैं नाहक चोट, भेलैं लहालोट
चलु तो भाई देखब कैसन भोट, भेलैं लहालोट ॥ ३ ॥
भोट गिनाये गेल, रिजल्ट सुनाईये देल
जीतैं सेकर बात नहीं छोट, भेलैं लहालोट
चलु तो भाई देखब कैसन भोट, भेलै लहा लोट ॥ ४ ॥
साल जब बीती तीन, दिन आवी ओहे फीन
नईम कर दिल में नहो खोट, भेलैं लहालोट
चलु तो भाई देखब कैसन भोट, भेलैं लहालोट ॥ ५ ॥[५६]

सन् १९६७ के आम चुनाव में बिहार से कांग्रेस के पैर उखड़ गए। काँग्रेसी मंत्रि-मंडल के स्थान पर संयुक्त विधायक दल की सरकार बनी, जिसका हार्दिक स्वागत यहाँ की जनता ने किया—

नावा सरकारेग राज, बिहारे बहार आज,
बीज खाद मिलल उधारे,
उपज उपजे चहुँ ओरे ॥
पड़ल अकाल भारी, कुदिन देला गुजारी,
गहम बाजरा गाँवे घरे
बाँटी प्राण सबके उबारे
भूमिकर देला छोड़ी, देखी लोग दुःखे पड़ी,
देवत करजा कम दरे,
करे पूँजी चाम के सुधारे ॥
कुँवा नाला नहर, बाँधावे देला जोर,

५६. नागपुरिया गीत, सातवाँ एवं आठवाँ भाग, पृष्ठ १८-१९।

पानी-कल किस्ती अवोर
बसावत जल-सूत धारे ॥
तैंतिस-सुत्री योजना, व्यर्थ न जातेग सुना,
सहयोग केर आशा केर,
सफल हतेग धीरे-धीरे ॥
करेके आत्म निर्भर, अलप दिन भीतर,
सुख संपन्नता विचारे
कवे आशु सुदिन नेहारे ॥[६०]

संयुक्त विधायक दल की सरकार के सामने सबसे बड़ी समस्या थी—छोटानागपुर के कुछ हिस्सों में प्रस्तुत भयंकर अकाल। इस लोक-हितकारी सरकार ने अकालग्रस्त लोगों के बीच लाल कार्ड बाँटकर उन्हें भूखों मरने से बचा लिया—

हाय रे हायरे सरकार हितकारी महँगी नें करे उपकारी
सरकार हितकारी महँगी नें करे उपकारी ॥ १ ॥
लाल काड करे जारी असहाय के राशन फिरी
करे सेवा सोचो विचारी खुश होवलें जनता सारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ २ ॥
रिलीफ के काम जारी करें सब नर-नारी
माय छौवा पारी-पारी कोई न रहलें तो बेकारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ ३ ॥
बाँध पोखेर भेल तैयारी रुपया बाटत भारी
तनीको न करे देरी बिहन धान होवे बटवारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ ४ ॥
लगान में कमी करी गरीब के देलें तारी
अब समय आय घुरी नईम गावत विचारी
सरकार हितकारी महँगी में करे उपकारी ॥ ५ ॥[६१]

पर सामान्य जनता कमर तोड़ महँगाई से परीशान थी। इस महँगाई ने लोगों को क्या दिया और लोगों से क्या लिया इसका मार्मिक विवरण नईमउद्दीन मिरदाहा ही आगे प्रस्तुत करते हैं—

६०. आशुतोष, आदिवासी, १२ अक्तूबर १९६७, पृष्ठ ११।
६१. नागपुरिया गीत, नवाँ एवं दसवाँ भाग, पृष्ठ २३-२४।

सरसठ कर महँगी आवे न भुलाय के
सबक मन रहे कुमलाय के एहे भाई ॥ १ ॥
का गरीब का अमीर एके पंथ सिधाय के
सोचैं सब बहुते अकुलाय के ॥ २ ॥
मीले न पईचा चाउर जियब का खाय के
है से भी रहैं मटीयाय के ॥ ३ ॥
मीलो बाजरा गहुँम सीराय गेल बेचाय के
बहुत रहलैं पछताय के ॥ ४ ॥
सेठ जे साहूकार हँसे मुसकाय के
एहे दिन हेके तो कमाय के ॥ ५ ॥
बीस कर दाम दस लागे तेउ में कतराय के
कोई तो बेचलैं कंगन अंग से उतराय के
लीखालै कागज पचास बनाय के ॥ ६ ॥
कोई तो हसलैं सस्ता पाय के ॥ ७ ॥
कोई खालैं सूजी रोटी छिलका पकाय के
कोई खालैं खूखड़ी सिझाय के ॥ ८ ॥
कोई खालैं राहैर दाईल घीव से बघराय के
कोई खालैं साग डबकाय के ॥ ९ ॥
कोई पिन्धे पैंट कमीज लोहा लगाय के
कोई पिन्धे करैया सकताय के ॥ १० ॥
कोई पिन्धे मोजा जूता पालीस लगाय के
कोई चलैं खरपा लटकाय के ॥ ११ ॥
कोई टड़े मोटर गाड़ी पेट्रोल जराय के
कोई जियैं रिक्सा चलाय के ॥ १२ ॥
कोई घुरैं पका सड़क धोती फहराय के
कोई चले झेलंगी जूराय के ॥ १३ ॥
कोई रहैं पका घरे छत उठाय के
कोई रहैं कुम्बा छराय के ॥ १४ ॥
कोई सुतैं पलंग पर गदोया डिसाय के
कोई सुतैं बोरा पसराय के ॥ १५ ॥

कहे नईम इसन रीत राखु मइत अपनाय के
राखु प्रभु सबके सम्मराय के ॥ १६ ॥[६२]

यह महँगाई अन्नाभाव और जीवन की अन्य समस्याएँ कैसे दूर की जा सकती हैं ? इनका एक ही उत्तर है—कृषि का आधुनिकीकरण तथा परिवार-नियोजन—

से दिना सेमिनार में
सुनली
सबसे बगरा बाढ़लक है
देशकर आबादी।
आबादी माने
छउवा-पूता।
जे हिसाब से
छउवा-पूता होवथे
एक दिन
केकरो खायेक-पीयेक ले
नी मिली।
अरर फिर सोचू
आदमी कर
कि छगरी भेड़ी कर
चँगना कर
मइला कीड़ा कर।
छगरी भेड़ी चँगना
मइल कीड़ा इसने
गेदरगेसा होयला
खायला-बचेला
मरेला।
मुदा भाई मने
आदमी कर
छउवा-पूता
आदमी नियर।

६२. नागपुरिया गीत, नवाँ एवं दसवाँ भाग, पृष्ठ २४-२५।

ठीक हिसाब से
वढ़ाय सकव
खिलाय-पिलाय
पढ़ाय-सकव !
सेके भाई मने
सोचू समझू वेलू—
छउवा-पूता
आदमी कर
कईठो ?
हाँ, हाँ, ठीक कहली
वेसी से वेसी
तीन ठो, चार ठो !
इके कहँना
परिवार नियोजन !
तो परिवार नियोजन करु।[६३]

आज के प्रत्येक शिक्षित तथा अशिक्षित व्यक्ति की अभिलाषा सरकारी नौकरी की प्राप्ति है, पर जिन्हें सरकारी नौकरी मिल गई है वे अपनी सरकारी नौकरी से ही परीशान है। वास्तव में सरकारी नौकरी एक ऐसी चीज है जो सवको रास नहीं आ सकती। एक ऐसे सरकारी कर्मचारी की व्यथा सुनिए जो अपनी नौकरी नहीं, नौकरशाही से परेशान है—

इसन सरकारी काम छुटी जातौ मातृ धाम।
तनीको न मिलतौ आराम गोंई साजँन
छने-छने होवे वदनाम गोंई साजँन ॥ १ ॥
वी०डी०ओ०, एस०डी०ओ० मिली देलैं कठिन काम
जाहूँ भाई कर्मचारी करु इसन काम
गोंई साजँन जग में वाजतौ हामर नाम गोंई साजँन ॥ २ ॥
ऑडर जव भेल जागि-घुमें लागें कर्मचारी
भूखे पियासे आरी आरी-गोंई साजँन

६३. शशिकर, आदिवासी, २६ जुलाई, १६६५, पृष्ठ ५।

तेऊ नही खुश करे पारी-गोई साजैन ॥ ३ ॥
आलै इन्सपेक्टर साहब-देख के तैयारी
ख्वाब जमालै कठिन कलम देलै मारी
गोई साजैन कर्मचारी का करे पारी गोई साजैन ॥ ४ ॥
बड़े-बड़े औफिसर देखै नही एको सर
छोटकोवैन बोलै फरफर गोई साजैन
करे रिपोर्ट देखी के अवसर गोई साजैन ॥ ५ ॥
कहत नईम बाबू-देखु सुनू बडा बाबू
हमके न लागौ एको डर-गोई साजैन
घरवों हम घर के डहर गोई साजैन ॥ ६ ॥[६४]

सन् १८५७ के असफल सैनिक विद्रोह के पश्चात् सन् १८९५ में बिरसा मुंडा ने एक आंदोलन अंग्रेजो, जमीदारों तथा ईसाई पादरियों के विरुद्ध प्रारंभ कर यह नारा बुलन्द किया था—"हमारा छोटानागपुर छोडो"। अतत: बिरसा गिरफ्तार किए गए और जेल मे ही उनकी मृत्यु हो गई। एक प्रकार से छोटानागपुर के लोगों ने बिरसा को विस्मृत कर दिया था, किंतु इधर बिरसा भगवान के प्रति छोटानागपुर के आदिवासियो (विशेषत: ईसाई-आदिवासियो) के हृदय में एक नई श्रद्धा उमड़ पड़ी है। बिरसा के नाम पर कुछ दल भी उठ खडे हुए है। इस शहीद को स्मरण करते हुए दुःखहरण नायक कहते है—

बिरसा हो भगवान फूँक मुरली तान,
अगम दु:खे फसले तोर दुनिया दु:ख ओढे तान
नदी झरना काईन-काईन सूईख चापटा भेल
चहकत तोर पहाड जंगल हँसी भूईल गेल।
हावा पानी बहकल गेल गोडा मडुआ धान ॥
कोइली शोर नझों करयँ मजूर नझों नाचयँ।
दु:ख बिसरल मुरली नझों चरवाहामन फूँकय।
पईनहारिन मरे पनिया लेले दिल उफान ॥
दु:खिया दु:खे "दुखा" दु:ख सुन भगवान।
झन-झन कर सूतल हिये जनम ले-ले जान।

६४. नगपुरिया गीत, पहला एव दूसरा भाग, पृष्ठ ९-१०।

बाजे नगरा भेंइर सहनई पाँच शब्दी तान ॥[६५]

नागपुरी के कवि सीमाओं से बद्ध नहीं हैं। उन्हें यह पता रहता है कि संसार में क्या कुछ हो रहा है। यही कारण है कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामवृक्ष बेनीपुरी के निधन पर नागपुरी कवि नहन विचलित हो उठे। स्वर्गीय बेनीपुरी के प्रति उनकी यह श्रद्धांजलि उल्लेखनीय है—

अहः खभइर रहे कि दिप बुझाल छरी।
आइज सर्गबासी भेलयँ रामवृक्ष बेनीपुरी ॥
कला नीति साहित्य
तीनों कर त्रिवेणी—बेनीपुरी।
गढ़लयँ माटी कर मूरति।
से सोना भेगेलक आउर,
चमचमाय लागलक—चमचम-चमचम।
नगर नारी आम्रपाली
जैकर छ्पा से बइन गेलक
सत-सत साहित्य पुजारी के
आराध्य देवी
जब प्रलयंकर तांडव करत रहे—
विश्व-कर रंग-मंच में—
रक्त लोलुप युद्ध-नीति—
तब जेकर कलम देलक—
तथागत!

साहित्य लोक में आलोक देव बद—
जे बारलयँ "मशाल",
टिमटिमात ढिबरी ना लागे—
जे धूका से नोंझ जाई,
धुका लागे आउर भी—
धक् धक् धक् धक् धक् धक् धक् धक
जोर से इंजोर करी, आउर देवी—
नवा साहित्य राहगीर के—

६५. आदिवासी, २२ मई १९६९, पृष्ठ ७।

चिरंतन प्रकाश !

जेकर बारे बच्चन के बचन है—

बहुत पद्य के गद्य बनाय देलयँ,

आउर बेनीपुरी गद्य के पद्य बनालयँ।

राष्ट्रकवि जेके कहलयँ।

कलम है कि जादूकर छड़ी।

कलम के महान् जादूगर,

भाषा, भावलोक कर सम्राट,

हिन्दी के महान् शब्द-शिल्पी—

आइज नखयँ, जेकर काया के

चिता के आइग—निहीं निहीं

साहित्यिक जग्य पूरनाहूति—

के हवन-ज्वाला

आपन में आतमसाइत कइर लेलक।

हाँ काया के, मगर जेकर जीवन—

जेकर प्रान साहित्य में आतमसात भेगेल—

हमेसा-हमेसा लगिन अछय, अमिट,

अमर भेगेलक—[६६]

संसार-प्रवाह अनादि काल से बहता आ रहा है। पता नहीं इसमें कितने वह गए और कितने अभी बहेंगे—कहना संभव नही। इस परिवर्त्तनशील जगत् में परिवर्त्तन तो होते ही रहे हैं, होते भी रहेगे, पर वे इस काल-प्रवाह में नही वह पाते जो काल के कपाल पर "टीका" लगा देते है। इस सत्य को नागपुरी कवि प्रफुल्ल कुमार राय ने पहचाना है—

कहिया-कहिया से ई दुनियाँ बोहाथे,

इकर संगे चाँद आउर सुरुज बोहाथे,

कतना नछतर आउर तरागन बोहाथे,

सरग आउर नरक, आकास आउर पताल,

दिग दिगन्त तीनों लोक आउर चौदहो भुवन,

मनुख आउर, चरई चुनगुन,

६६. आदिवासी, १७ अक्तूबर, १९६८, पृष्ठ ८।

गंगा, आउर जमुना, माटी आउर सोना,
एके संगे आउर फिर अलगे-अलगे,
बोहाथे से बोहाथे।

... ...

कतना-कतना इकर में बोहाय गेलयँ।
बोहालक कतना गीत, आउर राग,
काजर, सेंदुर, मूँगा, मोती आउर अंगराग,
आकांक्षा, प्रतीक्षा, सोग आउर संतोष,
सुख आउर दुख, रोदन आउर विलाप
काम, क्रोध, लोभ आउर मोह,
विचार आउर कल्पना, तृष्णा आउर अइगोह।

....

एखन आउर आइज भी बोहाथयँ कतना—
संगे हाम भी—ई अनजान गतर आउर काया—

... .

आउरो कतना-कतना बहाबयँ।
का जनी-कहिया तक।

... ...

तो का घर संसार व्यर्थ है ?
एतना प्रसाधन आउर सिंगार ? सब राख कर अम्बार।
इन्द्रिय प्रक्रिया आउर कलाप ?
सुख-दुःख आउर संताप ?
एकदम बकवास आउर अकारथ—
खाली हाथ आना आउर खाली हाथ जाना ?
नहीं एके बात, साइत एतने कन निष्कर्ष—
कोनो तइर इ काल कर कपार में
एको ठो टीका, चेस इया बेकार, कइसनो मइसनो,
दे देउ—तनिकन—बोहाइक आउर बहेक बेरा।[६७]

६७, आदिवासी, १५ अगस्त, १९६८, पृष्ठ ५० से ५३।

हमें यह आशा करनी चाहिए कि नागपुरी में भी ऐसे कवि हैं और होंगे जो काल के कपाल पर निश्चित रूप से टीका लगा सकेंगे और नागपुरी साहित्य को अमरत्व प्रदान करने में सफल-काम प्रमाणित होंगे।

(ख) नागपुरी गद्य में प्रतिफलित छोटानागपुर की संस्कृति

प्रत्येक भाषा के साहित्य में पद्य की अपेक्षा गद्य-लेखन का प्रारम्भ विलम्ब से होता है। यही स्थिति नागपुरी साहित्य की है, फलतः इसका अधिकांश साहित्य पद्य में सुरक्षित है।

नागपुरी गद्य-लेखन के क्षेत्र में जो अभाव दिखाई पड़ता है, उसके कई कारण हैं। छोटानागपुर के गाँवों में पहले शिक्षा का प्रबन्ध लगभग शून्य-सा था। ऐसी स्थिति में साहित्यानुरागियों का साहित्य-रचना की ओर ध्यान न देना (विशेषतः गद्य-लेखन की ओर) स्वाभाविक ही है। नागपुरी में गद्य-लेखन का श्रीगणेश ईसाई मिशनरियों ने किया। जर्मन इवांजेलिकल लुथेरान चर्च मिशन, राँची के रेवरेण्ड पी० इड्नेस इसके सूत्रधार हुए। उन्होंने बाइबल के सुसमाचारों का नागपुरी में अनुवाद प्रस्तुत किया। पहली पुस्तक सन् १९०७ में "नागपुरिया में नया नियमकेर पहिला ग्रंथ याने मत्ती से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार" प्रकाशित हुई। इसी प्रकार काथलिक मिशन के रेवरेण्ड ए० बून०, रेवरेण्ड पीटर शांति नगरंगी, तथा श्री जोहन केरकेट्टा ने ईसाई धर्म सम्बन्धी पुस्तकें नागपुरी में लिखीं। राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर श्री जुलियस तीगा ने 'छोटा नागपुर केर पुत्री' तथा प्रो० बिमल नाग ने "अंग्रेज आदिवासी लडइकर संक्षिप्त बयान" नामक पुस्तिकाएँ प्रकाशित कीं। हितैषी कार्यालय, चाईबासा के संचालक स्वर्गीय धनीराम बक्शी ने भी श्री गणेश चौठ कहनी, श्री कृष्णचरित्र, फोगली बुढ़ियाकर कहनी, करम महात्म्य तथा जीतिया कहनी नामक पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया।

श्री जयपाल सिंह द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित "आदिवासी सकम", श्री राधाकृष्ण द्वारा सम्पादित "आदिवासी", श्री इग्नेस कुजूर द्वारा सम्पादित "अबुआ झारखण्ड" तथा "झारखंड समाचार" में नागपुरी में लिखित गद्य-रचनाएँ भी यदा-कदा प्रकाशित होती रही हैं। 'राँची एक्सप्रेस' में प्रति सप्ताह प्रकाशित होने वाला 'नागपुरी स्तम्भ' भी गद्य में ही होता है। 'राँची टाइम्स' तथा 'साप्ताहिक हलधर' ने भी ऐसे ही स्तम्भों का प्रकाशन प्रारम्भ किया था, पर यह क्रम बहुत दिनों तक नहीं चल सका।

आकाशवाणी, राँची की स्थापना से नागपुरी में गद्य-लेखन को काफी बल प्राप्त हुआ, पर आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित गद्य-रचनाएँ प्रचार को ध्यान में रखकर लिखी जाती हैं, अतः उनमें छोटानागपुरी संस्कृति की छाप ढूँढ़ना पाषाण-पुष्प में सुवास ढूँढ़ने जैसा होगा।

"नागपुरी" (मासिक) तथा "नागपुरीया समाचार" (मासिक समाचार पत्र) दो ऐसे पत्र प्रकाशित हुए, जिनमें नागपुरी गद्य को उभरने का पर्याप्त अवसर मिल रहा था, पर इन पत्रों का प्रकाशन रुक जाने के कारण यह क्रम भी ठप्प पड़ गया है।

नागपुरी में गद्य-साहित्य का अभाव है, फिर भी नागपुरी का जो उपलब्ध गद्य-साहित्य है, उसमें प्रतिफलित छोटानागपुर की संस्कृति पर अत्यल्प ही, परन्तु विचार तो किया ही जा सकता है।

उपन्यासों में किसी क्षेत्र-विशेष की संस्कृति को उभरने का विशेष अवसर प्राप्त होता है। दुर्भाग्यवश अन्य बोलियों की तरह नागपुरी में भी अब तक कोई उपन्यास नहीं लिखा गया है। हां, नागपुरी में कुछ मौलिक कहानियाँ अवश्य लिखी गई हैं, पर नागपुरी कहानीकारों की संख्या भी अधिक नहीं। इन कहानीकारों में घनीराम बक्शी, स्व० पीटर शान्ति नवरंगी, श्री योगेन्द्र नाथ तिवारी, श्री हरिनन्दन राम, श्री राधाकृष्ण, श्री प्रफुल्ल कुमार राय, श्री नईमउद्दीन मिरदाहा, श्री भुवनेश्वर "अनुज" आदि हैं। श्री प्रफुल्ल कुमार राय ने "सोनझईर" नामक एक संग्रह का स्वयं प्रकाशन किया है, जिसमें गीतों के अलावे उनकी छः मौलिक कहानियाँ भी हैं। इन सभी लेखकों की कहानियों में छोटानागपुर के हृदय की धड़कनें सुनी जा सकती हैं।

श्री हरिनन्दनराम की 'मोहों बुझोना, मोयँ बइद मोको नखों"[६८] नामक कहानी नागपुरी की एक प्रतिनिधि कहानी मानी जा सकती है। इस कहानी को पढ़कर प्रेमचन्द की सरल तथा मुहावरेदार भाषा तथा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की स्मृति सहसा ही मस्तिष्क में कौंध उठती है।

"मोहों बुझोना, मोयँ बइद मोको नखो" छोटानागपुर के जीवन का यथार्थ चित्र है। दुखना महतो लापुर गाँव का रहनेवाला है। उसके दो बेटे हैं—सोहना और मोहना। सोहना गाँव में गृहस्थी सँभालता है और मोहना रांची के रांची कॉलिज में पढ़ता है। गाँव में सोहना के कई मित्र हैं, जो बराबर उसे उसकाते रहते हैं ताकि वह घर से अपना हिस्सा लेकर अलग हो जाय। सोहना अपने मित्रों के बहकावे में आ जाता है। वह अपनी माँ से कहता है—"मोहना एकला तोहरे कर बेटा हेके। मोंय का तोहरे कर बेटा हेकों? मोहना कर एगो लाल कचिया कर कमाइ न कजाइ। उके बेस तइर खियाल-पियाल करदा। महीना-महीना दू-तीन कोरी कर धान बेइच के उकर ले रुपीया भेजल करवा। रंग-बिरंग कर पिंधेक-ओढ़ेक उकर ले देवल करवा। एतना-एतना धान-पान उकरे खातीर जुन उपजुथे। का जानी उ पढ़इथे कि पोड़इथे।"

हर घर में फूट की नींव इसी कमजोर भूमि पर पड़ती है। मोहना ने अपने

६८. आदिवासी, स्वतंत्रता-दिवस अंक, १९६२, पृष्ठ ७४ : ७८।

पिताजी के सामने अपनी माँग प्रस्तुत कर दी। परन्तु पिताजी ने साफ इंकार कर दिया "मोर रहत में एगो कनवा-फुचिया तो पावे नी करबे।"

सोहना का उत्तर है—"तोर जियत में नी देबे होले तोके आव मोराइये के मोयँ हिस्सा बखरा लेबों।"—सोहना के चरित्र की इस गिरावट पर थोड़ा भी आश्चर्य नहीं होता। यह तो आधुनिक सभ्यता की देन है। ऐसे "सपूतों" के कारण ही "संयुक्त परिवार" की नींव इस देश में कब की ही हिल चुकी है।

सोहना ने अपना हिस्सा पा लिया। दो तीन वर्षों में ही सारी जायदाद स्वाहा हो गई। दोस्तों ने खूब आनन्द उठाया। इस बीच मोहना बी० ए० पास कर लेता है। वह अब एक ऑफिसर है। उसे अच्छा वेतन मिलता है। छुट्टियों में वह अपने गाँव आया है। सोहना अब अन्य बेरोजगार व्यक्तियों की तरह भूटान जाना चाहता है—रोजी-रोटी की तलाश में। वह अपने छोटे भाई मोहना के पास आता है—सहायता के लिए। मोहना ने अपने बड़े भाई के साथ पहले रूखा व्यवहार किया। पर बाद में वह पसीज उठता है—सोहना की गिड़गिड़ाहट सुनकर। सोहना अपने सुधर जाने का मोहना को विश्वास दिलाना है। मोहना तो चाहता भी यही था। दोनों आपस में गले मिलते हैं और गाँव के लोग एक स्वर से बोल पड़ते हैं—"मोहना! बेटा होवे तो तोर नियर बेटा होवे।"

सोहना के पतन की पृष्ठभूमि में उसका काहिल, नशेबाज, पत्नी-भक्त तथा कान का कच्चा होना है। इन सामान्य अवगुणों के कारण छोटानागपुर के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है। नशेबाजी के कारण मनुष्य काहिल हो ही जाता है। सामान्यतः यहाँ की आदिवासी लड़कियाँ रह-रहकर अपने मायके भाग जाती हैं, जिनके पीछे पतिदेवों को बार-बार दौड़ना पड़ता है। छोटानागपुर की इन विशेषनाओं के जीवंत चित्रण की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त सफल मानी जा सकती है। अशिक्षा के अंधकार से निकलकर शिक्षा के प्रकाश की ओर यहाँ का प्रत्येक मोहना बढ़ना चाहता है, पर सोहना जैसे लोग रास्ते के काँटे बन जाते है। द्वन्द्व की यह स्थिति इस कहानी में कौशल के साथ उभारी गई है।

छोटानागपुर के लोग आज भी अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता के शिकार हैं। श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी ने अपनी कहानी "भूतक् भूत"[६९] में ऐसी ही एक घटना को प्रस्तुत किया है। मधेया की भैंस बीमार है। उसके इलाज के लिए डाक्टर नहीं, ओझा बुलाया जाता है। ओझा मंत्रोच्चारण करता है—"धर धर, के धर, हम धर, डाइन बाँधों, कीन-कीन बाँधों, छीन-छीन बाँधों, के बाँधे, गुरु बाँधे, गुरु मंत्रे हम बाँधे, दोहाई गउरा पारबती इसर महादेव के।"

पर भैंस ठीक नहीं होती। दूसरे दिन ब्लॉक से डॉक्टर आता है। डॉक्टर

६९. आदिवासी, १९ अगस्त, १९६४, पृष्ठ ५०-५१।

की दवा से भैंस की हालत सुधरने लगी और सात दिनों के अन्दर भैंस स्वस्थ हो गई। इस चमत्कार को देखकर गाँव के लोगों ने कहा—"डॉक्टर तो हमरे केर भूतो केर भूत बइन गेलक।"

अब नागपुरी में शब्दचित्र भी लिखे जाने लगे हैं। नागपुरी का पहला शब्द-चित्र "चउधरी" दादा 'आदिवासी' (१३ अगस्त १९७०) में प्रकाशित हुआ, जिसके लेखक श्रवण कुमार गोस्वामी हैं।

नागपुरी में लिखित निबन्धों की संख्या अधिक नहीं। परन्तु विविध विषयों पर नागपुरी में अल्प ही पर काफी अच्छे निवन्ध लिखे गए हैं, जो निम्नलिखित कोटियों में रखे जा सकते हैं—

(क) परिचयात्मक निवन्ध

(ख) संस्मरणात्मक निवन्ध

(ग) समीक्षात्मक निवन्ध

(घ) सामयिक निवन्ध

इन निबन्धों के अध्ययन से छोटानागपुर में हो रहे परिवर्त्तन, फैलती हुई नवचेतना, सभ्यता तथा संस्कृति का आसानी से परिचय प्राप्त किया जा सकता है। श्री शिवावतार चौधरी ने अपने "स्वामी विवेकानन्द" नामक निवन्ध में एक स्थान पर लिखा है—"इतिहास में पइढ़ ही कि सिकन्दर, सीजर, चगेज, तैमूर, नेपोलियन ऐसन योद्धागण देश के जीतेक वास्ते सेना साइज के निकलते रहें। हमरेक देशकर इ किसिम कर दिग्विजय नई होलक। मुदा विवेकानन्द कर अमेरिका यात्रा ऐसन दिग्विजयी रहे जेकर मिसाल दुनिया में नखे। एक गेरुआ वस्त्र पहइन के वेद-उपनिषद कर हथियार लेके एकले स्वामी जी चललयँ उ देश में जहाँ कर आदमी हिन्दू के असभ्य समझत रहै।"[७०]

छोटानागपुर के इतिहास में नागवंशी राजा दुर्जनशाल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तत्कालीन मुगल सम्राट् जहाँगीर ने स्वयं अपनी "तुजक-इ-जहाँगीरी" में दुर्जन-शाल का उल्लेख किया है। अब तो दुर्जनशाल के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की बातें सुनने में आती हैं, जिनमें से अधिकांश "किंवदन्ती" जैसी प्रतीत होती हैं। श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी ने अपने निवन्ध "नवरतनगढ़" में दुर्जनशाल के सम्बन्ध में लिखा है, वह ध्यान देने योग्य है—"इतिहास में इसन लिखल है कि जे घरी भारत में जहाँगीर बादशाह रहैं से घरी ऊ इब्राहीम खाँ के सन् १६१६ में छोटानागपुर भेजलैं रहैं। से घरी छोटानागपुर के राजा रहैं, दुरजन शाल। जहाँगीर बादशाह के राइज केर वोतना लोभ नइ रहे जतना धन केर रहे। दुरजनशाल महाराज केकरो अधीन नइ रहै। उनकर राइज-पाइट सब आपन आउर कुल कारखाना आपन रहे। केकहों

७०. आदिवासी, ६ मार्च, १९६९, पृष्ठ ५।

मालगुजारीओ नइ देत रहैं। महाराज के आपन रइअत बनावेले आउर मालगुजारी लेवेले बादशाह जहाँगीर छोटानागपुर में इब्राहीम खाँ के भेजलैं। इब्राहीम खाँ आउर दुरजन साल से लड़ाई भेलक मगर लड़ाई में महाराज ठठे नइ पारलैं। इब्राहीम खाँ उनके कैद कर लेलक। ई बात सन् १६१६ ईस्वी केर हेके। उनकेहें कैद करके नइ लेगलक बलके आउरो-आउरो राजामन के संग लेले गेलक। सेकर संग २३ हाथी आउर ढेइर हीरा दिल्ली भेजलक। राजा आउर महाराज के ग्वालियर केर किला में १२ बरीस तक कैद राखल गेलक। महाराजा हीरा पारखी रहैं। बादशाह जहाँगीर के हीरा परखुवाएक रहे। ढेइर केउ के बोलालैं मगर केउ सुपट पारीख करे नइ पारलैं। तब उनके छोटानागपुर केर महाराज कर खेयाल भेलक आउर उनके बोलाल गेलक। ऊ आए के सुपट ठीके ठीक हीरा के परीख लेलै। इकर में बादशाह उनकर से अइत खुश भेलैं तब उनके आउर उनकर संगी राजामन के कैद से छोड़ देलैं। संग-संगे "साहदेव" केर पदवी भी देलैं। इकर आगु जतना महाराज रहैं सेमनकेर साहदेव पदवी नखे।"[७१]

छोटानागपुर में शक्ति की उपासना अत्यधिक प्रचलित है। ऐसा लगता है कि शक्ति की उपासना की परम्परा छोटानागपुर में अनन्तकाल से चली आ रही है। यही कारण है कि नागपुरी गीतों में "शाक्त-भावना" का प्रभाव प्रचुर मात्रा में दिखलाई पड़ता है। इतना ही नहीं छोटानागपुर की जो सांस्कृतिक विरासतें आज सुरक्षित हैं, वे भी इसकी पुष्टि करती हैं कि "शक्ति की उपासना" इस क्षेत्र में अत्यन्त प्राचीन है। इस विषय पर श्री भवभूति मिश्र ने अपने "नागपुरी लोकगीतों में शाक्त-भावना" नामक निबन्ध में विचार किया है, जिसका एक महत्वपूर्ण अंश नीचे उद्धरित है—

"राँची, जिलाकेर टाँगीनाथ नाँवक ठाँव में लोहा केर बड़का ठो त्रिसूल एखनो हले है उकर में एखनो तक चीती नई लाइग है। उहाँ केर लिखल के एखनो तक आदमी पढ़े नइ पाइर हैं। पता नखे कि कोन जुगकेर शक्ति पूजाकेर बात के इआइद करवाए ले ई जीत के चिनहा आपन ठीक आउर अनल इतिहास बताये। ठाँवे-ठाँव मंदिल आउर देवी भंडार केर इहाँ कमी नखे। माटी केर पींडा बनाए के सेंदुर केर टीका खींच के इहाँ केर आदमी मन देवीकेर पूजा कइर लेवैंना आउर वोही देवी मण्डा कहाएला। अइसन बुझाएला कि ई प्रदेश में पहिले-पहिल जेमन आलैं सेमन के आपन जीएक-खाएक केर उपाए मिलेक में बड़ा दीक-दीक आउर असुविस्ता से लड़ेक भेलक होई। आउर ई लड़ाई जाइत-जाइत केर लड़ाई नहीं होएके प्रकृति केर देल हालत से उलटेक में प्रकृति से भेलक होई। इसन हालत में बेमतलब केर शक्ति नास से निरबल होएके आदमी मन बल पावेले शक्ति केर पूजा सुरु करलैं होई। सेई ले आइज तक आदमी

७१. नागपुरी, जुलाई १९६१, पृष्ठ १५।

नन ओहे डहर नें चलते आवयँ आउर शक्ति केर पूजा कोनो नी कोनो रूप नें इहाँ चलतेहे है।[72]

नागपुरी के सामयिक निबन्धों से देश की प्रगति तथा बदलती हुई परिस्थितियों का परिचय यहाँ के लोगों को प्राप्त होता ही रहता है। स्व० धनीराम बक्शी ने अपने "नावा राइज" नामक निबन्ध नें लोगों को गणतंत्र भारत की जानकारी प्रदान की है। इस लेख की कुछ पंक्तियाँ नीचे प्रस्तुत हैं—

"इ बात जानल गेल होई कि अंग्रेजी राइज आब शेष ने गेलक और नावा राइज चालू होवन हे। यदि जानल नहि होय तो जानल जाय जे एलो ता० २६ जनवरी से नावा राइज चलत है। ओहे दिन से नावा नियम (विधान याने कानून) चलत है। इ नियम गोटे भारत (हिन्दुस्तान) कर लगिन है। इ विधान नें पूरे ध्यान देवेक बात नीचे लिखल जात है :—

(१) धर्म, कुल, जाइत, लिंग (स्त्री-पुरुष कर भेद) और जनमूई कर लगिन कुछ भेदभाव नहि करल जाई। (धारा १५)

(२) आपन आपन विशेष भाषा, लिपि चाहे संस्कृति के बनाय राखेक सबकर अधिकार है। (धारा २९)

(३) आपन-आपन धर्म चाहे भाषाकर आधार में शिक्षा-संस्था (विद्यालय या स्कूल) खोडल के चलाल जाय सकेला। राइज इकर नें सहायता देवेक नें इ आधार पर भेद नहि कइर सकेला कि उ संस्था धर्म और भाषा नें आधारित अल्प-संख्यक कर प्रबन्ध नें है। (धारा ३०)"[73]

नागपुरी के निबन्धकारों में स्व० धनीराम बक्शी, स्व० पीटर शांति नवरंगी, श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी, श्री शिवावतार चौधरी, श्री नईम उद्दीन मिरदाहा, प्रो० विसेश्वर प्रसाद "केशरी" श्री भुवनेश्वर 'अनुज', श्री छुन्नूलाल अम्बिका प्रसाद नाथ साहदेव श्री महादेव उराँव, श्री विनय कुमार तिवारी तथा श्री प्रफुल्ल कुमार राय के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्री इग्नेस कुजूर द्वारा सम्पादित "नवुआ झारखण्ड" (साप्ताहिक) में "दोना-दोनी" नामक एक स्तम्भ प्रकाशित किया जाता था, जिसमें समसामयिक गतिविधियों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ "ठुठु" के द्वारा लिखी जाती थीं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचनाओं में सरायकेला खरसावाँ गोलीकांड, जनता की सरकार, तकली सिलाई, छोटानागपुर का औद्योगीकरण, राँची का ग्रीष्मकालीन सचिवालय तथा लीडर के प्रकार आदि अनेक विषयों पर पैनी शैली में चुभते हुए व्यंग्य प्रस्तुत किए गए।

७२. नागपुरी, अगस्त १९६१, पृष्ठ ५।
७३. बहाइक, खण्ड २ (१९५०), पृष्ठ ३-४।

सरकार की ओर से यह बराबर कहा जाता रहा है कि छोटानागपुर एक पहाड़ी इलाका है, अतः यहाँ सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं की जा सकती। इस सम्बन्ध में "ढुठू" ने जो छींटे कसे हैं, वे अविस्मरणीय हैं—

"थोड़े दिन से माने ढेरे बरस से कहल जाथे कि आदमी-मन दुनिया में बगरा होते जाथैं और जमीन कमती। और हमरेन केर झारखण्ड में तो कहल जायला कि सोबखेत पत्थर चट्टान मनक बीच में आहें, मुलके ऊँच नीच आहे, न नया खेत बगरा बाईन सकी, न बरखा छोड़ कोनो किसिम पटावन होवे पारी। तिरिल आश्रम से, जहाँ हमरे मनक सरकार भलाई करेक पहिल-पहिल बड़का फैक्टरी खोललैं, उहाँ से दुबिन लगाल से हमरेन केर मुलुक थोड़ेक दिसेला। टेबोबाट और नेतरहाट और राँची केर मुंडली गिरजा केर ऊपर बैसल सेहूँ रौरे अगर चाहू तो देखे पारबा कि हमरेन केर मुलुक कैसन गढ़ा, डीपा, ठेंका, ठोड़े और झोंगड़-झोंगोड़ आहे। अशोक राजा दिने बिहार में रहवैया मनहूँ एकदम बुझकहे नी पारैंना और साईद सेहेले आन मुलुक आदमी मन आईज काईल कहैंना कि इ झारखण्ड तो अजीब ऊबड़-खाबड़ मुलुक है हिंया तो पटावन होएहे नी सकी। पटावन केर दुईये ठो कायदा है एक बरखा राम भरोसे, दूसरा माईनर इरिगेशन, सीता भरोसे।

ऐसन कलीफोर्निया से भी खराब हमरेन कर मुलुक। मोके हमर प्रधान मंत्री से अर्जी करेक रंग लागेल चाईबासा में अटोम बोम्ब गिराएक एक बदली राँची टुंगरी में गिराल जाओक एक तो टुंगरी सम भेवी और राँची तलाव भी भराई। छहंक पोहंची तो महात्मा गांधी रोड भी सफा भे जाई। एक मुट्ठी बोम्ब से केतना खेत बाईन जाई।"[७४]

श्री इग्नेस कुजूर ने ही इधर "झारखंड समाचार" नामक एक साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ किया है, जिसमें "दोना-दोनी" जैसा ही एक स्तम्भ "बुधुवा का लूर" रखा गया है। इस स्तम्भ का प्रकाशन नागपुरी में ही होता है। इसकी रचनाएँ भी व्यंग्य-प्रधान होती हैं।

समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं तथा सरकार द्वारा नागपुरी में कुछ प्रचार-पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं, जिनकी सहायता से छोटानागपुर के बदलते हुए जीवन का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। राँची का विकास जब एक बड़े नगर के रूप में प्रारंभ हो गया, तो यहाँ की भोली-भाली आदिवासी युवतियों की इज्जत खतरे में पड़ने लग गई। इस समस्या के समाधान के लिए यहाँ के लोगों ने कई जन-सभाएँ, कीं और प्रस्ताव पारित किए और उन्हें कार्यान्वित भी किया। नीचे ऐसे ही एक प्रचार-पत्र की प्रतिलिपि प्रस्तुत है—

"उराँव मुंडा केर जाति सभा।

७४. अबुआ झारखन्ड, १८ अप्रैल, १९५८, पृष्ठ ५।

तारीख ५ जुलाई १९३६ ई० आनेवाला एतवार के हेसल चाह बगान (बिडला बोर्डिंग के सामने) १२ बजे दिन से मीटींग होई। सब उराँव-मुंडा भाईमन एक रोज काम हरज करके जरूर आऊ और अपना जातिकेर इज्जत बचाउ।,

भाईमन !

शहर में हमरेकर बहुबेटी के बदमास-मन खराब कर रहल हैं। तौ भी हमरे चुपचाप हेई ! ! धीक्कार ऐसन जीना ! ! ! हमनी के बहुबेटी केर इज्जत बचावेक बदे सब तरह से उपाय करेक चाही। नहीं तो हमरे मनक कोई मोल नई रही—

इ-बदे-इ मिटींग करल जात है, जरूर से जरूर सब कोई आऊ। कोई खास आदमी इया गाँव केर सभा में कोई निंदा सिकायत नई होई और जातिभर के बेटी बहुमन कर इज्जत बचावेक सलाह करल जाई।

निवेदक:—

भन्डरा उराँव, सुकरा उराँव, ठेबले उराँव, महली राम, महादेव उराँव-राँची। रीझुराम-मदुकम, तेलंगा मुन्डा, डहरु उराँव-हेसल, मंधना हवलदार, एतवा पाहन-चडरी, मुकुल पाहन-बड़ागाई, रामा राम-सीरम, कीतु उराँव-गुंगुटोली, बीगलाहा मुन्डा, रतीया उराँव, सुकरा भगत-नगड़ा टोली, महादेव उराँव-करम टोली, मादी पहान-पन्डरा, टुनीया पाहन-डंगरा टोली।

वन्धु विलास प्रेस राँची।"

नागपुरी में प्रकाशित मासिक समाचार-पत्र नागपुरिया समाचार में कुछ ऐसी रचनाएँ भी प्रकाशित होती थीं, जिनमें यहाँ की समस्याओं की झलक मिल जाती है। छोटानागपुर में यहाँ के निवासियों की अब तक जैसी उपेक्षा होती रही है, वह सर्वविदित है। "छोटानागपुर में रइह के नागपुरीयामन:विदेशी" शीर्षक एक रचना में इस प्रश्न पर विचार किया गया है। इस निबंध का एक अंश इस प्रकार है—

"कोई आपन हक वास्ते लड़ेक तेइयार आहयं तो काले नागपुरिया भाई मने आपन हक के नी माइंग के चुप रहीं। हमारे ठीन कोन तकत नखे, जे सब दुसर कोई ठीन आहे। हामरे के चाही कि आफिस चाहे जहाँ भी रही आपन भाषा में बात-चीत करी, काले हामरे लजाय के या डराय के आपने भाईमन से हिन्दी में बोली जे नागपुरिया बोलेक जाने। हामरे केर तकलीफ के हामरेहें आपस में संगबद्ध होइके दूइर कइर सकीला। केउ दुसर कोई हामरे के बनाइक ले नी आवी। आब भी अगर हामरे नी समरब हले छोटानागपुर में हामरे के पुछेक वाला केऊ नी रही आउर हामरे हिंया रइहके विदेशी जइसन बनल रहब।"[७५]

छोटानागपुर तथा उड़ीसा-मध्य प्रदेश के कतिपय क्षेत्रों की सम्पर्क-भाषा

७५. मंगलवार, अप्रैल, १९६८, पृष्ठ १।

होकर भी नागपुरी अब तक उपेक्षित रही थी, पर अब ऐसे संकेत मिलने लगे हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में जो भ्रांतियाँ थीं, वे धीरे-धीरे दूर होती जा रही हैं और नागपुरी की वास्तविक प्रकृति प्रकट होने लगी है। राँची विश्वविद्यालय ने नागपुरी को आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में पाठ्य-क्रम में सम्मिलित कर इसे हाल ही में अपनी मान्यता प्रदान की है। सन् १९७३ में तथा तत्पश्चात् होनेवाली आई० ए०, आई० एस-सी० तथा आई० कॉम की परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले नागपुरी-भाषी परीक्षार्थी अब अपनी मातृभाषा नागपुरी तथा उसके साहित्य का अध्ययन कर परीक्षा दे सकते हैं।

यह स्पष्ट है कि यहाँ के निवासी अपनी भाषा नागपुरी का महत्त्व अब अच्छी तरह समझने लगे हैं और वे अपने साहित्य, संस्कृति तथा जीवन को एक नूतन रूप प्रदान करने के लिए अपने-आपको तैयार कर रहे हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस नव-चेतना को प्रसारित करने में नागपुरी साहित्य विशिष्ट भूमिका निभा रहा है।

६

परिशिष्ट

(क) नागपुरी में प्रकाशित पुस्तकों की सूची

१. **आदि झूमर संगीत**—संकलनकर्त्ता-राजा बहादुर श्री उपेन्द्रनाथ सिंहदेव। प्रकाशक : रघुवर प्रकाशन, राँची। वर्ष : संवत् २०१३ (१९५६ ई०) विषय : झूमर संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन रुपये।

२. **आदिवासी नागपुरिया संगीत**—संकलनकर्त्ता : एतवा उराँव। प्रकाशक : किशुन भगत, गाँव : पुरियो, पोस्ट राँतू, राँची। वर्ष : १९५१ लिपि : देवनागरी। मूल्य : बारह आने।

३. **ईसु-चरित-चिन्तामइन**—लेखक : पीटर शांति नवरंगी, एस. जे०। प्रकाशक : काथलिक मिशन, राँची। वर्ष : १९६४। विषय : जीवन-चरित। लिपि : देवनागरी। कीमत : ढाई रुपये।

४. **उलाहना**—लेखक : सहनी उपेन्द्र पाल "नहन"। प्रकाशक : सहनी उपेन्द्र-पाल "नहन"। गाँव : तारागुटू, पोस्ट : गुनिया (टोटो), जिला : राँची। वर्ष १९५७। विषय : काव्य। लिपि : देवनागरी। कीमत : दस आने।

५. **ए सदानी रीडर**—लेखक : पीटर शांति नवरंगी, एस० जे०। प्रकाशक : पीटर शांति नवरंगी, मनरेजा हाउस, राँची। वर्ष १९५७। विषय : संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य : एक रुपया आठ आना।

६. **ए सिम्पल सदानी ग्रामर**—लेखक-पीटर शांति नवरंगी, एस० जे०। प्रकाशक दि धार्मिक साहित्य समिति बुकडिपो, पो० बा०-२, राँची। वर्ष-१९५६। विषय-व्याकरण। लिपि-देवनागरी तथा रोमन। मूल्य-१।)

७. **एतवार केर पाठ**—अनुवादक : फादर जोन केरकेट्टा। प्रकाशक : काथलिक मिशन, सम्बलपुर। वर्ष : १९६२। विषय : धार्मिक साहित्य। लिपि : देवनागरी। मूल्य : अमुद्रित।

८. **अंग्रेज-आदिवासी लड़इकर संक्षिप्त बयान**—लेखक : प्रो० विमल नाग, एम० एस० सी०। प्रकाशक : प्रो० विमल नाग, एम० एस० सी०, संत एंथोनी'ज कॉलेज,

शिलांग, आसाम। वर्ष-१९५९। विषय, इतिहास। लिपि, देवनागरी। मूल्य, मूल्य, पाँच आने।

९. **कायलिक धर्म की सादरी प्रश्नोत्तरी**—लेखक-०। प्रकाशक, हरमन वेस्टरमेन, संवलपुर। वर्ष, १९५९। विषय, धर्म संबंधी प्रश्नोत्तर। लिपि, देवनागरी। मूल्य : अमुद्रित।

१०. **किसानी गीत**—रचयिता-श्री गोविन्द साव। प्रकाशक : श्री गोविन्द सावग्राम तथा पोस्ट, पिठोरिया, जिला, राँची। वर्ष-१९५९। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : अढ़ाई आने।

११. **गीत नागपुरिया झूमर**—संग्रहकर्त्ता एवं प्रकाशक-रामहटल राम, कचहरी कम्पाउंड, राँची। वर्ष-१९५५। लिपि : देवनागरी। मूल्य : अमुद्रित।

१२. **छोटा नागपुरकेर पुत्री**—लेखक, जूलियस तीगा। प्रकाशक, जूलियस तीगा, राँची। वर्ष : १९४१। विषय : निबंध। लिपि : देवनागरी। मूल्य : डेढ़ आने।

१३. **छोटानागपुरी पंचरत्न**—रचयिता-रामूदास देवघरिया। प्रकाशक-रामूदास देवघरिया, ग्राम तथा डाकघर सुकुरहुटु (काँके), जिला : राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : चार आने।

१४. **जनी झूमैर और मर्दानी झूमैर**—लेखक, बसुदेवसिंह। संग्रहकर्त्ता : कुमार उदित नारायणसिंह देव। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर-संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य : सैंतीस नये पैसे।

१५. **जीतिया कहानी**—लेखक : छोटानागपुरी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९४७। विषय : कहानी। लिपि : देवनागरी। मूल्य तीन आने।

१६. **झारखण्ड में साग-सब्जी केर खेती**—लेखक : हरमन लकड़ा, बी० ए०। प्रकाशक : हरमन लकड़ा बी०ए०, राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : कृषि। लिपि : देवनागरी। मूल्य : अमुद्रित।

१७. **टूसु-संगीत**—रचयिता : कविराज। प्रकाशक : कविराज, ग्राम, वारेडिह। डाकघर, लान्दुपडिह। थाना, सोनाहातु। जिला : राँची। वर्ष : १९६४। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : बारह पैसे।

१८. **डमकच गीत**—संग्रहकर्त्ता : श्री धनीराम वक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष—तृतीय संस्करण १९५७। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

१९. **तेतर केर छांहें**—लेखक : श्री विष्णुदत्त साहु। प्रकाशक : जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना। वर्ष : १९५८। विषय, : नाटक-संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य : अमुद्रित।

२०. **देशी झूमर (पहला भाग)**—रचयिता। बड़ाईक महादेवसिंह। सम्पादक :

श्री धनीराम बक्शी। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२१. **देशी झूमर (दूसरा भाग)**—सम्पादक, श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक, हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण, १९४९। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२२. **देशी झूमर (तीसरा भाग)**—सम्पादक : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण : १९५०। विषय : झूमर। लिपि, देवनागरी। मूल्य, तीन आने।

२३. **देशी झूमर (चौथा भाग)**—संग्रहकर्त्ता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२४. **देशी व नागपुरिया झूमर (पाँचवाँ भाग)**—लेखक : अमुद्रित। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९३६। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : एक आना।

२५. **देशी झूमर (छठा भाग)**—सम्पादक : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण, १९५२। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२६. **देशी झूमर (सातवाँ भाग)**—संग्रहकर्त्ता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५३। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

२७. **देशी झूमर (आठवाँ भाग)**—सम्पादक : धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य, तीन आने।

२८. **द्वादश बीजनी हृदय रंजनी**—रचयिता : डोमन राम। प्रकाशक : डोमन राम। ग्राम : मनातू, डाकघर, कमड़े, जिला, राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास नये पैसे।

२९. **देहाती गाने**—लेखक बाबू श्यामलाल केरकेट्टा। प्रकाशक : स्वयं। गाँव इचापिरी, पो० पिठोरिया, राँची। वर्ष : १९५०। लिपि : देवनागरी। मूल्य : चार आने।

३०. **नागपुरिया गीतवली**—लेखक : श्री लक्ष्मणराम गोप। प्रकाशक : श्री लक्ष्मणराम गोप : पो० गुमला, राँची। वर्ष : १९६०। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास पैसे।

३१. **नागपुरिया भजन**—लेखक : अमुद्रित। प्रकाशक : एस०पी०जी० मिशन,

राँची। वर्ष : तीसरी छपाई, १९३२। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : चार आने।

३२. **नागपुरिया डमकच गीत**—संग्रहकर्त्ता : श्री कुमार उदित नारायण देव। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : चार आना।

३३. **नागपुरिया जनी झूमैर**—संग्रहकर्त्ता : श्री कुमार उदित नारायण देव। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५७। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : सैंतीस नये पैसे।

३४. **नागपुरीया संगीत माधुरी**—रचयिता : श्री दिवाकर मणि पाठक "मधुप"। प्रकाशक : श्री दिवाकर मणि पाठक "मधुप", ग्राम, हापामुनि, पोस्ट गम्हरिया, जिला, राँची। वर्ष : १९५८। विषय : गीत। लिपि। देवनागरी। मूल्य : बारह आने।

३५. **नागपुरिया डमकच छत्तीस रंग**—रचयिता : शेख अलीजान। प्रकाशक : हितैपी कार्यालय, चाईबासा : वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

३६. **नारद मोह लीला**—लेखक : श्री सहनी उपेन्द्र पाल "नहन"। प्रकाशक : हितैपी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५६। विषय : संगीत रूपक। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पाँच आने।

३७. **नगपुरीया गीत**। रचयिता : शेख अलीजान। प्रकाशक : हितैपी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

३८. **नगपुरिया संगीत-सुमन-माला**—रचयिता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय : चाईबासा। वर्ष : १९५२। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

३९. **नगपुरिया गीत पंचरंगी**—सग्रहकर्त्ता : श्री अक्ष्मण सिंह बड़ाईक। प्रकाशक : हितैपी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५१। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४०. **नगपुरिया जेबी संगीत**—संग्रहकर्त्ता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैपी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : ०। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : आठ आने।

४१. **नगपुरिया बियाह गीत**—संकलन कर्त्ता : एक झारखण्डी। वर्ष : द्वितीय संस्करण, १९५०। विषय : विवाह गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४२. **नागपुरी गीत पुस्तक**—रचयिता : घासीराम। प्रकाशक : हुलास राम, गाँव, करकट, पोस्ट, चोरेया, जिला, राँची। वर्ष : १९५९। विषय : गीत। लिपि : देव नागरी। मूल्य : बारह आने।

४३. **नगपुरिया करम संगीत (पहला भाग)**—संग्रह फर्त्ता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : करम गीत लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४४. **नगपुरिया करम संगीत (दूसरा भाग)**। संग्रहकर्त्ता : अब्दुल हमीद। सम्पादक : धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय, करम गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४५. **नगपुरिया करम संगीत (तीसरा भाग)**—सम्पादक : धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय : चाईबासा। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४६. **नगपुरिया करम संगीत (चौथा भाग)**—संग्रहकर्त्ता : श्री माकुरुगढ़ी जी। सम्पादक : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५८। विषय : करम तथा जीतिया गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४७. **नगपुरिया फगुआ गीत (पहला भाग)**—संग्रहकर्त्ता : श्री धनीराम बक्शी प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण, १९५०। विषय : फगुआ गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४८. **नगपुरिया फगुआ गीत (दूसरा भाग)**। रचयिता : श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : दूसरा संस्करण, १९५०। विषय : फगुआ गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

४९. **फगुआ गीत**—संग्रहकर्त्ता : शेख अलीजान (तीसरा भाग)। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : फगुआ गीत। लिपि : देव-नागरी। मूल्य : तीन आने।

५०. **फगुआ गीत (चौथा भाग)**—संग्रहकर्त्ता, श्री माकुरुगढ़ी। सम्पादक, श्री धनीराम बक्शी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९६१। विषय, फगुआ गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : बीस नये पैसे।

५१. **नल दमयन्ती चरित**। लेखक—स्व० दृगपाल देवघरिया। प्रकाशक : "आदिवासी" साप्ताहिक में धारावाहिक रूप से प्रकाशित। वर्ष : १९६१। विषय : चरित काव्य। लिपि : देवनागरी।

५२. **नोट्स ऑन दि गँवारी डायलेक्ट आफ लोहरदगा छोटानागपुर**—लेखक : रेव० ई० एच० व्हिटली, एस०पी०जी० मिशन, राँची। प्रकाशक : बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस, कलकत्ता। वर्ष : १८९६। विषय : व्याकरण। लिपि : रोमन। मूल्य : छः आने।

विशेषः—इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण **"नोट्स ऑन नागपुरिया-हिन्दी"** के नाम से सन् १९६४ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशन तत्कालीन बिहार एण्ड उड़ीसा गवर्नमेंट प्रेस पटने के द्वारा किया गया था। मूल्य : अमुद्रित।

५३. नागपुरी फाग शतक—लेखक : घासीराम । प्रकाशक : गोकुलनाथ शाहदेव, जमींदार, मासमानो ठाकुर गांव : रांची । वर्ष : संवत १९६८ (सन् १९११) विषय : गीत । लिपि : देवनागरी । मूल्य : अमुद्रित ।

५४. नागपूरिया में लिखिल नया नियमकेर पहिला ग्रन्थ याने मत्ती से लिखल प्रभु यीशु ख्रीष्टकेर सुसमाचार—अनुवादक : अमुद्रित । प्रकाशक : दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । (द्वितीय संस्करण) । वर्ष : १९०८ । विषय : धर्म । लिपि : कैथी । मूल्य : एक पैसा ।

५५. "नागपूरिया में नया नियमकेर दोसर ग्रन्थ याने मारक से लिखल प्रभु यीशु खीष्टकेर सुसमाचार"—अनुवादक : अमुद्रित । प्रकाशक : दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । वर्ष : १९०८ । विषय : धर्म । लिपि : कैथी । मूल्य : एक पैसा ।

५६. "नागपूरिया में नया नियमकेर चौथा ग्रन्थ याने योहन से लिखिल प्रभु यीशु खीष्टकेर सुसमाचार"—अनुवादक : अमुद्रित । प्रकाशक : दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । वर्ष : १९०९ । विषय : धर्म । लिपि : कैथी । मूल्य : एक पैसा ।

५७. "नागपूरिया में नया नियमकेर पांचवां ग्रन्थ याने लूक से लिखल प्रेरितमनक काम"—अनुवादक : अमुद्रित । प्रकाशक : दि ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबल सोसाइटी, कलकत्ता । वर्ष : १९१२ । विषय : धर्म । लिपि : कैथी । मूल्य : दो पैसे ।

५८. नगपुरिया गीत, पहला एवं दूसरा भाग—रचयिता : श्री नईम उद्दीन मिरदाहा । प्रकाशक : श्री नईम उद्दीन मिरदाहा, मौजा : कादोजोरा पोस्ट : हेठु घाघरा, जिला : राँची । वर्ष : १९५९ । विषय : गीत । लिपि : देवनागरी । मूल्य : सैंतीस नये पैसे ।

५९. "नगपुरिया गीत" तीसरा : चौथा भाग—रचयिता : श्री नईम उद्दीन मिरदाहा । प्रकाशक : श्री नईम उद्दीन मिरदाहा, मौजा : कादोजोरा, पोस्ट : हठु घाघरा, जिला : राँची । वर्ष : अमुद्रित । विषय : गीत । लिपि : देवनागरी । मूल्य : सैंतीस नये पैसे ।

६०. नागपुरिया (सदानी) साहित्य, दूसरा ग्रन्थ—प्रथम भाग सदानी रीडर के नाम से प्रकाशित : ग्रंथकर्त्ता : पीटर शांति नवरंगी । प्रकाशक : पीटर शांति नवरंगी, सेंट अल्बर्ट कॉलेज, राँची । वर्ष : १९६४ । विषय : कहानी, लीला तथा गीत संग्रह । लिपि : देवनागरी । मूल्य : दो रुपये ।

६१. नगपुरिया पहिल पोथी—लेखक : श्री धनीनाम बक्शी । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष : १९४८ । विषय : पहली पोथी । लिपि : देवनागरी । मूल्य : दो आने ।

६२. **नया गीत**—रचयिता : शेख बालक। प्रकाशक : शेख बालक, ग्राम : सुकुरहुटु, डाकघर : सुकुरहुटु (कांके), जिला : राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : चार आने।

६३. **नागपुरिया गीत (पाँचवाँ और छठा भाग)**—रचियता : नईम उद्दीन मिरदाहा। प्रकाशक : नईम उद्दीन मिरदाहा, ग्राम : कादोजोरा, डाकघर : हठुघाघरा, जिला : राँची। वर्ष : १९६५। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास पैसे।

६४. **नागपुरिया गीत (सातवाँ और आठवाँ भाग)**—रचयिता : नईम उद्दीन मिरदाहा। प्रकाशक : नईम उद्दीन मिरदाहा, ग्राम : कादोजोना, डाकघर : हठुघाघरा, जिला : राँची। वर्ष : १९६५। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास पैसे।

६५. **नागपुरिया गीत (नवाँ और दसवाँ भाग)**—रचयिता नईम उद्दीन मिरदाहा। प्रकाशक : नईम उद्दीन मिरदाहा, ग्राम : कादोजोरा, डाकघर : हठुघाघरा, जिला : राँची। वर्ष : १९६५। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : साठ पैसे।

६६. **नागपुरिया गीत**—रचयिता : खुदी सिंह। प्रकाशक : खुदी सिंह। मो० घोघरा, पो० गुमला, जिला : राँची। वर्ष : अलिखित। विषय : गीत। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पचास पैसे।

६७. **नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण**—लेखक : पीटर शांति नवरंगी एस० जे०। प्रकाशक : स्वयं, संत अल्बर्ट कॉलेज, राँची। वर्ष : १९६५। लिपि-देवनागरी। मूल्य : दो रुपये।

६८. **फोगली बुढ़िया कर कहनी**—लेखक : श्री झारखण्डी। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : अमुद्रित। विषय : कथा। लिपि-देवनागरी। मूल्य : तीन आने।

६९. **बुझौवल तथा झूमर**—लेखक : डोमन राम। प्रकाशक : डोमन राम; ग्राम : मनातू, डाकघर : कमड़े, जिला : राँची। वर्ष : १९६४। विषय : बुझौवल (हिन्दी) झूमर (नागपुरी)। लिपि : देवनागरी। मूल्य : पंद्रह नये पैसे।

७०. **भारत का नया चमत्कार**। रचयिता : कवि भारत नायक। प्रकाशक : कवि भारत नायक, ग्राम तथा पोस्ट : बालालौंग, जिला : राँची। वर्ष : १९६३। विषय : गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य : पंद्रह नये पैसे।

७१. **भवतर्नी चिन्ताहर्नी**। रचयिता : डोमन राम। प्रकाशक : डोमन राम, गाँव : मनातू, पोस्ट : कमड़े, जिला : राँची। वर्ष : १९६२। विषय : झूमर तथा कीर्त्तन। लिपि : देवनागरी। मूल्य बासठ नये पैसे।

७२. **मांदर के बोल पर**। लेखक : श्री विष्णुदत्त साहु। प्रकाशक : जन-सम्पर्क

विभाग, बिहार। वर्ष : १९५९। विषय : नाटक-संग्रह। लिपि : देवनागरी। मूल्य: निःशुल्क।

७३. **लंकाकाण्ड**—लेखक : जयगोविन्द मिश्र। इसकी प्रति मेरे देखने में नहीं आई।

७४. **लैंग्वेज हैंडबुक सदानी**। लेखक : अमुद्रित। प्रकाशक : मेसर्स वेंग डनलप एण्ड को०, लिमिटेड, कलकत्ता। वर्ष : १९३१। विषय : व्याकरण। लिपि : रोमन। मूल्य : केवल निजी वितरण के लिये मुद्रित।

७५. **लुन्दरू दासी झूमैर**—लेखक : लुन्दरू कवि। संग्रकर्त्ता : श्री अमीन मेहर। प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा। वर्ष : १९५१। विषय : झूमर। लिपि : देवनागरी। मूल्य : दो आने।

७६. **लव-कुश-चरित**—लेखक : श्री बलदेव प्रसाद साहु। प्रकाशक : कमल प्रकाशन, राँची। वर्ष : १९७१। विषय : चरित-काव्य। लिपि : देवनागरी। मूल्य : एक रुपया।

७७. **लील खो-रआ खे-खेल (दि ब्लू लेण्ड)**—संग्रहकर्त्ता : रेव० एफ० हान, डब्ल्यू० जी० आर्चर तथा धरमदास लकड़ा। प्रकाशक : पुस्तक भण्डार, लहेरिया सराय। वर्ष : १९४०। विषय : गीत-संग्रह। लिपि-प्रस्तावना रोमन तथा संग्रह देवनागरी में। मूल्य : अमुद्रित।

यह पुस्तक दो खण्डों में प्रकाशित है। दूसरे खण्ड का प्रकाशन सन् १९४१ ई० में उपरिलिखित प्रकाशक के द्वारा ही किया गया। दोनों खंडों में २६६० गीत संग्रहीत हैं, जिनमें अधिकांश गीत नागपुरी है।

७८. **लोक गीत**—रचनाकार : बटेश्वर नाथ साहु। प्रकाशक : बटेश्वर नाथ साहु, ग्राम : सुकुरहुटु। डाकघर : सुकुरहुटु (काँके), राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य-पच्चीस नये पैसे।

७९. **विवाह गीत संग्रह**—संग्रहकर्त्ता : जगन्नाथ महतो, एम० ए०, बी एल० एम० एल० ए०। प्रकाशक : जगन्नाथ महतो, ग्राम झटवाँव, पोस्ट : पुंडीदीरी। थाना : तमाड़, जिला : राँची। वर्ष : अमुद्रित। विषय : विवाह गीत। लिपि-देवनागरी : मूल्य आठ आने।

८०. **सादरी धर्म गीत**—संग्रहकर्त्ता : रे० फा० जोहन केरकेट्टा। प्रकाशक : जे० तिग्गा, काथलिक मिशन, राँची। वर्ष : १९६२। विषय : धर्म गीत। लिपि-देवनागरी। मूल्य : अमुद्रित।

८१. **सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार (संत मरकुस कर लिखल)**। अनुवादक : पी० शां० नवरगी, एस० जे०। प्रकाशक : पी० केरकेट्टा, एस० जे०, राँची। वर्ष : १९६२। विषय : धर्म साहित्य। लिपि-देवनागरी। मूल्य : छप्पन पैसे।

८२. **संगती सुमन माला** । लेखक : श्री धनीराम बक्शी । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष : १९५८ । विषय : गीत । लिपि-देवनागरी । मूल्य : तीन आने ।

८३. **सदानी ए भोजपुरी डायलेक्ट स्पोकन इन छोटानागपुर**—लेखिका : डॉ० मोनिका जोर्डन : हार्स्टमन । प्रकाशक : ओट्टो हरासोविज, वेइसबादेन, जर्मनी । वर्ष : १९६९ । विषय : शोध प्रबन्ध । लिपि : रोमन । भाषा : अंग्रेजी । मूल्य : अमुद्रित ।

८४. **"सदानी फ़ोकलोर स्टोरीज"**—संकलन कर्त्ता : रेव० फा० बुकाउट, एस० जे० । प्रकाशक : काथलिक मिशन, राँची । वर्ष : अमुद्रित । विषय : लोक : कथा । लिपि : रोमन । मूल्य : मात्र निजी वितरण के लिये ।

विशेषः—यह पुस्तक साइक्लोस्टाइल कर प्रकाशित की गई । पुस्तक के दाहिने पृष्ठ पर सादरी में कहानी तथा बायें पृष्ठ पर उसी का अंग्रेजी अनुवाद साथ-साथ प्रस्तुत है ।

८५. **सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार (संतमतीकर लिखल)** । अनुवादक : पीटर शांति नवरंगी, एस० जे० । प्रकाशक : काथलिक मिशन, राँची । वर्ष : १९६३ । विषय : धार्मिक साहित्य । लिपि - देवनागरी । मूल्य : एक रुपया ।

८६. **सिरी ईसु खिरिस्त कर पवितर सुसमाचार (संत लुकस कर लिखल)**—अनुवादक पीटर शांति नवरंगी, एस० जे० । प्रकाशक : काथलिक मिशन, राँची । वर्ष : १९६४ विषय : धार्मिक साहित्य । लिपि : देवनागरी । मूल्य : एक रुपया ।

८६. **सोनझईर** । लेखक : प्रफुल्ल कुमार राय । प्रकाशक : प्रफुल्ल कुमार राय, राँतू रोड, राँची । वर्ष : १९६७ । विषय : गीत और कहानी-संग्रह । लिपि : देवनागरी । मूल्य : एक रुपया ।

८७. **श्रीकृष्ण चरित**—लेखक : श्री धनीराम बक्शी । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष : अमुद्रित । विषय : जीवनी । लिपि : देवनागरी । मूल्य : आठ आना ।

८८. **श्री गणेश : चौठ-कहनी** । लेखक : श्री दुखहरण साहु । प्रकाशक : हितैषी कार्यालय, चाईबासा । वर्ष : १९५२ । विषय : पौराणिक कथा । लिपि : देवनागरी । मूल्य : तीन आने ।

नई पुस्तकें

८९. **नागपुरी और उसके बृहत-त्रय**—लेखक : डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी । प्रकाशक : कमल प्रकाशन, राँची । वर्ष : १९७१ । विषय-भाषा तथा साहित्य लिपि : देवनागरी । मूल्य : तीन रुपये ।

९०. **नागपुरी भाषा साहित्य**—लेखक : विसेश्वर प्रसाद केशरी । प्रकाशक :

कमल प्रकाशन, राँची। वर्ष-१९७१। विपय: निवन्ध-संग्रह। लिपि - देवनागरी। मूल्य: तीन रुपये।

९१. **नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय**। लेखक: योगेन्द्रनाथ तिवारी। प्रकाशक: योग प्रकाशन, ऊपर वाजार, राँची। विषय: व्याकरण तथा साहित्य। वर्ष: १९७१। लिपि: देवनागरी। मूल्य-एक रुपया ५० पैसे।

९२. **दू डाइर बीस फूल**—प्रधान संपादक: डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी। प्रकाशक: स्टुडेंट्स बुक डिपो: अपर वाजार, राँची। विपय: गद्य-पद्य-संग्रह। लिपि: देवनागरी।

९३. **विश्वनाथ शाही**। लेखक: विसेश्वर प्रसाद केशरी। प्रकाशक: नागपुरी भाषा परिपद्, राँची। वर्ष: १९७०। विपय: नाटक। लिपिदे: वनागरी। निःशुल्क वितरण के लिए।

(ख) नागपुरी साहित्य-सेवियों का संक्षिप्त परिचय

अर्जुनसिंह—

सहदेवसिह के सुपुत्र स्व० अर्जुनसिह नागपुरी के एक अच्छे गीतकार थे। आप ग्राम : कलिगा (गुमला) के निवासी थे। आपकी हस्तलिखित दो पुस्तकों की जानकारी प्राप्त हुई है : (१) लंकाकाण्ड, (२) भगवत्।

अब्बास अली—

पिता का नाम : श्री अकबर अली। जन्म : नवम्बर १९२६। जन्म-स्थान : डुमरी (राँची)। शिक्षा : मिड्ल पास। आजीविका : शिक्षण। आपके कुछ गीत आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुए है। "नागपुरी गीत" नामक आपकी एक पुस्तिका भी प्रकाशित हुई है। वर्त्तमान पता : सहायक शिक्षक, उच्च बुनियादी विद्यालय, सोसई आश्रम, पोस्ट सोसई, जिला : राँची। स्थायी पता : ग्राम : डुमरी, पोस्ट नर कोपी, जिला : राँची।

अमीन मेहर—

पिता का नाम : स्व० सुधुमेहर। जन्मकाल : संबत् १९८७ साल। जन्म-स्थान : कोनमेंजरा (सिमडेगा)। शिक्षा : मिड्ल तक। आजीविका : कपड़ा बुनना। श्री अमीन मेहर ने स्व० लुन्दस कवि के गीतों का संग्रहकर "लुन्दस दासी फूमैंर" नामक पुस्तिका का प्रकाशन हितैषी कार्यालय, चाईबासा से करवाया। वर्त्तमान तथा स्थाई पता : ग्राम कोनमेंजरा, डाकघर : खिजरी (सिमडेगा) जिला : राँची।

अल्फ्रेड पी० बून—

जन्म : २ नवम्बर १८७०। जन्म-स्थान : एलोस्ट। २३ सितम्बर १८९० को धर्म—समाज में प्रविष्ट। १४ दिसम्बर १९०४ से मिशन के सेवा-कार्य में संलग्न। मृत्यु : २३ अक्तूबर १९४२।

रेवरेण्ड बून ने छः पुस्तकें नागपुरी में लिखीं, जो अब भी अप्रकाशित हैं। ये सभी पुस्तकें रोमन लिपि में लिखी गई हैं। पुस्तकों के नाम : (१) प्रभु यीसु ख्रीस्त मसीह, (२) संत मार्क केर लिखल सुसमाचार, (३) साल भइर केर हरएक एतवार दिन पढ़ेक ले सुसमाचार, (४) संत लुकसकेर पवित्तर सुसमाचार, (५) संत योहन केर लिखल सुसमाचार तथा (६) प्रेरितमनकर कार्य।

ईसफ जान—

जन्म : १५ फरवरी १८६६। जन्म-स्थान : एनवर्स। २३ सितम्बर १६१६ को धर्म-समाज में प्रविष्ट। २५ फरवरी १९२० से मिशन-सेवा कार्य में संलग्न। २ दिसम्बर १९२२ को स्वदेव वापस। मृत्यु : ३१ अगस्त १९५१।

"नागपुरिया कहानी" नामक एक हस्तलिखित पुस्तक काथलिक मिशन, राँची में दिखलाई पड़ी, जिनमें लोक-कथाएँ संगृहीत हैं। यह पुस्तक ईसफ जान की है। रेवरेण्ड वुकाउट के "सादानी फोकलोर स्टोरीज" में जो लोक-कथाएँ हैं, वे सारी रचनाएँ ईसफ जान की पुस्तक में भी हैं।

पांडुलिपि रोमन लिपि में हैं।

एतवा उराँव—

पिता का नाम : श्री गोन्डा उराँव। जन्म-तिथि : ६ जनवरी १९२६। जन्म-स्थान : गाँव : पुरियो (राँची)। शिक्षा : पाँचवीं श्रेणी तक। आजीविका : गृहस्थी। सन् १९५१ में आपने "आदिवासी नगपुरीया संगीत" नामक एक पुस्तक का सम्पादन किया। इस पुस्तक के अधिकांश गीत नागपुरी में ही हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : ग्राम तथा पोस्ट : पुरियो (राँतू) जिला : राँची।

एन्तोनी सोयस—

जन्म : २६ जून १८६२। जन्म-स्थान : ऐन्डरलैक्ट। २३ सितम्बर १९१० को धर्म-समाज में प्रविष्ट। ६ मार्च १९२१ में मिशन के कार्य में सम्मिलित। ३० नवम्बर १९४६ को बेलजियम में देहान्त। स्व० एन्तोनी सोयस ने नागपुरी का एक संक्षिप्त "शब्द-संग्रह" प्रस्तुत किया, जो अब तक अप्रकाशित है। इस शब्द-संग्रह का नाम : "सदरी भोकेवुलरी" है।

कंचन—

इनका वास्तविक नाम चुन्नी राम दूबे था, पर ये अपने नौकर कंचन के नाम से ही गीत लिखा करते थे। जन्म-तिथि : फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी संवत् १९१९। जन्म-स्थान : वड़काडीह। मृत्यु : संवत् १९८४ के पश्चात् किसी समय। इन्होंने अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे थे, जिनकी छाप उनके गीतों में दिखलाई पड़ती है। शंकर-स्तुति, कृष्ण-चरित, महाभारत, सुदामा-चरित तथा लंका काण्ड के अलावे इन्होंने टाना भगत आन्दोलन, तीर्थ-यात्रा तथा अपने संबंध में भी गीत लिखे हैं।

कपिलमुनि पाठक देवघरिया—

पिता का नाम : स्व० चंद्र मुनि पाठक देवघरिया। जन्म-काल : सावन संवत् १९६० साल। जन्म-स्थान : हापामुनि (राँची)। शिक्षा : साक्षर। आजीविका : पौरो-

हित्य तथा गृहस्थी । श्री कपिल मुनि पाठक ने अनेक विषयों पर गीत लिखे हैं । इनके द्वारा रचित गीतों की संख्या कम है, पर ये गीत बड़े ही मार्मिक है । आप स्वयं एक अच्छे गायक भी है । वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : हापामुनि, डाकघर : गम्हरिया, जिला : राँची ।

करमचंद भगत —

पिता का नाम : श्री भाऊवा उराँव : जन्म-तिथि : भाद्र शुक्ल एकादशी १९९३ । जन्म-स्थान : ग्राम जरिया (राँची) । शिक्षा : स्नातक तक । आजीविका : अध्यापन । श्रा करमचंद भगत हिन्दी, नागपुरी तथा उराँव तीनों भाषाओं में लिखते हैं । आपने कुछ दिनों तक "पड़हा" मासिक का भी संपदान किया था । आपकी नागपुरी कविताएँ आदिवासी में प्रकाशित तथा आकाशवाणी राँची से यदा-कदा प्रसारित होती रहती हैं । वर्त्तमान पता : करमटोली, बूटी रोड, राँची । स्थायी पता : ग्राम जरिया : ड़ाकघर : बेड़ो, जिला : राँची ।

किशोरी सिंह :

आपकी मातृभाषा पंजाबी थी, पर आप नागपुरी साधिकार बोलते थे, फलतः आकाशवाणी, राँची में आपकी नियुक्ति रेडियो कलाकार के रूप में हो गई । "देहाती दुनिया" कार्यक्रम के अन्तर्गत आपके द्वारा लिखित अनेक नागपुरी नाटक तथा गीत प्रसारित हुए ।

कुमार उदित नारायण सिंह देव—

पिता का नाम : श्री कुँवर रघुनाथ शरण सिंहदेव । जन्म-काल : सन् १९१५ । जन्म-स्थान : बाघडेगा (राँची) । शिक्षा : ९ वीं श्रेणी तक । आजीविका : खेती-बारी । प्रकाशित पुस्तकें : (१) नागपुरिया जनी झुमैर (रासक्रीड़ा), (२) नागपुरिया डमकच, (३) नागपुरिया जनी झुमैर और मर्दानी झुमैर, (४) छोटा नागपुरिया जनी झुमैर (हारमोनियम गाइड) आप बीरु राजघराने के हैं । आपने उपर्युक्त पुस्तकों में अनेक गीतकारों के गीतों को संगृहीत किया है । नागपुरी साहित्य की उन्नति में आपकी विशेष दिलचस्पी है । वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट : बाघडेगा, परगना बीरु केसलपुर, थाना : कुरडेग, जिला : राँची ।

कुन्दन प्रेमचन्द नवरंगी —

पिता का नाम : स्व० आनन्द सिंह । जन्म : १२ अप्रैल १८९५ । जन्म-स्थान : पाटपुर (राँची) । शिक्षा : मिड्ल । आजीविका : कृषि । श्री कुन्दन प्रेमचंद नवरगी ने नागपुरी लोक-कथाओं के संग्रह में विशेष परिश्रम किया है । इनके द्वारा संगृहीत कुछ लोक-कथाओं को किंचित् संशोधन के उपरान्त श्री पीटर शांति नवरंगी ने अपनी पुस्तक "नागपुरिया (सदानी) साहित्य" में स्थान दिया है । वर्त्तमान तथा

स्थायी पता : ग्राम : सुनुरुई, डाकघर : बरदा, थाना : तोरपा : जिला-राँची।

कुँवर रघुनाथ शरण सिंहदेव—

पिता का नाम : स्वर्गीय कुँवर नीलाम्बर सिंहदेव। जन्म-वि०सम्वत् १९४८। जन्म-स्थान : अंकुरा (राँची)। शिक्षा : मिड्ल तक। आजीविका : गृहस्थी। आपके कुछ गीत "राँची एक्सप्रेस" में प्रकाशित हुए हैं। "छोटा नागपुरिया संगीत" नामक आपकी एक पुस्तक अप्रकाशित है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : गाँव तथा पोस्ट : बावडेगा, जिला : राँची।

कुमार उदित नारायण सिंह (नागपुरी कवि) आप ही के सुपुत्र हैं।

कोनरांड बुकाउट—

जन्म : १९ अक्तूबर १८६७। जन्म-स्थान : ब्रूस। श्री बुकाउट २६ सितम्बर १८८६ को धर्म-समाज में प्रविष्ट हुए। ४ नवम्बर १८८९ से मिशन के सेवा-कार्य में संलग्न। कलकत्ते में १४ अगस्त १९०७ को मृत्यु।

स्व० बुकाउट ने नागपुरी का एक पूर्ण व्याकरण तैयार किया था, जो प्रकाशित न हो सका। इस व्याकरण की एक प्रतिलिपि श्री प्रफुल्ल कुमार राय के पास है। कुछ नागपुरी लोक-कथाओं का उन्होंने संग्रह भी करवाया था। रेवरेण्ड कार्डोन एवं रेवरेण्ड फ्लोर के संशोधनों के साथ ये लोक-कथाएँ रोमन लिपि में साइक्लोस्टाइल कर "सदानी फोकलोर स्टोरीज" नामक पुस्तक में प्रकाशित की गईं।

(कवि) बालक—

कवि बालक का वास्तविक नाम उमर हयात अली है। पिता का नाम : स्व० रहीम बक्श। जन्म-काल : सन् १९४० ई०। जन्म-स्थान : ग्राम : सुकुरहुटु (काँके) राँची। शिक्षा : माध्यमिक। आजीविका : कृषि। कवि बालक के अनुसार इन्होंने लगभग तीस हजार नागपुरी गीत लिखे हैं, जो विभिन्न विषयों पर हैं। प्रकाशित पुस्तक : नया गीत। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम + डाकघर : सुकुरहुटु (काँके) थाना : राँची : जिला-राँची।

खुदी सिंह—

पिता का नाम—श्री लोकनाथ सिंह। जन्म-तिथि : आश्विन वदी १५ संवत् १९८७। जन्म-स्थान : घोबरा। शिक्षा : अपर प्राइमरी। आजीविका : गृहस्थी। "नागपुरिया गीत" आपकी प्रकाशित पुस्तिका है, जिसमें आधुनिक गतिविधियों के कुछ सफल चित्र मिलते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : घोबरा, पो० गुमला, जिला : राँची।

ख्रिस्त प्यारे केरकेट्टा—

पिता का नाम : श्रीयाकूब केरकेट्टा। जन्म : १९०३। जन्म-स्थान : कसिरा।

शिक्षा : मैट्रिक। आप आदिम जाति सेवा मंडल के आजीवन सदस्य हैं। आपने नागपुरी में अनेक प्रकार की रचनाएँ लिखी हैं, जो अब तक अप्रकाशित हैं। गाँवों में युवकों के सहयोग से आपने अपने नागपुरी नाटकों का कई बार सफल अभिनय भी करवाया है। कुछ रचनाएँ आकाशवाणी, के द्वारा प्रसारित भी हुई हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : आदिम जाति सेवा मंडल, पोस्ट : सिमडेगा, राँची।

गोपीनाथ मिश्र—

पिता का नाम : श्री विसेश्वरनाथ मिश्र। जन्म-तिथि : ३ मई १९४६। जन्म-स्थान : बेतलंगी (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका। आजीविका : कृषि। श्री गोपीनाथ मिश्र ने आधुनिक विषयों पर भी कविताएँ लिखी हैं, यथा : चीन गुमान और सामूहिक योजना। आपकी रचनाएँ यदा-कदा "आदिवासी" (साप्ताहिक) में प्रकाशित होती रहती हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता-गाँव : वेतलंगी, पो० : सोंस, जिला : राँची।

गोविन्द साहु —

पिता का नाम : श्री राम प्रसाद साहु। जन्म-विक्रम संवत् : १९७१। जन्म-स्थान : गाँव : पिठोरिया (राँची)। शिक्षा : पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण। आजीविका : गृहस्थी। प्रकाशित पुस्तक, (१) किसानी गीत। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट : पिठोरिया, लोहड़िया टोला, जिला : राँची।

घासीराम—

पिता का नाम : स्व० भादेराम। जन्म-काल : संवत् १९१६। जन्म-स्थान : करकट। शिक्षा : मिड्ल। आजीविका : खेती-बारी। प्रकाशित पुस्तकें—(१) नागपुरी फाग शतक (२) ललना-रंजन (३) दुर्गा सप्त शती (४) शिव बन्दना (५) फगुवा (६) नागपुरी फगुवा गीत। घासीराम की कुछ अप्रकाशित रचनाएँ भी हैं जिनमें राम जन्म, राम स्वयंवर, कृष्ण-जीवन, शिवजी की स्तुति, सुदामा-चरित, सुन्दर काण्ड, उषाहरण तथा नाग वंशावली आदि विषय सम्मिलित है। आप नागपुरी के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं वंद्य कवि माने जाते हैं। कवि के रूप में जितनी ख्याति आपको मिली, इतनी ख्याति किसी दूसरे को नहीं। ६७ वर्ष की आयु तक आप नागपुरी की सेवा में निमग्न रहे।

छुन्नूलाल अम्बिका प्रसाद नाथ शाहदेव—

पिता का नाम : श्री महाराज कुमार जगतमोहन नाथ शाहदेव। जन्म : १९०३ ई०। जन्म-स्थान : हुरहुरी गढ़ (राँची)। शिक्षा : बी० ए०, एल० एल० बी०। आजीविका : वकालत। आपकी कई रचनाएँ "नागपुरी" में प्रकाशित हुई हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : आर्यपुरी, राँतू रोड, राँची।

जगधीप नारायण तिवारी—

पिता का नाम : श्री जगनिवास नारायण तिवारी। जन्म-तिथि : अक्षयनवमी कार्तिक सुदी १९५८ वि० सं०। जन्म-स्थान : ग्राम : वोड़ेया (राँची)। शिक्षा : मिड्ल तक। आजीविका : खेती-बारी। श्री जगधीप नारायण तिवारी अपने पिता श्री जगनिवास नारायण तिवारी की तरह नागपुरी के एक अच्छे गायक कवि हैं और आपने लगभग ५००-६०० नागपुरी गीतों की रचना विभिन्न विषयों पर की है। आप बँगला तथा मुंडारी में भी गीत लिख लेते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : आरा, पोस्ट-महिलोंग, जिला : राँची।

जगन्नाथ महतो—

पिता का नाम : श्री सोमा महतो। जन्म-तिथि : १२ दिसम्बर १९०२। जन्म-स्थान : झटगाँव (राँची)। शिक्षा : एम०ए०, बी०एल०। आजीविका : कृषि। प्रकाशित पुस्तक : "विवाह गीत संग्रह"। इस पुस्तक में कई अज्ञात कवियों के गीत संगृहीत हैं। ये सभी गीत पाँच : परगना में विवाह के अवसर गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त श्री महतो ने "मुण्डारी" भाषा के विकास में भी योगदान किया है। सन् १९५२ से सन् १९६१ तक आप बिहार विधान सभा के सदस्य थे। सन् १९६४ में आपको तमाड़ प्रखण्ड का प्रमुख निर्वाचित किया गया। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : झटगाँव, थाना : तमाड़, पो० पुन्डीदीरी, जिला : राँची।

जगन्नाथ सिंह—

पिता का नाम : श्री मनीनाथसिंह : जन्म-काल : लगभग सन् १९१४ ई० में। जन्म-स्थान : हर्री (राँची)। शिक्षा : लोअर तक। आजीविका : गृहस्थी। श्री जगन्नाथसिंह नागपुरी के एक अच्छे गायक कवि हैं। आपके गीतों में आधुनिक समस्याओं का सफल चित्रण मिलता है। आपने लगभग दो सौ से भी ऊपर गीत लिखे हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : आलिन्गुड़, डाकघर : कुन्दुर मुंडा, जिला : राँची।

जगनिवास नारायण तिवारी—

पिता का नाम : स्व० मधुसूदन नारायण तिवारी। जन्म-तिथि : चतुर्दशी श्रावण १९३७ वि० संवत्। जन्म-स्थान : ग्राम : वोड़ेया (राँची)। शिक्षा : मिड्ल पास। आजीविका—खेती-बारी। "रस तरंगिणी" श्री जगनिवास नारायण तिवारी की हस्तलिखित पुस्तक है, जिसमें लगभग ६०० गीत हैं। इन गीतों में शृंगार रस की छटा अलंकार-प्रयोग तथा उक्ति-पटुता दर्शनीय हैं। इन गीतों के आधार पर श्री तिवारी को नागपुरी साहित्य में शृंगार-रस का श्रेष्ठ गायक-कवि माना जा सकता है। श्री तिवारी की कुछ रचनाओं का प्रसारण आकाशवाणी राँची ने भी किया है। १६ दिसम्बर १९६५ को आपका देहावसान हो गया।

जयगोविन्द मिश्र—

इनके पिता का नाम नगराज मिश्र था। जयगोविन्द मिश्र के जीवन के संबंध मे पूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध नही। सिर्फ इतना ही पता चलता है कि इनका घर टाटीसिलवे में था, पर ये कोयलारी में रहा करते थे; क्योंकि इसी गाँव में इनकी खेती-बारी थी। ये हनूमान सिंह तथा बरजूराम पाठक के समकालीन माने जाते है। इन्होंने रामायण, महाभारत तथा भागवत आदि के आधार पर अनेक गीत लिखे है। "लकाकाण्ड" इनकी प्रकाशित रचना है, पर इसकी प्रति अब उपलब्ध नहीं होती।

जुलियस तीगा—

पिता का नाम : स्व० मसीहदास तीगा। जन्म-तिथि : १३ अक्तूबर १९०३। जन्म-स्थान : पाकरटोली (राँची)। शिक्षा : बी० ए० (प्रतिष्ठा) दर्शन-शास्त्र। आजीविका : सेवा। प्रकाशित पुस्तक : छोटानागपुर केर पुत्री। अनेक अप्रकाशित पुस्तके एव स्फुट रचनाएँ।

श्री तीगा ने नागपुरी भाषा तथा साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की है। आकाश-वाणी राँची से "हमारी दुनिया" का जो कार्य-क्रम प्रतिदिन प्रसारित होता है उसके आप परामर्शदाता थे। इसके पूर्व आप "देहाती दुनिया" के "सहायक प्रस्तोता" थे। आपने छोटानागपुर के लोक-नृत्य तथा लोक-गीतो के उद्धार के लिए भी ऐतिहासिक प्रयास किया है, जिसके लिए बिहार सरकार ने आपको पुरस्कृत भी किया था।

जोसेफ जान्स—

जन्म-तिथि : १५ फरवरी १८९९। जन्म-स्थान · एनवर्स। २३ सितम्बर १९१६ को धर्म-समाज में प्रविष्ट। २५ फरवरी १९२० से मिशन-कार्य में सम्मिलित। २ दिसम्बर १९२२ को स्वदेश वापस। ३१ अगस्त १९५१ ई० में मृत्यु। स्व० जोसेफ जान्स की हस्तलिपि में "नागपुरिया कहानी" नामक एक पांडुलिपि मिलती है। इस पांडुलिपि के सम्बन्ध में यथा स्थान विचार किया गया है।

जोहन केरकेट्टा—

पिता का नाम : स्व० जोसेफ केरकेट्टा। जन्म-तिथि : ७ जनवरी १९१९। जन्म-स्थान : गाईबीरा। शिक्षा : बी०ए०, पी०एच०टी०एच०। आजीविका : सेवा (पौरोहित्य)। प्रकाशित पुस्तकें : (१) सादरी धर्मगीत, (२) एतवार केर पाठ। हस्तलिखित रचनाएँ : (१) येसु संगे, (२) जय येसु। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : काथलिक चर्च, हामिरपुर, राउरकेला-३, उड़ीसा।

डोमन राम—

पिता का नाम श्री जितवाहन राम। जन्म-काल : सन् १९३२ ई०। जन्म-

स्थान : मनातू (राँची)। शिक्षा : अपर पास। आजीविका : पत्थर काटने का काम। प्रकाशित पुस्तकें : (१) राधिका-विलाप, (२) भवतर्नी चिताहर्नी, (३) द्वादश विजनीहृदय रंजनी तथा (४) दोहे की रीति से बुझौवल कहानी। श्री डोमन राम भक्ति रस के एक अच्छे कवि हैं। आपने वर्त्तमान जीवन की समस्याओं पर भी कुछ गीत लिखे हैं। अनेक गीत शीघ्र ही प्रकाश में आने वाले हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : मनातू, डाकघर : कमड़े, थाना : राँची, जिला : राँची।

दिवाकर मणि पाठक "मधुप"—

पिता का नाम : श्री विजय मणि पाठक। जन्म-काल : १६३६। जन्मस्थान : ग्राम : हापामुनि (राँची)। शिक्षा : संस्कृत में साहित्याचार्य। आजीविका : पौरोहित्य। प्रकाशित पुस्तक : नागपुरीया संगीत माधुरी। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् १६५८ में हुआ। आप नागपुरी के लोक-गीतों के संग्रह तथा प्रकाशन के लिए विशेष प्रयत्न-शील हैं। वर्त्तमान पता : प्लाथपुर उच्च विद्यालय, कोरोंजों, पोस्ट : कोरोंजों, जिला : राँची।

दुःखहरण नायक—

पिता का नाम : स्व० रामकन्हाई नायक। जन्म-तिथि : २१ जनवरी १६१२। जन्मस्थान : बुण्डू (राँची)। शिक्षा : मैट्रिक सी०टी०। आजीविका : राजकीय सेवा। श्री नायक नागपुरी भाषा के एक अच्छे गायक तथा कवि हैं। आपकी रचनाओं में अध्यात्मवाद एवं रहस्यवाद की छाप विशेष दिखाई पड़ती है। आपकी रचनाएँ "आदिवासी" में प्रकाशित तथा आकाशवाणी, राँची से सदैव प्रसारित होती रहती हैं। आप जन-सम्पर्क विभाग, राँची में नियुक्त थे और जन-सम्पर्क का कार्य नागपुरी भाषा के माध्यम से ही करते थे। इस कार्य में सरसता लाने के लिए श्री नायक स्वरचित नागपुरी गीतों की भी सहायता लेते थे। अब आपने सेवा से अवकाश प्राप्त कर लिया है। स्थायी पता : ग्राम तथा पोस्ट : बुण्डू, जिला : राँची।

घनीराम बक्शी—

पिता का नाम : श्री शुकनाथ बक्शी। जन्म-तिथि : १४ जनवरी १८६६। जन्म-स्थान : चाईबासा। शिक्षा : प्रवेशिका। आजीविका : पुस्तक प्रणयन, प्रकाशन तथा विक्रय। आपने अपनी प्रकाशन-संस्था, "हितैषी कार्यालय" से नागपुरी की अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं। जिनमें नागपुरी गीत संगृहीत हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकें आपके द्वारा ही लिखी गई हैं। इस प्रकार नागपुरी गीतों को संपूर्ण छोटानागपुर में प्रचारित-प्रसारित करने का एक मात्र श्रेय आपको ही है। श्री बक्शी पद्यकार के अतिरिक्त नागपुरी के मँजे हुए गद्यकार भी थे। आपका देहावसान चाई-बासा में २२ मई १६६६ को हो गया।

नईमुद्दीन मिरदाहा—

पिता का नाम : श्री अमीर उद्दीन मिरदाहा। जन्म-तिथि : १४ जून १९३६। जन्म-स्थान : कादोजोरा (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका तक। आजीविका : राजकीय सेवा (कर्मचारी)। आपके गीतों का संग्रह "नागपुरिया गीत" के नाम से दस भागों में प्रकाशित हुआ है। श्री मिरदाहा कवि होने के साथ-साथ एक अच्छे गायक एवं कहानीकार भी हैं। वर्त्तमान-पता : ग्राम : कादोजोरा, थाना : बेड़ो, पोस्ट : हठु-घाघरा, जिला राँची। स्थायी पता : उपर्युक्त।

पाण्डेय वीरेन्द्रनाथ राय—

पिता का नाम : श्री पाण्डेय सुरेन्द्र नाथ राय। जन्म-तिथि : १६ जुलाई १९१६। जन्म-स्थान : मौजा : पहाड़ कन्डरिया (राँची)। शिक्षा : बी०ए०, बी०एल०। आजीविका : कृषि एवं वकालत श्री। राय नागपुरी के प्रसिद्ध गायक-कवि है। इनके गीत आकाशवाणी, राँची से यदा-कदा प्रसारित होते रहते है। आजकल आप राँची में वकालत करते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : सुरेन्द्र भवन, डाकबँगला रोड, राँची।

पाण्डेय दुर्गानाथ राय—

पिता का नाम : श्री पाण्डेय मोहनराय। जन्म-तिथि : ५ जनवरी १९१०। जन्म-स्थान : सकरा (राँची)। शिक्षा : मिड्ल। आजीविका : खेती और नौकरी, हस्तलिखित पुस्तक : "नागपुरिया गीत"। आपकी रचनाएँ "आदिवासी" साप्ताहिक में प्रकाशित होती रहती है। कई वर्षो तक आप आकाशवाणी राँची के "हमारी दुनिया" नामक कार्यक्रम में रेडियो कलाकार थे। आकाशवाणी, राँची से भी आपकी रचनाएँ विविध विषयों पर निरन्तर प्रसारित होती रहती हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : सकरा, पो० सकरा, जिला : राँची।

पी० इड्नेस—

पी० इड्नेस गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च, राँची के जर्मन पादरी थे। आपने संपूर्ण बाइवल का अनुवाद नागपुरी में किया था, जिसका प्रकाशन पाँच भागों में हुआ। इड्नेस के प्रयासों के कारण ही नागपुरी ईसाई मिशनों नागपुरी में प्रवेश पा सकी थी। स्मरणीय है कि इड्नेस नागपुरी के प्रथम ज्ञात गद्यकार है।

पीटर शांति नवरंगी—

पिता का नाम : श्री विलियम प्रेमोदय नवरंगी। जन्म-तिथि : ३० दिसम्बर १८९९। जन्म-स्थान : पाटपुर (राँची)। शिक्षा : विशारद्। आजीविका : संन्यास (यीसुसंघी)। प्रकाशित पुस्तकें—

(१) संत मरकुस लिखल परभु ईसु कर सुसमाचार।
(२) संत मत्ती लिखल " " " "
(३) संत लूकस-लिखल " " " "
(४) संत योहन-लिखल " " " "
(५) सिरी ईसु-चरित चिन्तानइन
(६) सिम्पल सदानी ग्रामर (अंग्रेजी में)
(७) नागपुरिया सदानी व्याकरण (हिन्दी में)
(८) सदानी रीडर
(९) नागपुरिया सदानी साहित्य

इन पुस्तकों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी पुस्तकें लिखी हैं।

नागपुरी भाषा को व्यवस्था प्रदान करने तथा इसके उन्नयन के लिए आपने जो अथक श्रम किया है, वह अविस्मरणीय है। मृत्यु के पूर्व भी आप नागपुरी साहित्य के संग्रह-प्रकाशन तथा शब्द-कोश के प्रणयन के लिए प्रयत्नशील थे।

४ नवम्बर १९६८ को आपका देहावसान मांडर अस्पताल में हो गया।

प्रद्युम्न राय—

पिता का नाम श्री टीकैत परमानन्द राय। जन्म-तिथि : चतुर्थी श्रावण मास संवत् १९७२। जन्म-स्थान : राजा उलातु (राँची)। शिक्षा : मिड्ल पास। आजीविका : संगीत। श्री प्रद्युम्न राय नागपुरी के एक अच्छे गायक-कवि हैं। आपकी कुछ रचनाएँ आकाशवाणी राँची से यदा-कदा प्रसारित हुआ करती हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार विभाग द्वारा आयोजित कार्य-क्रम में भी कभी-कभी आप नागपुरी गीत प्रस्तुत करते हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता : ग्राम तथा डाकघर : राजाउलातु, जिला : राँची।

प्रफुल्ल कुमार राय—

पिता का नाम : स्व० पाण्डेय रामकिशोर राय। जन्म : ८ फरवरी १९२६। जन्म-स्थान : पहार बंगला (राँची)। शिक्षा : बी० कॉम, बी० एल०। आजीविका : सेवा। प्रकाशित पुस्तक : सोनझईर। श्री प्रफुल्ल कुमार राय नागपुर के एक अच्छे निबंधकार, कहानीकार तथा गीतकार हैं आपकी अनेक रचनाएँ नागपुरी आदिवासी तथा राँची टाइम्स में प्रकाशित तथा आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं। "नागपुरी भाषा परिषद्" के गठन तथा "नागपुरी" के प्रकाशन में आपका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। सम्प्रति "नागपुरी भाषा परिषद्" के आप सहायक-मंत्री हैं। स्थायी तथा वर्तमान पता : राँनु रोड, राँची।

प्रीतममसीह बारोभईया—

पिता का नाम : श्री धर्मदास बारोभईया। जन्मतिथि : २७ जनवरी १९१४। जन्म-स्थान : बादलुंग (राँची)। शिक्षा : आई०ए०, सी०टी०। आजीविका : शिक्षण। हस्तलिखित पुस्तकें : (१) ठेठ सदानी के कहानी, (२) सदानी डकमच, (३) सदानी बिहा, (४) फगुआ, (५) झुमइर, (६) जनी झुमइर, (७) भजन। श्री पीटर शांति नवरंगी ने अपनी कई पुस्तकों में श्री बारोभईया की रचनाओं को संकलित किया है। वर्त्तमान पता : संत पॉवल उच्च विद्यालय, राँची। स्थायी पता : गाँव : केलो महुआटोली, पोस्ट : बारदा, थाना : तोरपा, जिला : राँची।

बटेश्वरनाथ साहु—

पिता का नाम : श्री उदयनाथ साहु। जन्मतिथि : २० जनवरी १९४०। जन्म-स्थान : सुकुरहुटु (काँके) राँची। शिक्षा : प्रवेशिका। आजीविका : कृषि तथा सेवा। श्री बटेश्वरनाथ साहु नागपुरी के नवयुवक गायक कवि हैं जिनके गीतों में आधुनिक समस्याओं को भी स्थान मिला है। सौ से ऊपर अप्रकाशित गीत। प्रकाशित पुस्तक (१) लोकगीत। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम तथा डाकघर : सुकुरहुटु, थाना : राँची, जिला : राँची।

बड़ाईक ईश्वरी प्रसादसिंह—

पिता का नाम : श्री बड़ाईक देवनन्दनसिंह। जन्म-काल : सन् १९१२। जन्म-स्थान : करोंदी (गुमला, राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका तक। आजीविका : कृषि तथा व्यवसाय। श्री बड़ाईक नागपुरी के एक अच्छे नाटककार हैं। अपने गाँव में दुर्गापूजा के अवसर पर आप प्रायः नागपुरी में ही स्वलिखित नाटक मंच पर प्रस्तुत करते हैं। आपके सम्पादन में "झारखंड" नामक मासिक का प्रकाशन गुमला से होता था, जिसके प्रायः हर अंक में नागपुरी गीत आदि प्रकाशित किए जाते थे। आपने "गजेन्द्र सिंह" के नाम से भी नागपुरी में कुछ गीत लिखे हैं।

बरजूराम पाठक—

आप ग्राम हापामुनि के निवासी थे और आपने नागपुरी के प्रारंभिक कवि हनूमानसिंह को गीत-संगीत-प्रतियोगिता में एकबार परास्त किया था। सन् १८३१ का लरका आंदोलन आपके जीवन-काल में हुआ था, जिसका लोमहर्षक वर्णन आपके कुछ गीतों में मिलता है। आपके अनेक गीत प्रचलित है, पर उनका कोई संग्रह उपलब्ध नहीं।

बलदेव प्रसाद साहु—

पिता का नाम : श्री अयोध्या प्रसाद साहु। जन्म-तिथि : १० अक्तूबर १९३९। जन्म-स्थान : कटकाही (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका अनुत्तीर्ण। आजीविका :

गृहस्थी। प्रकाशित रचनाएँ : "लव कुश चरित।" इसके अतिरिक्त आपकी नागपुरी में लिखित तथा नागपुरी से संबंधित रचनाएँ बराबर पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी राँची के द्वारा प्रसारित होती रहती हैं। नागपुरी के विकास तथा प्रसार में आप रुचि रखते हैं। वर्त्तमान पता : मोकाम तथा पोस्ट : कटकाही, चैनपुर, जिला : राँची।

बलदेव साहु—

पिता का नाम : श्री लेतु साहु। जन्म-स्थान : सुकुरहुटु (काँके) राँची। जन्म-काल : वि० सं० १९१९ के आस-पास। मृत्यु : ६५ वर्ष की अवस्था में वि०सं० १९८४ के भादो मास में। आप एक शिक्षक थे। स्व० बलदेव साहु के पौत्र श्री नकुल साहु के पास जो पोथियाँ उपलब्ध हैं, उनमें कुछ गीत हनूमानसिंह तथा जय गोविन्द मिश्र के हैं। बलदेव साहु की भक्ति परक मौलिक रचनाएँ भी उपलब्ध हैं।

वसुदेवसिंह—

पिता का नाम—श्री सोनूसिंह। जन्म-काल : सन् १८७४ ई०। मृत्यु : ८४ वर्ष की अवस्था में सन् १९५८ ई० में। जन्म-स्थान : कामताड़ा (सिमडेगा)। स्व० वसुदेव सिंह एक जमींदार थे। आप हिन्दी, बँगला तथा उड़िया तीनों भाषाएँ जानते थे। उनके कुछ गीतों का संकलन कर बाघडेगा के श्री उदितनारायण सिंहदेव ने "जनी झूमैर और मर्दानी झूमैर" नामक एक पुस्तिका का प्रकाशन हितैषी कार्यालय, चाईबासा, से करवाया था। वसुदेवसिंह के गीत गाँवों में काफी प्रचलित हैं।

बानेश्वर साहु—

पिता का नाम : श्री हरिनाथ साहु। जन्म-तिथि : अगहन वि०सं० १९४५। जन्म-स्थान : सुकुरहुटु (काँके) राँची। शिक्षा : साक्षर। आजीविका : कृषि। श्री बानेश्वर साहु ने "ज्ञान मंजरी" नामक एक पुस्तिका तैयार की है, जिसमें ३० मौलिक गीत हैं। आप प्रथमाक्षरी लिखने में पटु हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम तथा डाकघर : सुकुरहुटु, थाना : राँची, जिला : राँची।

(प्रो०) विमल नाग—

प्रो० नाग ने १९५९ में "अंग्रेज-आदिवासी लड़कर संक्षिप्त बयान" नामक पुस्तिका लिखी। आप संत एन्थोनी कालेज, शिलाँग में विज्ञान के प्राध्यापक हैं।

भुवनेश्वर "अनुज"—

पिता का नाम : श्री कमल साहू। जन्म : ४ मार्च १९३७। जन्म-स्थान : छरदा (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिकोर्त्तीर्ण। आजीविका : पत्रकारिता तथा सेवा। आपकी गद्य रचनाएँ "नागपुरी" में प्रकाशित होती रही हैं। "नागपुरी भाषा-परिषद्" के गठन तथा "नागपुरी" के प्रकाशन में आपका सहयोग उल्लेखनीय है। स्थायी-पता

ग्राम : छरदा, पोस्ट : सिसई, जिला : राँची । वर्त्तमान पता : बहुबाजार, चर्च रोड, राँची ।

महथा अभिमन प्रसाद सिंह—

पिता का नाम : महथा शंभुनाथ सिंह । जन्म-तिथि : अज्ञात । जन्म-स्थान : उगरा (लोहरदगा) । आपको घर में ही शिक्षा मिली थी । इनके गीतों का कोई संकलन उपलब्ध नहीं, पर अनुमान है कि इनके द्वारा लिखे गीतों की संख्या : लगभग पाँच सौ से ऊपर है ।

महथा शीतल प्रसाद सिंह—

पिता का नाम : स्व० महथा अभिमन प्रसाद सिंह । जन्म-तिथि : आश्विन ८ शुक्ल पक्ष संवत् १६३६ । जन्म-स्थान : उगरा । शिक्षा : घर में प्राप्त शिक्षा । आजीविका : गृहस्थी । अप्रकाशित पुस्तकें : (१) उषाचरित्र, (२) उधोगोपी सम्बाद, (३) राधिका विलाप, (४) निर्गुण-निर्णय, (५) प्रभास खण्ड, (६) दृश्यकूट तथा (७) फुटकल कविता । वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : उगरा, थाना : लोहरदगा, पोस्ट : कोराम्बे, जिला : राँची ।

माकुलगढ़ी—

पिता का नाम : श्री भोकरोगढ़ी । जन्म तिथि: वैशाख सुदी ७ वि०सं० १६८३ । जन्म-स्थान : सानसेवई खास (राँची) । शिक्षा : एम०ई०जे०वी०टी० । आजीविका : कृषि तथा शिक्षण । अप्रकाशित पुस्तकें : (१) प्रचलित फगुवा गीत, (२) प्रचलित अंगनई गीत, (३) प्रचलित फगुवा गीत (रासक्रीड़ा), (४) नागपुरिया अंगनई गीत (श्रृंगार प्रधान), (५) नागपुरिया फगुवा गीत (पुछारी) । प्रकाशित पुस्तिकाएँ : (१) नागपुरिया करम ,(२) फगुवा गीत (चौथा भाग) । आपने अपने गीतों में "गरही" उपनाम का प्रयोग किया है : वर्त्तमान तथा स्थायी पता ; ग्राम : सानसेवई खास , पोस्ट : सेवई, थाना-सिमडेगा, जिला : राँची ।

डॉ० मोनिका जोर्डन-हार्स्टमन

इन दिनों आप बोन्न विश्वविद्यालय (प० जर्मनी) में प्राध्यापिका हैं । डॉ० एच० जे० पिन्नो के निर्देशन के अन्तर्गत वर्लिन विश्वविद्यालय में आपने १६६४-६६ के बीच डॉकरेट की उपाधि के लिए "सदानी—ए भोजपुरी डायलेक्ट स्पोक्न इन छोटानागपर" नामक शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया, जिसका प्रकाशन १६६६ में हुआ । डॉ० पिन्नो १६५६ में छोटानागपुर आए थे और वह अपने साथ टेप रेकर्ड कर कुछ शोध-सामग्री जर्मनी ले गए थे, जिस सामग्री के आधार पर सुश्री मोनिका ने अपना कार्य आगे बढ़ाया । उन्हें अपने अध्ययन के लिए कुछ टेप रेकर्ड्स वर्लिन से भी प्राप्त हुए और कुछ टेप रेकर्ड्स उन्होंने स्वयं छोटा-नागपुर के जर्मन-प्रवासियों की सहायता से तैयार किए । इन्हीं सामग्रियों के आधार पर शोध-प्रबन्ध लिखा गया ।

इस शोध-ग्रंथ में वर्णनात्मक पद्धति पर नागपुरी का व्याकरणिक-ढाँचा प्रस्तुत किया गया है। किसी विदेशी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया गया नागपुरी-सम्बन्धी यह पहला शोध-ग्रंथ है, इस दृष्टि से इसका महत्त्व स्वयं सिद्ध है।

यशोदा कुमारी यादव—

पिता का नाम : श्री हरिराम गोप । जन्म-तिथि : बीस अप्रैल १९४५। जन्म-स्थान : कैरो (राँची) । शिक्षा : प्रवेशिका तक। आकाशवाणी राँची से आपकी नागपुरी वार्त्ताएँ यदा-कदा प्रसारित होती रहती हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : ग्राम-कैरो, डाकघर : कैरो, जिला : राँची।

योगेन्द्रनाथ तिवारी—

पिता का नाम : श्री उरगनाथ तिवारी। जन्म-तिथि : सं० १९५६ साल। जन्म-स्थान : ग्राम जाहेर राँची। शिक्षा : बी०ए० तक। आजीविका : सेवा। साप्ताहिक आदिवासी तथा "नागपुरी" में अनेक रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी राँची के द्वारा भी अनेक रचनाएँ प्रसारित। प्रकाशित पुस्तक : नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय। अप्रकाशित पुस्तक : नागपुरी कहावत-संग्रह। नागपुरी के श्रेष्ठ गद्यकार के साथ-साथ कवि भी। नागपुरी भाषा तथा साहित्य के उन्नायकों में श्री योगेन्द्रनाथ तिवारी का योगदान अन्यतम है। "नागपुरी भाषा परिषद्" का गठन आपकी प्रेरणा से ही हुआ। परिषद् के द्वारा प्रकाशित "नागपुरी" मासिक के सम्पादक। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : कमलाकान्त लेन, पहाड़ी नीचे, राँची।

योघनारायण तिवारी—

पिता का नाम : स्व० शिवनारायण तिवारी। जन्म-तिथि : आषाढ़ संवत् १९५५। जन्म-स्थान : अरत (राँची)। शिक्षा : साक्षर। आजीविका कृषि। आपकी हस्तलिखित पुस्तकों की संख्या दस से ऊपर है। आपके कुछ गीत "आदिवासी" में प्रकाशित हुए हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : मौजा : अरत, डाकघर : सेनहा, जिला : राँची।

रघुमणिराय देवघरिया—

पिता का नाम श्री कुँवर रूपराज राय। जन्म-काल : सन् १९२२ ई०। जन्म-स्थान : राजा उलातु। शिक्षा : माध्यमिक वर्ग। आजीविका : गृहस्थी। श्री रघुमणि राय नागपुरी के एक अच्छे कहानीकार तथा कवि हैं। आपकी रचनाएँ आकाशवाणी, राँची से यदा-कदा प्रसारित होती रहती हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : ग्राम : राजा उलातु; डाकघर : राजाउलातु, जिला : राँची।

राधाकृष्ण—

पिता का नाम : स्व० मुंशीराम जतन लाल। जन्म : १० सितम्बर १९१२। जन्म-स्थान : राँची। शिक्षा : उपाधि के नाम पर कुछ भी नहीं, पर हिन्दी के प्रसिद्ध

कथाकार तथा शैलीकार। आजीविका : लेखन तथा पत्रकारिता। आपकी कई नागपुरी रचनाएँ आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं। "इशूमसीहक जीवनी" आपकी अप्रकाशित पुस्तक है। "नागपुरी भाषा परिषद्" के गठन तथा "नागपुरी" के प्रकाशन में आपका उल्लेखनीय सहयोग है। आप "आदिवासी" साप्ताहिक के सम्पादक रह चुके हैं, जिसमें नागपुरी की रचनाएँ सदैव स्थान पाती हैं। यह उल्लेखनीय है कि "आदिवासी" के प्रारम्भिक चार अंक (१९४७) नागपुरी में ही प्रकाशित हुए थे जिन अंकों का सम्पादन आपने ही किया था। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : भट्टाचार्य लेन, राँची।

रामूदास देवघरिया—

पिता का नाम : श्री कमलदास देवघरिया। जन्म वि० संवत् १९६८। जन्म-स्थान : गाँव : सुकुरहुटु (राँची)। शिक्षा : शिक्षित। आजीविका : कृषि एवं यजमानी। प्रकाशित पुस्तकें : (१) छोटानागपुरी पंचरत्न तथा (२) गो पुकार। श्री देवघरिया नागपुरी के सफल गीतकार हैं। आपके गीत श्री पाण्डेय वीरेन्द्रनाथ राय, वकील के स्वर में आकाशवाणी, राँची से यदा-कदा प्रसारित होते रहते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : सुकुरहुटु (काँके), पोस्ट : काँके, जिला : राँची।

ललन प्रसाद—

पिता का नाम : श्री शिवगोविन्द प्रसाद। जन्म-तिथि : ८ जुलाई १९४०। जन्म-स्थान : राँची। शिक्षा : आई० एस० सी० अनुत्तीर्ण। आजीविका : व्यापार। आपके नागपुरी गीत यदा-कदा आकाशवाणी राँची से प्रसारित होते रहते हैं। आपने बचपन में अपने पिता श्री शिवगोविन्द प्रसाद के ग्रोमोफोन रेकार्डों में "नारी कंठ" प्रदान किया है। नागपुरी में गीत लिखने के साथ-साथ आप एक अच्छे गायक भी हैं। वर्त्तमान पता : ललन प्रसाद, कपड़ा के व्यापारी, चर्च रोड, राँची।

लक्ष्मणसिंह—

पिता का नाम : श्री महलीसिंह। जन्म-तिथि : चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, सवत् १९८४ साल। जन्म-स्थान : वेड़ो (राँची)। शिक्षा : माध्यमिक उत्तीर्ण। आजीविका: कृषि। श्री लक्ष्मणसिंह ने नागपुरी के अनेक कवियों के गीत संग्रहीत किए हैं। आप स्वयं भी नागपुरी के अच्छे गायक हैं। नागपुरी में आपकी कुछ वार्त्ताएँ, आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : वेड़ो, डाकघर : वेडो जिला : राँची।

लक्ष्मणसिंह बड़ाईक—

तलेसरगुड़ी निवासी लक्ष्मणसिंह बड़ाईक की एक पुस्तक "नागपुरिया गीत पंचरंगी हितैषी कार्यालय, चाईबासा से छपी है। इनके कुछ गीतों में आधुनिक चेतना दिखलाई पड़ती है।

हैं। आपके द्वारा रचित नागपुरी गीतों की संख्या लगभग पचास से ऊपर है। आपके कुछ गीत आकाशवाणी राँची से भी प्रसारित हुए हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : ग्राम : आरा, पोस्ट : महिलौंग, जिला : राँची।

विनयकुमार तिवारी—

पिता का नाम : श्री केशव कुमार तिवारी। जन्म-तिथि : १८ मार्च १९४५। जन्म-स्थान : खूँटी (राँची)। शिक्षा बी० ए० (आॅनर्स)। श्री तिवारी नागपुरी के तरुण लेखक हैं। इनकी कुछ गद्य रचनाएँ "नागपुरी" मासिक में प्रकाशित हुई हैं। आप नागपुरी में "यात्रा-संस्मरण" खूब लिखते हैं। स्थायी पता : दानी लॉज, खूँटी, राँची। वर्त्तमान पता : कमलकान्त लेन, हिल साईड, राँची।

विष्णुदत्त साहु—

पिता का नाम : श्री हरिलाल। जन्म-तिथि : १ जनवरी १९२१। जन्म-स्थान : राँची। शिक्षा : बी० ए०, बी० एल०। आजीविका : वकालत। श्री विष्णुदत्त साहु नागपुरी के प्रसिद्ध नाटककार है। इनके "तेतर केर छाँहें" नामक धारावाहिक रेडियो-नाटक का प्रसारण आकाशवाणी राँची ने जनवरी १९५८ से जून १९५८ तक किया था। इन नाटकों में श्री विष्णुदत्त साहु ने स्वयं अभिनय भी किया। बाद में ये नाटक जन-सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार के द्वारा "तेतर केर छाँहें" तथा "माँदर के बोल" नामक पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किए गए। आपके कई नाटक अभी अप्रकाशित ही है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : श्रद्धानन्द रोड, राँची।

डा० विसेश्वर प्रसाद केशरी—

पिता का नाम: श्री शिवनारायण साहु। जन्म-तिथि : १ जुलाई १९३३। जन्म-स्थान : पिठौरिया (राँची)। शिक्षा : एम०ए०, पी-एच०डी०। आजीविका : अध्यापन। आपकी नागपुरी संबंधी अनेक रचनाएँ। नागपुरी, आदिवासी तथा परिषद्-पत्रिका में प्रकाशित एवं आकाशवाणी राँची से प्रसारित हुई हैं। प्रकाशित पुस्तकें : (१) नागपुरी भाषा और साहित्य (३) विश्वनाथ साही, (३) दू डाइर बीस फूल (संपादक)। सन् १९७१ में "नागपुरी गीतों में शृंगार-रस" नामक शोध-प्रबन्ध के लिए राँची विश्वविद्यालय ने आपको पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की है। वर्त्तमान पता : हिन्दी विभाग, गणेशलाल अग्रवाल कॉलेज, डाल्टनगंज। स्थायी पता : ग्राम तथा पोस्ट : पिठौरिया, जिला : राँची।

शिव शंकर राम—

पिता का नाम : श्री गोपीराम। जन्म-तिथि : ७ जुलाई १९३५। जन्म-स्थान : राँची। शिक्षा : प्रवेशिका। आजीविका : सेवा। इन दिनों आप आकाशवाणी राँची के "हमारी दुनिया" नामक कार्य-क्रम में रेडियो कलाकार के रूप में काम कर

रहे हैं। नागपुरी भाषा में लिखित आपकी रचनाएँ (नाटक वार्त्ता तथा कहानी) आकाशवाणी राँची मे यदा-कदा प्रसारित होती रहती हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : अपर बाजार, सिराजुद्दीन लेन, राँची।

शिवावतार चौधरी—

पिता का नाम : श्री बलदेव चौधरी। जन्म-काल : सन् १६२४। जन्म : स्थान : लांदुप थाना (राँची)। शिक्षा : बी० ए० (ऑनर्स), बी० एल०। आजीविका : वकालत। श्री चौधरी नागपुरी के एक अच्छे कवि तथा गद्यकार हैं। आपकी नागपुरी में लिखित रचनाएँ "नागपुरी" में प्रकाशित तथा आकाशवाणी, राँची द्वारा प्रसारित हुआ करती हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : पो० खूँटी, जिला : राँची।

शेख अलीजान—

पिता का नाम : श्री शेख खुदाबक्श। जन्म-तिथि : पन्द्रह जनवरी १६०४। जन्म-स्थान : करमा (राँची)। शिक्षा : अपर। आजीविका : राजमिस्त्री। प्रकाशित पुस्तकें : (१) डमकच छत्तीस रंग, (२) नागपुरिया गीत छत्तीस रंग, (३) फगुआ-गीत (भाग ३) आपके अनेक गीत अप्रकाशित हैं। शेख अलीजान नागपुरी के पहले कवि हैं, जिन्होंने अपने गीतों में आधुनिक जीवन को उभरने का अवसर प्रदान किया है। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : करमा, पोस्ट : इरबा, राँची।

डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी—

पिता का नाम : श्री बैजूराम। जन्म-स्थान : राँची। आजीविका : अध्यापन। शिक्षा : एम० ए०, पी-एच० डी०। प्रकाशित पुस्तकें : (१) जिस दीये में तेल नहीं (२) नागपुरी और उसके बृहत्-त्रय (३) दू डाइर बीस फूल (प्रधान संपादक), (४) प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक। आकाशवाणी, राँची के द्वारा जुलाई १६५८ से दिसम्बर १६५८ तक प्रसारित 'तेतर केर छाँहें' नामक धारावाहिक नाटक (नागपुरी) के प्रस्तोता, लेखक कलाकार। मुख्यतः हिन्दी के कथाकार एवं व्यंग्यकार। हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। सन् १६७० में राँची विश्वविद्यालय ने "नागपुरी और उसका शिष्ट साहित्य" नामक शोध-प्रबन्ध के लिए आपको पी-एच० डी० की उपाधि प्रदान की। नागपुरी भाषा तथा साहित्य के सम्बन्ध में शोध करनेवाले आप पहले व्यक्ति हैं। वर्त्तमान पता : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डोरण्डा महाविद्यालय, राँची-२। स्थायी पता : मेन रोड, राँची-१।

श्रीकृष्ण प्रसाद गुप्त "शशिकर"

पिता का नाम : स्व० दीपनारायण गुप्त। जन्म-तिथि : ३ दिसम्बर १६२६। जन्म-स्थान : नेपाल भवन, चाईबासा। आजीविका : वाणिज्य। श्री शशिकर हिन्दी के अलावे नागपुरी में भी यदा-कदा लिखते हैं। आपकी कई नागपुरी कविताएँ आदिवासी में प्रकाशित हुई हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : सीताराम श्यामनारायण पथ, चक्रधरपुर।

(श्रीमती) सरस्वती देवी—

पिता का नाम : श्री लीलमँन सिह। जन्म-काल : १९२३ ई०। जन्म-स्थान-सरंगलोया (राँची)। शिक्षा : साक्षर। आजीविका : व्यवसाय। श्रीमती सरस्वती देवी की आवाज में आकाशवाणी, राँची से बराबर गीत प्रसारित हुआ करते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : डोड़मा, डाकघर : डोड़मा, जिला : राँची।

सहनी उपेन्द्र पाल "नहन"

पिता का नाम : श्री सहनी वीरेन्द्रपाल सिंह। जन्म : १५ अक्तूबर १९३०। जन्म-स्थान : तारागुटू (राँची)। शिक्षा : मैट्रिक। आजीविका : कृषि। प्रकाशित पुस्तकें · (१) नारदमोह लीला, (२) उलाहना। हस्तलिखित पुस्तिकाएँ : लगभग दस की संख्या में। श्री सहनी उपेन्द्रपाल "नहन" नागपुरी साहित्य में "नहन" के नाम से विख्यात हैं। "नहन" स्वयं एक अच्छे गायक भी है। इनकी नागपुरी रचनाएँ निरन्तर आदिवासी में प्रकाशित तथा आकाशवाणी, राँची से प्रसारित होती है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : गाँव : तारागुटू, पोस्ट : गुनिया (टोटो), थाना : घाघरा, जिला : राँची।

सुशील कुमार—

पिता का नाम : स्व० रामानन्द लाल। जन्म : ३० जनवरी १९३१। जन्म-स्थान राँची। शिक्षा : साहित्यरत्न। आजीविका : राजकीय सेवा। श्री सुशील कुमार नागपुरी के ख्याति प्राप्त नाटककार हैं। आकाशवाणी राँची ने आपके धारावाहिक नाटक "चोका, बोका, कोका" को १३ किस्तों में तथा "लोधो सिंह" को ६ किस्तों में प्रसारित किया था। आपकी नागपुरी रचनाएँ "आदिवासी" में भी प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी कई नागपुरी रचनाएँ छद्म-नाम से भी प्रकाशित हुई है। सम्प्रति "आदिवासी" साप्ताहिक के आप कार्यकारी सम्पादक है। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : राधाकृष्ण लेन, राँची।

(सुश्री) सीता कुमारी—

पिता का नाम · श्री हरिराम गोप। जन्म-तिथि : ६ नवम्बर १९४९ ई०। जन्म-स्थान : कैरो (राँची)। शिक्षा : प्रवेशिका। आकाशवाणी, राँची से सुश्री सीता कुमारी यदा-कदा नागपुरी लोक-कथाएँ प्रसारित करती हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : ग्राम : कैरो, डाकघर : कैरो, जिला : जिला : राँची।

(श्रीमती) सीता देवी

पिता का नाम : श्री जगरनाथ सिह। जन्म-तिथि : १२ मई १९४१। जन्म-स्थान फूलसुरी (राँची)। शिक्षा : साक्षर। आजीविका : गृहस्थी। श्रीमती सीतादेवी की आवाज में आकाशवाणी, राँची से निरंतर नागपुरी गीत प्रसारित होते

रहते हैं। वर्त्तमान तथा स्थायी पता : ग्राम : फूलसुरी, डाकघर : हनहट, जिला राँची।

हनुमान सिंह

आप नागपुरी के प्रारम्भिक कवि तथा स्व० बरजू राम पाठक के समकालीन माने जाते हैं। आपके अनेक गीत प्रचलित हैं, पर उनका कोई संकलन प्राप्त नहीं होता।

हरमन लकड़ा

पिता का नाम : श्री जुसफ लकड़ा। जन्म-तिथि : १ मार्च १९०८। जन्म-स्थान : सिजुसेरेंग (रामपुर), थाना : राँची। शिक्षा : बी० ए०। आजीविका : मिशन की सेवा। प्रकाशित पुस्तकें : (१) छोटानागपुर में धान केर खेती, (२) झारखण्ड में साग सब्जी केर खेती। हस्तलिखित पुस्तकें : मिश्रित खेती। इसके अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कई पुस्तकें लिखी हैं। वर्त्तमान पता : न्यूगार्डेन, सिरोमटोली, राँची।

हरिनन्दन राम

पिता का नाम : स्व० जगन्नाथ राम। जन्म-काल : १ फरवरी १९०२। जन्म-स्थान : भरनो (राँची)। शिक्षा : बी० ए० तक। आजीविका : राजकीय सेवा (अवकाश प्राप्त)। श्री हरिनन्दन राम की गणना नागपुरी भाषा के श्रेष्ठ कहानी-कारों में की जा सकती है। "आदिवासी" में प्रकाशित इनकी "मोहों बुझोना मोंय बइद मोको नखों" शीर्षक कहानी नागपुरी भाषा-भाषियों के अलावे दूसरे पाठकों के द्वारा बहुत पसन्द की गई। इनकी कुछ कहानियाँ "नागपुरी" में प्रकाशित हुई हैं। इनकी भाषा से ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि नागपुरी गद्य कितना सशक्त है। इनके पिता स्व० जगन्नाथ नागपुरी के एक अच्छे कवि थे। स्थायी पता : ग्राम तथा पोस्ट : भरनो, जिला : राँची। वर्त्तमान पता : छोटा नागपुर लॉ कॉलेज, राँची।

हुलास राम

पिता का नाम : कवि घासीराम। जन्म : वि० सं० : १९५८। जन्म-स्थान : करकट (राँची)। आजीविका : खेती-बारी। शिक्षा : लोअर। श्री हुलासराम नागपुरी के प्रसिद्ध कवि घासीराम के सुपुत्र हैं। अब तक आपकी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है, पर आपने अनेक विषयों पर सैंकड़ों गीत लिखे हैं। श्री हुलास राम एक अच्छे गायक भी हैं। स्थायी तथा वर्त्तमान पता : ग्राम : करकट, पोस्ट : माँडर, जिला : राँची।

हेनरिक फ्लोर

जन्म : १ जून १८७४। जन्म-स्थान : ब्रूग्स। २३ सितम्बर १८९३ को धर्म समाज में प्रविष्ट। १७ दिसम्बर १९०१ से मिशन के सेवा-कार्य में संलग्न। मृत्यु १२ दिसम्बर १९४७।

स्व० फ्लोर नागपुरी के अनन्य सेवक थे। रेव० बुकाउट द्वारा प्रकाशित "सदानी फोक लोर स्टोरीज" के संशोधक भूमिका लेखक रेवरेण्ड फ्लोर ही थे।

"सदानी हैंड बुक" नामक व्याकरण रेव० फ्लोर ने ही प्रस्तुत किया था। जिसका प्रकाशन दि डिस्ट्रिक्ट टी लेबर एसोशिएसन कलकत्ता ने सन् १९३१ में किया था।